

1475



धर्मरत्न बजाचार्य गुरुजी श्री महाविद्यालय

DH 75

गुरुजी

4/25/1968

युवर्ष

श्री

ॐ नमः श्रीसर्ववृद्धवाधिसत्त्व
नाथे ॥ नमः ॥ शुद्धिस्तु
येकसमयगृहकृतकथा
श्रीवृद्धनाथ ॥ वाधि
कथासुखसावमहावकथाशिया



॥ नमः श्रीरुगवसे ज्ञायपुस्तकावमि
तिगतिविजयस्वाहा ॥ शुभं म
गकशिविजयवधमप्राप्तोग १
सत्त्वसमययामहाकृतदव
चमहादवकथा ॥ दृढयावमहापृथिः

वीदवकथादावीसावमहादवकथा ॥ चवम्भुमूखादिमहादवकारिबनकदवनागयकवाक
सगन्धोसुवगवृद्धकिन्नव
नन्दारुगवन्ममकदवाचक ॥
गवानाद ॥ गाथाहिरुगन्ध
किष्टिगं ॥ शुद्धपूविजयस्तु
महावगमनूषामन
किंवासांचरुगवन्म
नद्रुष्टकथाविजयः
वी ॥ सादं ॥ अथायुषानाः
विनयंरुविजयमीनि ॥ रुः
स्तं समाधिधर्मसावपुः
स्वर्गपुस्तकावमिदं ॥

दि

कलागमिन् यव (नन गरी) नवपय यो क (नन ॥ दगदि कूचकस्य पूर्ववद्वे न विद्वानमविद्विगं ॥
ज्ज्वालाय वा ऊ ४ पूर्वस्मिदक्रिः (नवत्तक रुता ॥ यथिः मायासमि सारु उरु थड
दुलिस्य व ४ ॥ गं य व म्मा म्माधि हनं मांगरा दग नारु मं ॥ सव्याय विना सार्थ स
व्याय कयं कयं ॥ सर्व सो र्वा यदा मा वं सर्व ३ ४ र्वा वि ना ग नं ॥ मत्त सर्व ह न त्व
सर्वशी सम सं क नं ॥ उप द क न्दिया यदि स त्वा न द्वा द मा य व ४ ॥ अत्त का य वि वि द्वा दि द व

मा सूप वां मखा ४ ॥ का न्क या य ड ना नि द्वा ४ कू द्म्या दि य प द्मा ४ प व स्य व वि वृ द्वा वा अथ ना ३
यव य द्मा ४ ॥ (मा का या म यन र्थ व र्थ य व स न चः व व ॥ ग द न क व पी ज यां का ३
खा द द्वा व र्थ ग दं ॥ या यः कं य ग्ग क स प्र (मा का ३ या स स म दि गं ॥ न न स त्वा न
यु वि ना (मा ग वां स क म र्क मं ॥ गृ ध्निय र्दं स र्ग ग म्मी वं वृ द्वा (मा व वं सो म न र्क
४ य स न्ना स्या ४ यु वि व र्मु व सं क ना ४ ॥ क वां स व र्क थ नि ल्य म्म स ग ४ सू द व र्मा ४ न ऊ सा वा स्य स ३

वि

कस्यमास्य नैसर्वेषां विना ॥ स्वयं नैसाकपालादि सामान्या ॥ सगलं यथा ॥ कथां वक्रां कविपान्तिम्
नैकैर्यक्रकादिरि ॥ सवसः ॥ मीमदादवीनथायीजय ॥ वासिनी ॥ दावीनीरुतसागावः
दृढाष्टिबीदवना ॥ वक्रः ॥ दुस्त्रियगन्धेयमद्वि ॥ किन्नयश्च ॥ गवूठुदेस्तथा
साद्वयक्रगं वचनं गेश ॥ वक्रः ॥ वक्रगुणसंयुक्तसमं नः ॥ वसवाटना ॥ कथां वक्रां कविः
यन्निदिवा वाको समादिता ॥ ०० दंसं पकासिधगमु वं वृद्ध ॥ गावयं ॥ वक्रसं सर्ववृद्धानां इ संलंक

३

स्यकाटीरि ॥ गृध्रनिय ॥ दंसं यवाशयवयनिच ॥ यकविदन्मादनयवपुजाकथानिदि ॥ गप
डिगारुविपान्तिश्च नैकैः ॥ स्यकाटीरि ॥ दवनागः ॥ सनृथश्च किन्नवास्त्रयुक्त
कैः पूषास्त्रमययनसं ॥ स्यकाटीरि ॥ यं कुरुवां ॥ पसुं रं गतिः ॥ कुरुपूषा नपा
मितां ॥ पृष्टीगारुविपान्ति ॥ सर्ववृद्धदिगास्त्रि ॥ गं रीववविनेरिथवाधिस
संलंकथेव ॥ वक्रवीवत्रपावृत्तसगभजलपावने ॥ मेरुचिरुं समुत्कायपुडितवसनन्दिये ॥

क

विमलं विपुलं विरुयात्मानं पक विद्यति ॥ एसा दयश्च यतास्मि शृणु सुरु मरु सं ॥ स्वा गमं च मन धा
वसु वचं मानं पंरु सं ॥ सुडी ॥ विता धडी वनि सुरुं शृष्ट
वदु वदा पस वका ॥ य वा मि दं कर्णु यद गि रं सं य वि
धूपरो सारु म सुरु वा ऊ ॥ निदाने य वि व का ना म प
पुनः का ज न र न स म य न वा ऊ द स द न ग व व वि व क रु ना म वा वि स त्व म दा स त्व प नि व स गि ॥ ४

पुनः जिन कृता धिका बापि क क ग ल म सा व द व द का दी नि य र ग न स द स य य पा सि र ॥ न सो न द ॥
रु व क ॥ का द रु १ क ४ प रु या य द ग व क ॥ ग व स न
य द ग सी नि व पा नि ॥ पु न रु न द रु व क ॥ उ कं ये व रु
यो दी र्वा य द का यां ॥ क र मी दी ॥ पा णि नि या न वे न
ध व द न्य स ख य क ल्य का ढि नि य र ग न स द सा नि रु ग वा ॥ य म नि ४ पा णि नि या ना प नि वि व का व रु

व॥ यावद्दमकमसमस्तकर्मपथं समादाय यत्॥ तावन्निरुगवता शङ्कनमाध्यासिकं वा यानि वस्तु
 निमत्तानां यविसृक्तानि॥ अन्तः
 म॥ समेदीयमाना वृद्धि
 वास्तिमर्क्या वृद्धिना ४
 सत्त्वाः सन्करिणाः पाणवान्
 नराजनन॥ अथ नरा
 पूर्वपक्षवृद्धान् स्मृतिमः
 नसिकावस्थामा॥ वदितव्यं
 पांचिकां चिकयमानः
 सृष्टदं विपुसविस्तीर्णसं
 पुर्विरुमरुवर्गवेदूर्यमयमभकदिव्यवत्तपुण्यं कथागरविग्रहदिव्यामिका नैनगत्वनरः

टा॥ कस्मिंश्च गृहवर्गदिगिवत्ताविदिव्यवत्तमयान्तामनानि पादरुगा नरावतन॥ कषवासनवृ
 दिव्यानि पर्यक्तानि दिव्यावः
 तद्वययुगपद्वयानि
 पादरुगानि वरवृक्षापूव
 स्तिमनस्त्रासक्तथागरुशा
 यादरुकोदक्रिणनः
 वत्तकुरुत्तागरुपाद
 रूक॥ पश्चिमनामिगायुक्त
 भागरुपादरुग॥
 उक्तवद्वद्विस्ववत्तथाः
 गरुपादरुग॥ समस्तवपादरुगा ज्ञानवृद्धारुगवन्तस्त्वसिंदोसनवृ॥ अथ तादववाः

उत्तरं सदानगवं सदना वरुणा सना वरुणा सिकरुटं वरुणा या वरुणा सादसमदा सादससाकधा रुं ॥

यावत्तामना सुदग सुदिदुः

गंगानदीवातिका सम

साकधा मव रुना वरुणा सेः

नरुटा वरुणा वरुणा निवप

पानिया वरुणा निव

रुणा निव वादय त्र ॥ स

विसिंक्षि सादसमदा सादः

सना कधा मो सत्वा वरुणा

नरुणा वरुणा सुखन समः

नागना वरुणा ॥ जातु न्नाथ सत्वा नूपा निप ग्धनि ॥ वधिनाथ सत्वा ॥ सत्वा सत्वा ॥ गदानीगः

वन्कि ॥ उत्तरा सत्वा ॥ सन्नि यमि जरु न विरिफ विरुथ सन्नि सना वरुणा ॥ नग्राथ सत्वा ॥

ववपा रना वरुणा ॥ डि यत्ति

नाथ सत्वा ॥ पविपुर्ग

ना वरुणा ॥ रु पिनाथ स

त्वा विगकरु पु वरुणा ॥ नाग

सुष्टाथ सत्वा विगन

नागा वरुणा ॥ दीन काः

याथ सत्वा ॥ पविपुर्ग ॥ डि य

वरुणा ॥ विरुथ मव

रुना साथ यो रुन वस्मादा

साकधा इरुणा वरुणा ॥ अथ वरुणा वरुणा ॥ वरुणा सत्वा सत्वा ॥ नूपा नूपा ॥ गवना द दूथ यथा का वरुणा वरुणा ॥

या

भक्तदिगि॥ संसृष्ट उदग आरु मना ॥ यच्च दिग ॥ यो कि सो मनस्य जा नाय न क वृद्धा रु ग व न रु नां
 ऊर्लियल म्मा का व रु स्तां वृद्धा रु ग व न ॥ नू स म्मा ॥ रु ग व न ॥ ग म्मा ॥ नू स म्मा ॥ रु ग व न ॥ ग म्मा ॥
 नू स म्मा ॥ रु ग व न ॥ ग म्मा ॥ नू स म्मा ॥ रु ग व न ॥ ग म्मा ॥ नू स म्मा ॥ रु ग व न ॥ ग म्मा ॥
 य मा न ॥ रु ग व न ॥ ग म्मा ॥ नू स म्मा ॥ रु ग व न ॥ ग म्मा ॥ नू स म्मा ॥ रु ग व न ॥ ग म्मा ॥
 रु मा यूप मा नं य द्ना गी नि व र्णा नि ॥ अथ ख लू न वृद्धा रु ग व न ॥ रु मा ॥ सं य जा ना सं वृ चि

व व र्त्त क रुं वा धि स त्व म रु द वा च रु ॥ ० ॥ मा लं क ल पू र्वे वं चि न्क य न वं प यी नं रु ग व न ॥ ग म्मा ॥
 य स म्मा ॥ रु ग व न ॥ ग म्मा ॥ रु ग व न ॥ ग म्मा ॥ रु ग व न ॥ ग म्मा ॥ रु ग व न ॥ ग म्मा ॥
 क ला क स मा व क स व क्क क स ग म न वा द्म नि का योः न रु थ ग रु स्या यूप मा रु ग व न ॥ ग म्मा ॥
 स म र्थ ॥ रु ग व न ॥ ग म्मा ॥ रु ग व न ॥ ग म्मा ॥ रु ग व न ॥ ग म्मा ॥ रु ग व न ॥ ग म्मा ॥
 व द य वा न क का टि रि ॥ रु ग व न ॥ ग म्मा ॥ रु ग व न ॥ ग म्मा ॥ रु ग व न ॥ ग म्मा ॥ रु ग व न ॥ ग म्मा ॥

३

रुगवद्रिगभागनायू४यसाहनिर्दग ॥ अथनावदुद्धानरावनकासावववावपावववायदवय
 का४सत्तिपतिना४॥ यावत्ताला यरुगन्धर्वीसूयुडकिन्न वसदावगाअनकानिववा
 विसत्तकादिनियुगगकसदः आनि॥ कसित्वविचक नावाविसत्तस्यगृदसमा ८
 मताआसंन॥ अथकमभागः ना४सर्वीवकि४यर्षदा रुगवकगायसूनवायू४य
 साहनिर्दगंगा थारिवरायन् ॥ ऊसापुष्टुवयूसवयूगयनेगलयिथुंविन्दुरि॥ ननुगायसूनवा

यू४गयंगलयिथुंकनचिन् ॥ सूमवयवसाहनिर्दत्तागयंवसख्याया ॥ ननुगायसूनवायू४गयंग
 लायिथुंकचिन् ॥ या४काः वित्पिथी४सन्नियाव न्द४यवसाहव४॥ गयंगलयि
 थुंसर्वीननुवायूजिनसः वे॥ आकागंयदिवाकः धिदिक्स्थिथिथुंकचिन् ॥ न
 नुगायसूनवायू४गयंगला यिथुंकचिन् ॥ उरुकानि वकल्यानिकल्याकादिगमेनि
 वा ॥ नयकिष्टवसेवृद्ध४सख्यानानदिलस्यरु४॥ यस्माद्वकावलाकस्यरुथेवक्षोवपस्यो ॥ विवग४

७

पापदिंसायावद्भूदरुं चरुं ऊर्जं ॥ यत्प्राकृतं नरात्मस्य आयुः संख्या न लभ्यते ॥ परं कानि च कस्यानि
 संख्यायाम् चरुं धेवच ॥ तस्मात्
 यन्त्रं कश्चित् संख्यायाम् न सः
 पापकीर्तिनामवाप्यते
 तथा गतस्य महापविनिर्वाणं दंशत्वा सदसात्कृत्य रुग्णवत्तथैव तस्मान्निपत्य रुग्णवत्तमेव साह ॥

त

॥ ० ॥ स च किल रुग्णवान् सर्वसत्त्वान् कंय कामदा कावृषिकादिके धीः सर्वसत्त्वानां मातापि रुग्णः सः
 अथ जसमसमरुत्तमश्च युववा
 स च सत्त्वानां दाकृतं ससन्त्य
 दानरुग्णवनरुत्तमोपपदि स च
 एतन्मृत्युर्त्तमश्च नारायणो कवचकोटिनां वाप्यते महापद्मं रुग्णवत्तमेव साह ॥

50

वयं यावसि॥ अहं वयं ददासि॥ वाक्काष्ठ आह॥ अहं नसि मलित्वा विदूषा वरुण वरुण ४ पूजायः
 रत्नाय वरुण वरुण ४ सपथरुत नावधा रुमि कामिनिः वदि रुं वृत्तं वा रुमरि यथा
 अनाथेन सपथरुत सा रुंधाः रुमरि पूजयित्वा रुद भावि पत्नं लय रुं रुमि॥ १०
 नवगुणक॥ १२ नृत्तं लित्वा विः कूमा वसू वरुण रमाः रुमसु रुं ३ विरुयं सध्वं
 वकप रव क वृद्धानां नाह गेल रुंधा गुले ४ समन्वा गुरु ४ किल सु वरुण रमा रुमसु रुं रव यि यमि॥

नवंगलित्साविकृमावद्विहं यंदवनवाधंसवपुयहासाकनसूवं असाकमकंसयननदीपिका
नांवाअ(१॥)मपमावंवाहुंः कनपुकनिद्रिक्कवान् ॥ अदंनववंपावयनसत्वाः
त्रिसमवलिदगाविपसंपनि लारिनारुविपयन्ति ॥ त्वंकिलगलित्साविकृमा
वमपपेरुलमावंवाहुंरुथाः नरुणायादिहुं ॥ वाहु कनपुकनिद्रिक्कवावदिः
नस्यसर्वसत्त्वानांविदगाविपग्धवसारु ॥ दीछक ॥ नवंमयाचलित्साविकृमावदाहुं ॥ अथ

७१

सर्वसाकषियदग्नान्तसलित्तविक्रमावजावाच्यव्याकर्मकोष्ठित्यवाङ्महंगाथाहिवधायत॥ यः
 दाह्याग्निसंगमायायादयः॥ क
 कित्ता॥ उन्मत्तासहस्रदया
 तुरुविषाति॥ यदाकच्यः॥
 एतदावातुरुविषाति॥ यदासगकपादानामपस्त्रासम्भारवत्॥ दृष्ट्वाप्येकस्मीत्तदावातु

समानि॥ वक्रः॥ काका
 काखकुत्रश्चासमः॥
 सोमानापावः॥ सूरः॥

रुविषाति॥ गंखवधूश्चका
 तदासर्षपमावधूश्चका
 कारुवत्॥ दमन्तगीतद्वय

११

रुविषाति॥ यदातीक्ष्णमदानकश्चदकाजायन्निपातुता॥ उल्लोकानां हि सर्वेषां तदावातुरुविषाति॥
 यदागगविषाहाननिः॥ य
 कि॥ नानिः॥ यदीयदावृक्
 विषाति॥ यदासयद्यटंपी
 वातुरुविषाति॥ यदागिष्यापसंपत्नागदरासूखितारुवत्॥ कृगसंनृतमनपूतदावातुरुविः॥

वीसूदरंरुवत्॥ सगस्या
 वन्दुरुक्त्यत्मेयिकः॥
 त्वामन्त्रिकाग्रमयाविः॥

वाहसाधयतदावातुरुविषा
 वार्हचयविषावधनवावातुरु
 ती॥ जगयवत्तकसीयूक्तदा

51
16

यति॥ यदायुः कलाकायप्रसभयप्रदागताः ॥ अन्धानामनूकसनतदावायुरुविषयि॥ यदायुः
 गयनामां चरुदिविपुलं रुच ॥ वर्षस्य यतिदातायः ॥ तदावायुरुविषयि॥ यदासाम
 दिकानावासयन्तामपरा ॥ किंका॥ अन्तमात्रमग ॥ तदावायुरुविषयि॥ य १२
 दायुः सकमकनाः ॥ यच्चरुग ॥ न्मादनं॥ रुष्टनादाः ॥ यगच्छयुः तदावायुरुविषयि॥
 जनायगमथः ॥ यत्वाजायय्याकलमकोष्ठिन्वावाप्तः ॥ सर्वशक्यियदमनं॥ सित्तविक्रमायंग

श्रीरुद्राय नमः ॥ ॐ ॥ साधुसाधकसाधुयुक्तिनपुत्रमदागिवा ॥ उपायकृगसादीव ॥ वाकव्याक
 व ॥ धारुसा ॥ समकसाधुगृ ॥ दिसाकनाधसगायिनः ॥ कथनरससादात्म्यं यथाक
 समचिन्तियं ॥ अचिन्तां वृद्ध ॥ विषयं ॥ असमाधुनथाः ॥ गता ॥ सर्ववृद्धा ॥ गिवा ॥
 निरसं सर्ववृद्धा ॥ समकना ॥ ३ ॥ सर्ववृद्धा ॥ समवर्धुनथा ॥ वृद्धयुधसना ॥ नयुक्तिनाः
 श्रीरुद्राय नमः ॥ तत्तत्तथागता ॥ वडसंदनकाथानिर्निर्णकायदमयत् ॥ नायिसर्पयसागुंयवाहुंता

अ
दि

ममरुपिहः अनस्त्रिभुविशकाय कृपाधु रविपति॥ उवायधु निरुपं सत्त्वानां दिगकायं ॥
धर्मकायादिसंवद्धाधर्मताः दुरुथागन॥ ६५६॥ रुगवत्काय ६५६गीधर्मव
गना॥ अनरुगं सयाहात्वाया दिगोदिवयंसया॥ रुगवत्काय ६५६गीधर्मव
मूनः ६५६॥ ६५६॥ अथरुगवत्काय ६५६गीधर्मव
यः ६५६॥ अनरुगं सयाहात्वाया दिगोदिवयंसया॥ रुगवत्काय ६५६गीधर्मव

चकस्रवनिर्धापनगामरायन॥ नवद्वयनिर्धापनगामरायन॥ सत्त्वानां पविपाका
या॥ यनिर्धापनगामरायन॥ नवद्वयनिर्धापनगामरायन॥ सत्त्वानां पविपाका
विविधां वृद्धां सत्त्वानां दिगकायं रुगवत्काय ६५६गीधर्मव
रुगवत्काय ६५६गीधर्मव रुगवत्काय ६५६गीधर्मव
युमाधनिर्धापनगामरायन॥ नवद्वयनिर्धापनगामरायन॥ सत्त्वानां पविपाका

अ
ह

नवाउगृहानगमनिःकस्यानकेः पातिसदमेः सार्धं यनगदुकूटः पचनवाकायनरुगवास्तनापः
संकाकडपेसंयस्यरेगवरः पादोमिवसावन्दितारु नवनंविपदमिहीकृत्तेका
कनपीदगुचकान्कनिष ६॥ ० ॥ अथखलः अविचकडुवाविसस्वायनः १५
सगवांरुनाः सिपुगमया शिवताः सप्राक्तसन्देह विगदसदगनागाथायुत्ता
साउयवा ॥ ॐ निसवर्षयसाराससुगुदुवाडसपपविवरुत्तासरुमीय ॥ ॐ ॥

॥ चकवावमनंदिननसप्राक्तवंगमंसया ॥ इन्दुस्यविविददृष्टासमक्तकनकयखा ॥ कलनानंयथा
सूर्यसमक्तनविनाचन ॥ यः खसिनानिदमदिगाः दृष्टावृद्धाः ससक्तग ॥ निष
गुयन्नवृकपूर्वेदुयचय रासवा ॥ अन्नकमगत हसावापविषदायांप्रवसः
गा ॥ दृष्टवान्नमयपगपवा हननइन्दुलि ॥ ननाका यमानायाः माः शाकाश्चवा ॥
सुवर्षय रासकसद ॥ इन्दुनगासा नु ३४ खासिसदसुनाक ॥ अयाय ३४ खयमसाक ३४ खादाः

५७

विदुः१ खासुथदसाकजूननवदुर्लिगदनादिना॥गाम्यनुसर्ववसनातिसाक॥समनसत्तादुद
यादनायथाकथामयागाः॥नरुयामनीन्द॥यथेः॥वसवार्थेयुलोपयत्त१संसात्र
सर्वहमदामनीन्द॥न॥यथेः॥वराचुयुमेसागमा१॥पुजा१सविवाधुनयुलोपयत्त१३
गा॥अननवदुर्लिधाव॥नादिनारुवनुवक्तः॥भवसर्वसत्ता१॥गोरुवनुः॥
वृद्धत्वंवमांगवा१॥पवर्क्यनुरे॥युधमव्यतिरनुकत्यानिअविक्तियातिदमनुधर्मजगमादि

नाय॥रुननुकुगान्विधमनुद१खीसमस्तमागंरुधदावसादं॥यसत्त्वतिरनुजुवायरुमोजाः
दीकसंपकलिनायिगावा१॥गुपुनुरुदुर्लिसेप॥वादितां॥नमावृद्धायवशास
रुवनु॥आमिसमा१सत्त॥रुवंनुसर्वजासीमगाः॥आमिसदुकाय१॥अनसम
न१समनंमनीन्द॥गुपुनुरुः॥नयांवचनंयदायी॥अ॥ननवदुर्लिधावनादिनाः॥
सखंनुवृद्धदिसदाससागमा॥विषययनुखलूपायकमवसनुकगतानिगुखवियाति॥नमासमा

५१
गो

समयिसचपाणिनांयाचनुतांदमनपार्थनाय॥अननचइन्द्ररिधापनादिनाःसत्सचिंतयांयविः
पवययौ॥यथावनवकः उपयत्तसत्ताआदीष संयकलितानिगनाशविमी
होमाकाथपवित्रसन्निनि वापलंरथ्यनिकषूवा नना॥यइ४खसत्तापवलय
धावाननवकयपुनममन ससाक॥अननचइन्द्र रिधापनासचचरुयांयगः
मनुइ४खा॥निसाधमपवित्रांममगवधंरुतानिव॥वागारुयांरुवयंमगवध४मवधरुः

११

म॥समन्तादवनुसांयुद्धाःकृयाकावृथचरुस॥अत्ययंपमिष्टकृनुदगदिकृयवस्तिः
ना॥यच्चमपापकर्म कुरुंपूर्वसदावृक्ष॥ः तसचंदगयिष्मिचित्ता
दंदमवलायक४मागपि रुनवस्तानादृक्षाना मयदानना॥कृमसंचावका
ननयवपायंकुरुंमया॥ जग्यमदमरुनक सवृपसदनच॥नागृधमः
दसरुनगुपायंकुरुंमया॥इयिनिसेंदयंकुचइरुननायिकमोहा॥अनादीनवहृदुनयगुः

५१
५

पापं कुरुं मया॥ वासवद्विपदासनं जहाना नृकथनसा॥ यापसि नृवसा चैव कुगवा कुरु सचतसा॥ श्री
अवतिवगा चैव (मा) सुवा गवगनवा॥ अरु सुव नदाधनयव पापं कुरुं मया॥
अनायुजन संसर्गदीर्घा सात्सयदेवता॥ माथ दाविदुदाधनयव पापं कुरु १८
नामया॥ वासनागमकाः अस्मिं कामानां रुयदः हुता॥ अनेश्वर्यगननापियः
रुयाय ४ कुरु मया॥ चरवि रुव (ग) नेव कामकां धवगनवा॥ कृत्तिपासादि ननापियव पापं कुरुं

मया॥ यातार्थरुअनार्थचवमार्थमीषरुयुताविविधकुरु संतापेयव पापं कुरुं मया॥ कायवाचसाः
नसं पापं विदुव विरं चर न॥ यत्तु नमीदृगं यूपेन सचैदगयासदं॥ यरुवदेष
धमेषु गावकयुन (धे) वच॥ अ (गो) वरं कुरुं सादिरुत्सर्वः दगयासदं॥ यरुत्पुसकवद
षुवाविमत्यषुवा पून ४॥ अ (गो) वरं कुरुं सादिरुत्सर्वे दग यासदं॥ सदस्मयति क्रिय ४
सादजाननं नमसदा॥ मातापिरुय (गो) वरं सचैदगयासदं॥ मुखेति नापि वा सत्यामानदपोरुनच॥

ॐ

मग वषधभादनरसर्वद्वयाम्यदं॥पुत्रयित्वा दगदि कृता कदगवसाजितान्॥उद्विष्टा न्यदं स
त्वा सर्वद्वयद्वयद्वयदिगि॥स्वा ययिष्यदगद्वयमां सर्वसः त्वान विनियान॥दगद्वयमा
सिद्धित्वा वसर्वद्वयानुसधगद॥ एकैकस्यदिसत्त्वस्यवधयं कत्यकाहिया॥यावद्वयंदि १८
रत्नसर्वमाद्रिमुंद्वयसागवा गा॥नयामं सत्त्वानदेभयंग श्रीमान्द्वयनामिमांसवधुपु
खसाकृमातामसर्वकमाकृयंकवी॥यनेकस्यसद्वयवृद्धगं पापं सदावृणं॥यकवसायकागनुसर्ववद्व

निसंक्रयं॥दगसयिष्यमां धमांसर्वधुपुखसाकृमां॥यगृध्वनिगुहंरमांसंयानुवायसंक्रयं॥स्वा
सिद्धगद्वयमातादगवत्तावधव या॥आरुसयंवद्वयुः लेखयंरुवसागमाता॥न
वसंसावसमद्वयमांगगीयंरुः वसागया॥अविनियं व द्वयुले॥सर्वद्वयं पप्रवेय॥
समाधिगरुसद्वयमाविनीरुन विनियेशा॥वृद्धियेवसवा धा॥द्वयवयंदगवसाकृमां॥यव
साकृमांवद्वयसमन्वादनधरसा॥अथयंयगिगृह्णातुमाचयनुमांरुयान्॥यनुयायंरुंयं पूर्वमया

७०

कस्य गते पुत्रा ॥ कस्यार्थं भक्त चित्तं दमय ॥ कस्य पुत्रा दित ॥ कस्य पाप कर्माणां सत्तु दीनमानः ॥
 सः ॥ यत्र यत्र विद्यामिनवा ॥ किमवलोकयि ॥ सर्व ॥ कावर्गिकावदा ॥ सर्वः ॥
 यददाजिना ॥ अत्ययं पतिग ॥ दनुमाचयनुचमांरुः ॥ जात ॥ कृगकस्य रूतमयः ॥ २०
 यदादयनुनथागता ॥ स्त्रायय ॥ नुचमां वदा ॥ कागृधः ॥ विमलादक ॥ सर्वपापं द
 गयामियतुयुचैकं मया ॥ यच्च सदादिमपायं तत्सर्वं दगयाम्यं ॥ आयत्ता सर्वमापयं सर्वं दत्तु क

मन्त्रानां न कदापि सित्त्यापं यद्रुचममद्रुतं ॥ विविधं जायिकं कर्मावाचिकं नुच विविधं ॥ मानसं विषयका
 वंचनं सर्वं दगयाम्यदं ॥ काय ॥ कृतं वा कृतं न सत्तु विवि ॥ नितं कृतं दगं विषयं कर्मनः ॥
 सर्वं दगयाम्यदं ॥ दगा कृगसाः ॥ नञि त्वा म वि त्वा यगसा ॥ दग ॥ स्त्रायामि दग रूमाः ॥
 चरुवदगवसाकर्म ॥ यच्च मया ॥ यकं कर्म जनिदरूत ॥ ददकं ॥ मत्तं चन्दगायिणा
 मिद्वदा नोपवत ॥ कित ॥ यथापि उन्मदीयसिं यवान् साकधरुष ॥ कृचनिकृगलं कर्मनत्तं च जन्

ध
न

सादयायचपूष्पाङ्कितं सञ्चकार्यवादनसाधिवनकृगलसूजनसृमयं वाधिमूरुमां॥ हवगतिः
संकटवासवृद्धिनापायसपि यत्तु संवसदावर्गं॥ दग वनसंकटासयनः॥ स्त्रिकः॥ क
नसर्वपापपण्डितगयायामिः वातत्वापंयेत्समंविन उत्तसंकटाविविधेषांका २१
मयवातसंकटखवसंकटताः कसंकट॥ मुखकृगं कृग सकटचपस्त्रविरुसंकटः
षायमिनागमसंकटनसत्ताखसंकट॥ नागसंकटद्वयसंकटमाह नमसंकटद्वयि॥ कृगसंकटकास

संकटपूष्पाङ्कितसंकटद्वयिजिनसंकटसंमुखस्त्रिकः॥ कृत्सर्वपापपण्डितगयासि॥ वन्दामिवृद्धानः
गुहसागशायमान॥ सवर्ग वक्ष्मिनेरुसितदिगन्ता न॥ कृवाङ्गिनानांगवर्गवर्जामि
मूर्ध्निवर्गसचङ्किनोनमामि॥ सवर्गवर्गकनकाचला रं॥ वेदूयनिम्नविशुद्धसः
सायनाङ्ग॥ गीकङ्किनीः कालनाकसवृद्धसूर्य॥ कयूभायखविधमकं नमसाच
कानां॥ सनिर्मलसूत्रचिवंसूत्रिमाङ्गिनां॥ समुद्रसूर्यकनकामलनिः॥ सुनाङ्गकृगायिककसनस

थ
दि

कृतनायिकया॥पद्मदत्तंमूर्तिनिगाकलदग्निजासंघासिंभस्रकधवर्जसिखद्वियाङ्ग॥अनन्तं
नसूचिरेःसूचिमाङ्गिना
सिसायेःवृत्तिशक॥वेरु
ठिकलादिगामनाविचिः
कल्पः संसायनपतिरुवा सनीयमल्लभाकाकूलमवर्णमाचकवाकवंलेइःखाधुवपयमवन्तिरच

२२

धुवलेसंकाययसुगमसुखवदग्निजालेश॥वन्दामिवृद्धात्कनकाकलाङ्गानसूचिरेःवृत्तिवराशिगा
अन॥हानाकवात्सल्युताः
ऊलमपुमयंयथा मदीवा
गसतनयासं॥नथेववृद्धस
स्थानिदुस्तुचिन्मयकूनगवपयन्तुगानिजातुं॥मदीसंलतासगिनिःससागनागलुदकस्यवपि

भवजनिर्मु॥ उत्तं च वासाय मयि यमां न गय वृद्धस्य गुणगणानं॥ जगद्गीता सत्त्व रुचुसर्वगुणानवर्त
 नकीर्त्तित्वा गुणं कर्माणि कृत
 कर्मणा रुचय वृद्धान विप्रं
 ४ स्वपीठिमान॥ उत्तं यमां न सं
 चिकित्सा निर्गेष्य सत्त्वानं रुचन पाणिनाः प्रयय घ्रात्र मिता जून रुचा यथेव पूर्वकानां॥ हनय कृमाः

निवमय ३४ खान्॥ गमय वागां रुचय मादान्॥ कारि स धानि स रुचय चादं जातिगमां जाति सदमुकाः
 दृ४॥ पुनः स धयं स रुचं स नीन्द
 स रुचय वृद्धि सदा समागमं वि
 वृत्तं रुचं पूर्व स च पाणिनां स च न
 रुसा विवृग सन्धिय रुचु सांपनं॥ यथा विना दुर्बल क्रीडा गवा निशान रुचा श्वद गदि गा सा॥ रुसा विवृग

नृचकाधिकारयुक्तचुचामग्यवप्रतियानि॥	कृजाउवोवसमगाडितावधपाफानात्रि(वेरुयग	
कयसनापयत्ना॥	कसविंसत्त	व्यसनागकड४खितादि
सुधावैधायगाडितायन्ननव		मृचनुकरुयगक४यन्नम४
आयाससदमुयाकलाविचिः	दधीडिताविचि(धपूयस	नवदगसिगानि॥अनकः २४
संगाडितामृचनुगाउनस४॥	कुरुयदावृन(गाकपासा	॥कसचिसुचंरुचवन्ननस४
वधायमृकावडीविनसाव्यसनागनिरुयागनुसवा॥यसत्तकुरुष		

निपीडिताधुनरुचुकरुडनपानचिगं॥	अन्नाशयगधनुविचिगवृपांवधिमाशयगधनुमनाहृद्यापां॥	नमा
अवमगिसरुचुविदादवि	उसत्ताशधनानिलरुचु॥	पुरुकवनधन्यविचिगवृत्ता४स
चवसत्ता४सुखिनारुवः	नु॥माकसविदावकुड	४खवदनासुदगना४सत्तरुवः
नुसवा॥अरिप्रपपासादिः	कसीमवृपा४अनकसूख	संचिगनिरुयागनु॥सनगाकष
मा४ससमदयपूया४सदचिरुमाकुरुवचुरुवांवीमामृदंगापटासुधापकात्ता४सुवधूपडात्तसपः		

निनीलिः सदनुचिनुमानुसुखसुखानु॥ अत्रं वयानं चरथे ववमुं॥ धनं दिवत्थं सधिमूक्तिरूपं संसुवः
 नृये रुयविचिनुवत्तं॥ मा ३१ खगदाः क्वचित्तकिः ४१ सायेकसत्तः यमिकूलद
 गोसर्वचरुलानु उदाववः ४२ यरुं कजा लानुयव सप्रभायाकाचिसंयक्तिमनः
 यासाकसानवखरुमनः सायपतिः॥ सचौरिया याः सदचिनुमानुः ४३ पूत्थनरु
 सनयविपूत्रयनु॥ गन्तं मास्यं च विज्ञयनं वा धूपं वपुर्हृदसमवपुर्हृदिकासवृकस्थिववयनुः

२७

रुद्रनुमसत्तुरुवनुयाः॥ कर्चनुपूजांदगसदिगासुप्रविक्तियंसर्वतथागतानां॥ सदाधिसन्धानपिः
 आवकानांधर्मसदाधियः ४४ गिसुस्मिन्सानीवांगमीः सविविवजयनुवनुमूयाः
 किं कवीथिरुलाः॥ जसाः दयनुजिनवाउमक्तिं रनुवद्वहिसदासमागमं॥ ४५
 ४६ कृतीनादिरुवनुनिः संयल्लगधमधनधान्य समुदकागाः॥ वयनवधूनय
 गनकीसासमसंयुता रनुअनककत्यां॥ सदाधिसन्धानपिः सदाधिसन्धानपिः

धः कसविवाधायचनुनिसं॥ च वनुचपावमितासुपद्म॥ पथनुवृद्धा न्दगसुदिगासुवत्ताकनः
 रुक्मसुखायविद्याना॥ वे उर्यवत्तासनसन्तियः धून॥ १४ धनुधमोशुपकाग्यः
 जानान॥ पापानिकर्माः निमयाङ्गिगोनिपूवाङ्गि मयैरुवसंकटपू॥ यणयकम्मा २६
 रित्रनावदन्तकसविद्धीः यनुचनिववाकि (गया ४॥ यनवसत्वारुववन्ननस्मा ४
 संसावपा (मोह) वववद्वा ४॥ पद्माकनेरुसिगगनुवन्ननस्मा ४॥ यनपज्जुवनु॥ यचापिसः

लाः दजामुद्धोपयचापिअन्धपूवलाकवाशुयू॥ कृत्तनुगसीत्रविचिनुपूधंरुत्तवपूधंअनूमादयानि॥
 कनेवमपूधसुनमादन नकायनवाचामनशाङ्गि कना॥ पणिधानसिद्धि ४ सरुत्ता
 ममासुसृ (गयवाविंविब जानरुमां॥ यावन्दकना षाकिदगवसा-सुदावपसत्तः
 गुहामसमानमान॥ मा ययवितामनवगिनाय वटिंयकसांअदकषुपायान
 चकरि (सा) करिववर्गुकरि॥ पूवपा ४ मियावाअतकृति यावायसापकमनिंरुमांअसिद्धिः

यदमोत्रमदीयकगंतीतसकंचिककागनिकगं॥गंखदुखावसूपाधुतदनेंदमविवाडिनहासि
 रनारं॥नीलविगासविम दभुंनीतमिवास्तः पुच्छिरुवं॥पद्मसुवर्णविभा
 तसुडिदंयद्रूपरगितयः दमखा रं॥गंखमृधाः सनिरगमूखनार्धुदक्रिणावलि
 कवन्तितवर्णुश्रुन्निगा कसदीधगमीव गुरुम नैरुममार्कसतारं कंचनकाः
 रिसुवर्णुसुदंनगमूखास्तनपातयतिर्णु॥श्रुवमगविगि यनासागंमृदकसर्वदिनांगसकनं॥चक

२८

समकममममूखायवातसूयामपदक्रिणवर्णं॥नीतनिरगकसदुतजगनीतविवाडिनभाससूय
 यं॥आकसमानपरासिः मयाकंपूडिनसविदम दिगिस्तावदृ४खमननयभाः
 कषितार्कसर्वसूखनचम यिससत्वं॥नवकेगति सधनियोगनियूपनसूवमः
 नडुगनियनसूवसर्वसूः खाविमसत्वंसर्वयभाः नकनंश्रुपायननियू॥वर्णुसू
 वर्णुकनकनिरासं कंचनकसूखासेकमानंश्रीमगगांकसूविमलवर्णुविकागिनवाडिनसूवि

मत्तवदनं॥कवृगवृदाकवामसगांमिंदमिवकमविकमनागं॥सलितदस्तपासमिदवाकंमावृत्तय
 त्रिमसासलनव॥वामयल॥
 कवृगवृदाकवामसगांमिंदमिवकमविकमनागं॥सलितदस्तपासमिदवाकंमावृत्तय
 त्रिमसासलनव॥वामयल॥
 कवृगवृदाकवामसगांमिंदमिवकमविकमनागं॥सलितदस्तपासमिदवाकंमावृत्तय
 त्रिमसासलनव॥वामयल॥
 कवृगवृदाकवामसगांमिंदमिवकमविकमनागं॥सलितदस्तपासमिदवाकंमावृत्तय
 त्रिमसासलनव॥वामयल॥

शुभविश्वसंकृतगमं॥लोत्तुगकुत्तुमिहंतिरवाकंविमलसक्रममिदवाकंमावृत्तय
 कवृगवृदाकवामसगांमिंदमिवकमविकमनागं॥सलितदस्तपासमिदवाकंमावृत्तय
 त्रिमसासलनव॥वामयल॥
 कवृगवृदाकवामसगांमिंदमिवकमविकमनागं॥सलितदस्तपासमिदवाकंमावृत्तय
 त्रिमसासलनव॥वामयल॥
 कवृगवृदाकवामसगांमिंदमिवकमविकमनागं॥सलितदस्तपासमिदवाकंमावृत्तय
 त्रिमसासलनव॥वामयल॥

सद्गुरुविभुकिशित॥ कसमगकिदिमचिडिनानां चकयुभस्यदिविस्तवकुं॥ सचसदवकुलाक
 समुद्र॥ सचरवायवचिडि नायुधुनसगदभकुमः कपसाहुंभेवचचकयुभासग
 नाना॥ वरिचुसंसुतमडि नसचकाथनवाचयमः त्वमभन॥ एसमयसंचितपूः ३०
 ल्यरुसागंननचमत्वयरा रुडिनत्वंचवंकविचन वपतिवृद्धंचवंकशानिचयः
 पुनिधानं॥ यवचकुचिसमरुवकजामिजनागनकरमनका॥ ॐ हगुरुदीपगामिसवपुत्रीदग

दसनरुगुगुमि ॐ हगडिनचुमुतिकसताकचवाजाजानिपूजानिपूकसलरुयं॥ यदगुभानिमनः
 कमकुलाययिचइतरुकरस दसुभाजनय॥ यचइह स्वप्रगतापिरुपूनदगयिः
 दिवसंगतापि॥ ३४ स्वसमूडवि माचयिसत्तायुवायवहि वयिणावसितारिशा॥ वाधि
 मनरुवयययययययययय रुवकुमसाजूसयथा॥ ३ रुदीयदानवियाकरुसन
 सचिडिनानचसमुतिदेता॥ संसखयगामिगावसूनोदुंवाकचमंछरुकरुलरुयं॥ यचसदाचकः

दोममपूकोकनकलुंकनकय हास वं॥ कउरिदावकमरुन रुयं वाधिमनरुवकाकवधं च॥ ययिच सः
 लज्जजनज्जानागवधविदी नयसनगमाथा॥ कयूः रुवयज्जनागरुसचकास
 पयायलमगवधलिथु॥ ३४खः समरुवसंकुयकलीः सचसुखसचज्जकवसुग ३१
 कलज्जनागरुवाधियवयं॥ य रुकयचकोटिगमाथा॥ सधुपरासाकसदगनता
 ययापसमूदंभापयुमयं॥ कर्मसमूदविकीयुमयं॥ कर्मसमूदावधिययुमयं॥ ययसमूदयय

मू१
 यमचंरुनसंदुविभाधयुमयं॥ विमलरुनपरासचयमसचयुमानसमूदरुवया॥ वाधियुलेः
 रुलवत्तयपुलुदगनस वधुपरासवसनयय पुरासरुविषमिसयं॥ वाधि
 पुरासविभाधयुमयं॥ विमलरुनपरासचय सकायपरासरुविषमिसयं
 लपरासविभाधनताचः सचदिसाकविगिदुरु वयं॥ पयवयसंनेगचिनि
 लपु३४खसमूदउरुवपिताच॥ सचसुखसचसागवताच॥ कलज्जनागरुवाधियवयं॥ यरुकय

वेककादीगनायं॥यादृगकुरुविगिरिहिसाक॥सर्वजितनमनकुरु॥ननादृगकुरुमननकुरुभांयम
 गतिमयमनागनसर्वशा ॥ॐ॥गिसव ॥पुपरासाकुरुमनकुरुभांयम
 मसाकशानामसर्वकथाग ॥ॐ॥गिसव ॥पुपरासाकुरुमनकुरुभांयम
 नरुगवाकुरुसांवेसायाः ॥ॐ॥गिसव ॥पुपरासाकुरुमनकुरुभांयम
 पुष्पनिविरुचंदगिनशून्यधर्मा॥नसादृगिसकुरुमनकुरुभांयम॥सत्यस्यः

वद्विजानमानमानगवसायुंस्वसुसर्वधर्मा॥यस्यदसकुरुमनसंकपनादगिनशून्यधर्मा॥
 पुन्यवृषायनयदशुलिध ॥सत्यनकावृन्वसादः ॥यार्थ॥पुकागिनसकुरुवयः
 मनेयधालिजाननिदिस ॥वसासा॥अयंचकाः ॥आयथश्चशून्यगाम॥संगाम
 योशायनरुदियानि॥ना ॥नयकशमनिवसनिः ॥धनरुविजाननियवसयन॥
 वद्विजियंयपनकयुववनिः॥नदियंगयविचयन॥वासादियंगयविचयन॥नदियंगयविचयन॥

यंनिसंघसंप्रदायनि॥कायलियंसंगगकाधवमिसनलियंघनविचयनच॥पठिलियानिपः
 वस्यप्रसक्तकसकंविषयसलियधवमिचिकुंदिमायापमयंघनंघपठिलियंः
 विषयविचयनं॥यथा नवाधवमिधनंघमसंगमसोवहिसमागित्तयपुजा ३३
 नमः॥लिय(गावयच॥चिकुंयथापठिययागित्तंयपुजानमः॥लिय(गावयच॥
 यंपंचगदयतथेवगंधंघसंवसर्गचिन्धधर्म(गावसं॥चिकुंयसर्वरुपठिलियपूगकनिविवचंघ

समकलियसंप्रविष्टं॥यत्पठिलियसंगित्तंघनयलियंकुवकुजानमात्मकं॥कायशुनि(धरुनि
 व्यापात्रं॥जसावकधपयसंरुवयज्जगशुकस्यसमलिरुधलिरुकायमु
 ००वगुल्यगामधिसुमरुकुसलिसानियथावोवःगामान॥सिद्धदगद(ग
 पयस्यमेवसदाविवदयथेवज्जगोविषयकवगनि॥धरुनगसुदयकुः
 विधानिदुदुगामीदयदुदुगामी॥धचदयंदिगविदिगासुसत्ता॥नगधनिगवकुकुंनमा

निमित्तं वगधमलि सावगय ॥ ॐ सोचद्वयक्रयमां वडुनमडावगयानि नमावुतावगय ॥ सोदि		
द्वउद्वगमोनयानि ॥ चित्तं च वि	ज्ञानमध्वस्तिनं वा ॥ गः	सायथापुर्ववृत्तनकमला
दवमनधपुचनिषयाया ॥ यः	थाकृत्तंपुर्ववृत्तपवत्ताः	अथातिजंयितुक्रयान्कः ३४
वाकः कायधममपुवीषयः	निवाहितेनध्विनि	इदत्तनं ॥ क्रिये ४५५५
नयधकाद्वरुन ॥ यसादित्वं दवत ॥ हिवसाकनिवातसत्त्वसुथापुजसावा ॥ श्रुत्यादिनकरवसूत		

वधमाजविद्यतः परयसंरुवाथ ॥ नमस्तुतसंरुवाथतत्तात्तादाहृतनयायुदितिरावातसात्रर		
नातिश्रुतिश्रुसंरुवाथा ॥ अ	विद्यमानकदाचिविद्यत	अविद्यतः परयसंरुवाथ ॥
अविद्यमानैवमविद्ययात्र	नत्मात्मयाउक्तविद्य	॥ वा ॥ संस्कारविज्ञानसनाम
वपुषतायतस्यगतधेयव	दत्ता ॥ रघुउयादानतथा	रुवगाजातिज्जामवधभाक
उवातां ॥ इत्यानिसंस्कारध्विनिनियानिसंसायवक्रययथास्तिगानि ॥ अरुतसंरुतअसंरुवाथ ॥		

यानिगधिरुविद्यायमंगरथादृष्टीमनंकासुथशास्त्रनाहानासिनाचिन्दथक्रमजालं॥सुत्थालयंपग्ध
 थगुन्यरुनंरुगननंचयाः विगुनंचदाजं॥विगुनंः चमजमनपूयस्यजंमंदगिनि ३७
 अमनपूयस्यजंमंदगिनि नजमनपूयस्यजंमंदगिनि
 नायमदनाभववधमरुनी॥ ज्ञापविनाभववधमरुनी स्वपुकासिताभववधमरुनी
 कासुवपिनंभववधमरुनी॥पकासिताभववधमरुनी उक्तपिनाभवमरुनीयनरुवंपनाविः

नाभससंरुवसमदाभयिधिनानिभनीधपायपथानि॥क्रमयिदादमनयित्थपानिना॥यसार्थपूर्वः
 मदनभककस्याजचिनि यापडिगनायदिचि त्ववाधयदृष्टुनसदमका
 ययविचययनामादका चपादीचयत्रिष्टडित्वा॥ धनदिवधमनिमकिरुपसंन
 यनारुनांगयियपुनं॥सय पूवडूयविचिबुवत्ताः निचिन्दितागिसादनायांसव
 दृष्टरुवावनरुनिरुवसर्वचयवधीमदंरुवुयित्वाचमत्तचक्रुयाक्रुकाययसा॥नूवुनागिक

विष्णुयावदाकागमचयं॥ विष्णुयावदाकागमचयं॥ विष्णुयावदाकागमचयं॥
 नवरुनननये॥ सर्वगव यिरुंगव्यंनरुहानंति नरुवा॥ चककषपठरुनुसः
 ज्ञानश्चमदामून॥ अनेक कस्यकाटीपूजगव्यंगल यिरुंछचित्ता॥ वा ३७
 ॥ विष्णुसूत्रपुष्पासारः नरुगुनुमाऊशून्याप विवरुनाः॥ ॥ ॥
 मयेश॥ ॥ अथखसूत्रयवलासदाभाऊ॥ धृमयाक्षसदाभाऊविदूकामदाभाऊ

विष्णुयाकासदाभाऊउत्तायासनरुचकांगनवीवमलियादृष्टदक्रिषजानूमधुसानिएधियांपः
 निष्ठापयनरुगव्यंगमांउतिः पुनसलुगवन्ममददा वन॥ ॥ अयंरुगवन्सूव
 पुष्पासारससुगुनुमाऊ॥ चरुथागनरुगव्यंगमां॥ स चरुथागनरुगव्यंगमां॥ स
 चरुथागनरुगव्यंगमां॥ स चरुथागनरुगव्यंगमां॥ स चरुथागनरुगव्यंगमां॥ स
 चरुथागनरुगव्यंगमां॥ स चरुथागनरुगव्यंगमां॥ स चरुथागनरुगव्यंगमां॥ स

क० न च न व क नि र्थ क यानि य म ल क द ४ ख सं (गा य क ४ स च र य य नि ग म न ४ स च प व च क प नि निः
 व रु क ४ इ कि क का न्ना व पु म म ना य वि का न्ना व पु ना ग का हान स च य ग ४ य का ३०
 म क ४ य व म गा नि क व ४ (गाः का या स पु म न ना वि वि व न ना प द व पु म न यि ना ॥
 उ प द व ग न स र म पु न्ना ग यिः सा ४ म स र द न रु ग व न स र पु र ग सा रु स स रः
 रु द्वा ड स न स व स र म् रु द्वा न का मां वि रु द्वा ष टि सं प का ध मा न स्या दं व रु द्वा म द्वा ड न नं स व स

उक्ति ४

प रि द्वा द्वा त्तां ॥ प न न व ध स र य व (घ न व र्मा म रु व स न व म दि द्वा ता रा व स द्वा ड ता वि व रु यि ष नि ॥
 अ स्मा कं का र्थ वि व लं व रु म व सं क नि नं रु वि ष नि ॥
 कं का र्थ सा दि भ नि ॥ व यं रु ग व न च त्वा य म रु म्मा जा रु क थ गि यं व न म्मा ता सा
 थ ध र्मा म व यं रु द न रु ग व न द न ना ग य क ग न र्मा स ना ध र्मा का थ ध र्मा वा दि न
 जा लं का व यि षा म ॥ व यं रु ग व न च त्वा य म द्वा म्मा ४ सा र्धं म द्वा विं ग नि म द्वा व रु म ना प नि लिः

वनकेशयक्रगनसदमे॥ नननसमितं सर्वजन्मदीपं दिव्यनवकृपाविशुद्धनागिकाकमानूषकन
 ववजाकयिष्यामः॥ अत्रकयिष्यामः॥ यविषावयिष्यामः॥ ननरुदुदकनरुगवत्त
 साकंचतुर्भुमदावाजानांसा॥ कयासंनिसंरुत्यादि॥ ता॥ थकविरुदकनरुगवत्त २८
 अस्मिंजन्मदीपविष्यासाधयः॥ वक्रसवापदगारविष्यः॥ निद्रिद्रिकाताप्रबवाना
 नावित्तेनूपदवगननूपदवसदमेनूपदवगनसदमेनूपदगारविष्यानि॥ नवयंरुदकनरुगवत्तचत्ता

आमदावाजा प्रससवर्गुपरासारुमससुदुवाउसरुवाश्चसुदुवात्रिषारिद्रुसांसंवादनोके
 विष्यामः॥ यदाचमरुदकनरुगवत्तधर्मरुगकारि
 जानांसंवादनयावक्राविष्यामनचयपूयपूविषय
 यपूयमंसवर्गुपरासारुः॥ समुदुवाउविस्त्रयः॥ एपसंक्रमयूस्त्रयनपूविष
 अत्रयूपाविषयगनानिनाविषानूपदवगनानिउपदवसदसाध्यपदवगनसदसाधिव

यमसयिष्यन्ति॥यस्यरुद नरुगवमनूयमाउस्यविषयमसूनुमाउमनकारिद्ववाधमहाग
 काउपसंका न्ना रुविष्यन्ति॥ • ॥ अयंसनूयमाउ॥॥ संसर्वधुपरा मारुमसूनु
 रुदमाउंरुगयाकयत्वाचरुषां सूनुमात्रकासांरिद्व
 सजात्रमांरुयोनवविनासं पविशदंपविष्यामंरु
 वंरुत्वावामदावांजासुसमनूयमाउस्यसर्वविषयगमानोवसत्ताना मांरुकांकविष्यामंरुपवि

३२

नागंपविशदंपविष्यामंरुगानि सस्ययमंकविष्यामं॥यदाचरुद नरुगवमनूयमाउ॥स
 रुदमात्रकासांरिद्वरि कृत्यापासकापासिकाः नांसर्वसूखापकमलो॥सूख
 मांरुयोन॥नवयंरुदः नरुगवंरुत्वावामदा मांजासंसनूयमाउंसर्वका
 ऊस्य॥सत्तुननयंकवि ष्यामागुचरुमंकविः ष्यामासा निमंरुपूडिमंरुसः
 र्वविषयपूयपुगंसनीयंकविष्यामा॥ • वाज्रथखलुगवांयुधुर्मांमदावांजासांसाधकाय

सदाग॥ ० ० वासावसावमहाबाजा ॥ सावसावयुष्माकंमहाबाजा ॥ यथापि कययं पूर्वदिनरुमाः
 धिकायाजुवशापिनकम लसुसावद्वद्वकादिनि यनमकसदसययुषासिनाथ
 मिमाथवमवादिनय वसमदवातांयसनूय सायमजसंकावयधंयथापे ४०
 नायुर्वदीययानुसचसः तानादिगचिका ॥ सुख मेवाचिका ॥ सचसत्तदिनस
 रवायमयपुनियत्तासचदिनपनिषधका ॥ सचसत्तानादिनायसंदायाहियुकाकययंयत्तावाः

महाबाजात ॥ कषांसनूयबाजससुवधुषरासाकससुधुषबाजसयुजासंस्तयाहियुकाकानांमाः
 वक्रांकत्रिषथयत्रिकां यत्रिगदंयत्रिपात्रनंभा किंससयनंयत्रिषम ॥ कनय
 पालिश्चरुसदाबाऊ ॥ स वसयत्रिवात्रेवभकेयः यक्रमकसदसेवनीमानागतय
 सत्तानां वद्वानांरुग वकांयनंभवीज्रावक्रि कारुविष्यनिपत्रिपासिनाचय
 त्रिगदीनाचरुविष्यनि ॥ कनयुष्माकंयदुर्धु महाबाजातंसवसयत्रिवात्रांननकषांयक्रमकसः

दशाष्टां दशानां दशासूत्रसंघाभसमरिचूनाजया रुविष्यति॥	असूत्रानां चपयउया रुविष्यति॥	
धर्मानमस्य ४ सर्वपवच	कपथमकस्य सूत्रवर्गुप	यसौकमससूत्रुदयउस्यार्थ
यकषां सूत्रुदयवकानां	रिद्रुतिद्रुध्यासकाया	सिकानासावकाकविषयथयः ४१
त्रिगदं यविषातनंगानि	स्वस्ययनकविषयकः॥	॥ ७० ॥ अथ वेशवला मदा
वाजा वृत्तवाक्षामदावाजाविचूटकासदावाजाविचूपाक्षामदावाजउरुयासनस्य ४५ कांगा		

निशीववानि ४ पावृषदक्रिषानि जानूमलुलानि पृथिव्यां पृथिव्या यनरुगवां मृता ३३ लिंपम		
मरुगवकमरुदवाचकः॥ ३	॥ ७० ॥ अयं रुदः॥ रुग	वन्सूत्रवर्गुपलासाकमसूत्र
नुवाजा १ नागमधुनियः॥	जामनगयनिगमजन	पदवाद्यवाउभानीपूयचः
विष्यति॥ यस्य यस्य मनूयः	माउस्यविषयमनूपा	कारुविष्यति॥ कथिरुदः
नरुगवन्मनूयवाजारुवन्यननतदयनुसमयनवाउगा रुधवाउत्यकावयन्॥ असूत्रवर्गु		

पुष्पाभाकमस्यसुखदुःखसुख	कारुवंसाधसुखदुःखकाहिकृति	कृत्वापासकायामिकाः	
तुष्योक्तुनूक्त्यात्मानयत्	कथसुनरुसमिनेसुव	पुष्पाभाकमसुखदुःख	
पृथुयान् ॥ जन्मनधसुखवः	सनसंधादनधसुमिने	पुष्पाभाकमसुखदुःख	४२
मदाभाजासुखनपविद्याया	धामनकधवयक्रुगनः	सदसुभां नूनाद्विद्यातारुः	
वासदभाउसाविवद्वयन् ॥ मदानंवीर्य	सुखसुखवसंधासुखकायपू	कृत्वापासकायामिकाः	

विवद्वयन् ॥ कनवयंरुदक	गवंशराशामदाभाजाः	सुखनपविद्याया	पुष्पाभाकमसुखदुःख
हिः कायासुखवैवकदि	धानागकधनि ॥ यकया	सनननिगमऊनपद	यदुःखाः
ऊधनिपूसंयमिष्यामः	नगायंसुवर्णयुखासा	कमः सुखदुःख	यवविषयः
निरुषांयमनूपाभाजा	नससुवर्णयुखासा	सुखदुःख	यवविषयः
ऊयिरुषांयवक्रांकलिष्यामः	यविद्यानंयविद्यानं	यविद्यानंयविद्यानं	यविद्यानंयविद्यानं

कथं गतानि विषयया इह तानि विषयानि ॥ यदा चरुद नरुगवन्तु स्य साम न क स्युतिगवन्तु
 स्य स्यय गतानि च वं ग्यामि नाना यदव गतानि नाः नाना कथं गतानि रुधयुः ॥
 सचरुद नरुगवन्तु साम न कः यतिगवन्तु वा उधु वंगि श्रीसनां या उयि लायवच ॥ ४४
 कुगमनाय स्य विषयानि स्याः नारुधन् ॥ यथायं सव धुयुग सारुस ॥ सारुनुवा
 नारुधन् ॥ स्यतिगवन्तु वा उ ॥ सारुधन् वंगवन्तु कोय नरु विषयमप संच मिथुका सारुधन् विनामि

कुका सारुधन् ॥ कवयं रुद नरुगवन्तु च तामा मदा मडा ॥ सव स्य विवा ॥ अन्न केय क्वा क्वा सगर सद
 स्य वद (ग) वा सारुधन् रुका पसंक मिथ्या स ॥ नं पव चक माभानं सारुधन् पत्नं न
 स्येव यतिनिवरु यिष्या माः नाना कथं गतानि ना यसंद विष्या मा विष्यां श्रु कयि
 प्याम ॥ यथा नरुप वयं न गन्न नितु विषय उय संका मिथुं ॥ क्वा ॥ पूत विनामं
 क विषयि ॥ ॥ ॥ अथ रुग वं रुपां च रुधु मिथ्या मडा नं साधू काय मदा ॥ ॥ साधू साधू मदा

नाजा ४ सा वृख सूपन यूषा कं सदा नाजा नां ययुयमसा जसं रव काटी नियुन गन सदस सन दानी
 नाया जूनरु नाया ४॥ सः स्वसं वा (वे) धे धी य रुषा कपां म नूष नाजा नास सच स
 वर्धुय रु सा रु स स स रु रु उ वा उ स (य) रु भा मा वक्रां क विषा थ प विषा भं प वि
 उदं प विषा स नं गानि स स्वयनं क विषा थ गानि चक्रां क सानि च गानि च न
 म नाति गानि च या द्रु ति गानि च विषयानि जात्र कृ थि थ प विषा भं प वि उदं प विषा स नं द धु प

४५

विदात्र ग सुय विदात्रं गानि स स्वयनं क विषा थ गानि च विषा मि सर्व रु था प द वा प स (गी) पा
 या स स ४ प विभा च विषा थ प व च कानि च नि वः क विषा थ स च उ नू दी प ग ना
 नां वा स म नूष या उ सः अ क स द या रु धु न याः वि उ द या वि वा द या डी स स मा
 प य थ ॥ य थ च रु य का कं च रु धुं स दा ना जा नां स व स य वि वा ना नां अ सि उ नू
 दी प रु प च रु पू न ग व स द सु प ना नि च रु व गो ति न ग व स द मा नि रु य रु विष य च रि न स य रु न च

माये श्रय्यन्तारि वसयस्मन्तवधमस्कात्वनयवसा प्रंनविद ० ययू॥ नपवसा प्रंविद ० जमययू॥
 सनचयथायुर्वकसापच यनवाउत्तंयतिनरुयू॥ सनचवाये श्रय्यन्तवधुदा रु
 वयूमानचपवसा प्रंनवि नागथयूनविपयविना मायपवावसयू॥ यथावास्मि
 ऊम्दीपकपूवधुवगीति युविषयनगवसदमुपू॥ कानिचयुवगीति वाऊसदसा
 शिपवसावधदि कविरुनिसद्विचिरुनिपवसा प्रंनक सदाऊनरुधुनयाविगदयावि वादयाः

४३

सपसपविपयवहिवना कनचरुर्हिसदावाऊनां सवसपविवावा सां जयंऊम्दीप ॥ स्त्री मारुः
 विषमिसूरिक्रयवमधी यथवद्वनसमाकीर्तु थपद्व (आऊवकवसरुविः
 यमिावाउमासाद्वमासः समत्तवातिचसच्चीनि समावावयूकानिरुविष्यनि॥
 अदावाउंगदनक्रुवचु सयौश्वसमागदिष्यनि॥ काननचवधवावा ॥ एधिवाः
 नियतिष्यनिसव्वंऊम्दीपगमानिचसत्वा निसव्वनधान्यसरु दानिरुविष्यनिसदावागानि

वामत्तत्रासिचरुविष्यन्तिपविस्वागवन्निदमकृगसकर्मपथसमन्वागमानिचरुविष्यन्ति॥यद्भूयः
 यत्तासूगमोसुगमोसकठव यत्तयन्तदवचुवनानिचा कीर्तुनिरुविष्यन्तिदवदव
 पृथ्वी॥यत्कथितसदावा आरुधन॥यः० लमस्य सवर्तुपरासाकसस्यसवन्द ४१
 योऊस्यथाकारुधन॥मा नयिगावेपूऊयिगावः रवांचसूचन्दभायकाभांरि
 कूटिकूट्यपासकापासिकानासोत्तयसत्कयाकुचूयान्नानयत्तूऊयन्॥यूपाकंचरुर्भूमः

दावाऊनांसवलयविवासाभासनकषांचयकृगकसदजातामनूकम्याथयसककससिमंथमसूव
 र्भुपरासाकसंसूववाय लुंगृष्टन॥कृपनवर्ग अवलसलिसादकनयूपाकः
 मनान्यासरावानिसन्त योयन॥सदमोऊसाय भाकमनानिगबीमामिविव
 दयन्॥मदचयूपाकं वीर्यविस्वासयवसंच वयूयं०संऊनयन्॥कडयधि
 यश्चरन्मिथयूपाकंविद्वयन्॥ ३०५ ॥मनचमनूयवाऊनसमगाकमूनस्तेधागनसा

शासनममदावसनरुवित्तवं मरुतापदपयित्तवं ॥ मरुतापमज्जानवमरुतापनक ॥ १० ॥
 चवमूकुरुगवासां यशुत्राम दावाजाभनदवाचन ॥ ६० ॥ ॥ तसिंशखतपनमदावाजा ॥
 काभनसिंसमयगतमनूष्य वाजनसर्वत्तानिपोषु ॥ तानिनववृचिववसुनिपावः ॥ ५०
 विमवा निनना विरुषवाः संकायेवासा समसंकरु ॥ यथा मदावाजानूरावनमदः ॥
 वावाजयुदयानना विचिमुसज्जल यविगृहीतः ॥ मरुतावाजकृतादिति युमित्तवं ॥ मरुतापमरुतापकस्यः ॥

रिक्ता १५ मरुतापमनायगनक्तवं ॥ ७० ॥ ॥ मरुतापदमा ॥ ७० ॥ यावन्तिसनूष्य वाजकुरुपदानिखाव
 यन्तिगावन्तिकस्यकाटिनिय मसदसानिसंसादात्तवं नूखा निक विषयिनि ॥ गावनां
 चकवन्तिवाजकुरुकाटिनि यूनगतमदसा गांसाः ॥ शीरुविषयिनि ॥ यावन्तिसनूष्य
 दान्तिके निषयिनि ॥ गावनां चैव दृष्टवन्तिकानां दिविचिर्त्तं मरुतावाजकुरुपदानिखाव ॥
 यूनककुरुकाटिनियूनगतमदसा गांसां वावसा नानां सवत्तमयाधां दिवमा मानां साही

नामदनीगान्निरुगाएविषयिस्वस्ययनंवाअवममयंसर्वविषयप्रादक्रिहाएविषयि॥पविषविनथाः
 नृत्तीतिरथानृत्कष्टिक्थः सचयनवकानवमदिन अनपसगिअनृपायामथरविः
 यमि॥यदायमदावाजाःस मनूषवाकाभनेवयूप नसदसिनिववतसवधुपरासा ७३
 सारुमसुहृदवाउधवका चकारिहृदिहृद्वपास कायसिकाःसत्कृपाहुयूकृपा
 तानययूपाकंचतुर्थमदावाजानंसवलयविवावाभांरुपांचदेवगतानासनकपांचयक्रगरमदगतां

मदावतकृपासिंसंरुस्यनि॥उदावावावाभांचगन्धानापास्यनि॥सर्वदेवरुवभपूसर्वसुवधुवधुवदहा
 सःपादरुविषयि॥रुनचावः रासनसर्वदेवरुवतानव हासिनातिरुविषयि॥यथा
 विनादसमदासादसायांसाकः वाकोदवरुवतानिसुपच नबीक्रमानिनानागन्धय
 लमाकृपासिंसंरुस्यनि॥कथा वास्यमदावाजाःसवधुप रासारुमस्यसुहृदवाउधस
 मउसाववसदसुधयितामनमनूषवाकन॥नानागन्धाअस्यसुवधुपरासा रुसससुहृदवाउधसपूजाधा

55

पुरा सा रू म स स ग न्य बा उ र्णा न कानि वा वि स ल्य का टि नि यू र ग र स द सानि अ व व र्णि कानि रु वि ष्य निः
 अ न रू न या स म यं वा (धः) ॥ अ थ ख लू गानि स म न्का द ग म्ना दि कू गं गान दि वा लू काः
 स म पू व द क्क र का टि नि यू र ग र स द सानि क थ ग र का टि नि यू र ग र स दः
 गानि स व क स क पू व द क्क र न न क न स म य नै क प द नै कः
 वा च क स व नि धा प ध ग स व म र्णा ध क स र्णि का ध मा स न ग र स न द वृ ॥ उ प सं क मि ष्य सि त्वं स त्पुः

प्रणानागमवनिवाधिमर्त्युपदगयिष्यसित्वंसत्यवृषवाधिमर्त्युपदगगतादुमनाकाससायविष्टः
 सचेनैसायपनिविमिष्टाः निमर्त्यासत्तांनिकासाः नमनिवृत्तपथवमवलाका
 नान्यविद्वानानिअविष्टिः सान्यनकातिद्वयवका टिनियुक्तगतसदुजाभिसमसं
 कविष्यसित्वंसत्यवृषवाधिमर्त्युपदगयिष्यसि त्वंसत्यवृषसत्तांनिसादुमम
 दामादुमसाकधुनः॥यथाउयिष्यसित्वंसत्यवृषदुमनाउमसायविष्टः॥कृत्विमवृषपवमविः

७३

रुतसन्दर्भनानाविकृतवृषमविनामावसेनां॥अरिसंरात्तसित्वंसत्यवृषवाधिमर्त्युपदगगता
 इत्यनपगानविष्टजलग मीवननरुवांसम्यक् श्वाधि॥यवकृयिष्यसित्वंसत्यः
 यथायसावदुवजासना पविष्टः॥सचेतिनारिसं सुमंपवमगहृयंदादगाकावम
 नरुवधमवर्जं॥यथाद निष्यसित्वंसत्यवृषानः रुवंधमागवायं॥आपूययिष्य
 सित्वंसत्यवृषसित्वंसत्यवृषानरुवंधमगंखे॥ठकृयिष्यसित्वंसत्यवृषमदावमावर्जं॥यद्वानयि

षसित्वंसत्पूषानरुवां वमाकां यवयिषासित्वंसत्पूषानरुवं सदावमेवर्षयमाऊयिषासित्वं
 सत्पूषानका नि क्रमग नसदमाभियमात्रयिषा सिध्वंसत्पूषानका नि सत्पूषा
 णिनियुगगनसदमाभिस रीमात्सदायमसदा न॥यविमात्रयिषासित्वंसत्पूषा ५१
 वानका नि सत्पूषा णिनियु नगनसदमाभिसंसावच कोन॥आवागयिषासित्वंसत्पू
 पूषानका नि तथागनका णिनियुगगनसदमाभिनथावमेवर्षयमाऊयिषासित्वंसत्पूषा

उ॥यत्पूषासित्वंसत्पूषानका नि क्रमग नसदमाभियमात्रयिषा सिध्वंसत्पूषानका नि सत्पूषा
 सांविद्विषासित्वंसत्पूषानका नि क्रमग नसदमाभियमात्रयिषा सिध्वंसत्पूषानका नि सत्पूषा
 नि॥यिषासित्वंसत्पूषानका नि क्रमग नसदमाभियमात्रयिषा सिध्वंसत्पूषानका नि सत्पूषा
 सदवर्षमसनिगृहीता रविषा नि॥यवमूकचत्वाधानः कउसासमन्वागमारुविषा
 म॥...॥य॥यिषासित्वंसत्पूषानका नि क्रमग नसदमाभियमात्रयिषा सिध्वंसत्पूषानका नि सत्पूषा

रुमंसुखं नु यजं गृह्यात् ॥ गायत्र्युक्तं वक्रादि कृति कृत्वा स कायासिकाः सत्तु योऽङ्गुवक्र्यान्मा
 नयत्युत्तरं ॥ अस्माकं चतुर्भुजं मदावाजानामर्थयत्तदा उक्तेन स (मा) धिर्न (मा) वयम् ॥
 नानागन्धैः संसिक्तं कुर्यात् ॥ नक्षत्रमर्थयत्तदा मस्मादि अहो हि मदावाजः सादृष्टः ॥
 साधवर्गं गृह्यात्तन्नामार्थये सधवगावत्किञ्चिदसौ कृमसंयुक्तं दद्यात् ॥ समन
 न्ननिषधुस्य च रुदन रुगवत्सुखं हि श्रावणं सनगतस्य ॥ न नमनूय वाजनास्माकं चतुर्भुजं मदावाः ॥

५७

जानामर्थय नानागन्धैः यत्तदा सधवर्गं गृह्यात् रुदन रुगवत्सुखं हि श्रावणं सनगतस्य ॥ न नमनूय वाजनास्माकं चतुर्भुजं मदावाः ॥
 उक्तं पूजाय नानागन्धैः पूजा नानागन्धैः यत्तदा सधवर्गं गृह्यात् रुदन रुगवत्सुखं हि श्रावणं सनगतस्य ॥ न नमनूय वाजनास्माकं चतुर्भुजं मदावाः ॥
 रुदन रुगवत्सुखं हि श्रावणं सनगतस्य ॥ न नमनूय वाजनास्माकं चतुर्भुजं मदावाः ॥
 यत्तदा सधवर्गं गृह्यात् रुदन रुगवत्सुखं हि श्रावणं सनगतस्य ॥ न नमनूय वाजनास्माकं चतुर्भुजं मदावाः ॥
 रुदन रुगवत्सुखं हि श्रावणं सनगतस्य ॥ न नमनूय वाजनास्माकं चतुर्भुजं मदावाः ॥

शिवधूप कटकुद संयविगृहीतानागन्धधूपवमानिधुविष्यन्ति ॥ मनकलसवमूद्रकनसर्वसांति
 सादनुमदासादसायसाकः धनीयनुकाटिभनंसुम वृत्तांयचननाजानांकाटिभनंच
 कुवाउमदायकवाउनीप चननाजानांकाटिभनं चतुसदादीयानांकाटिभनंचः ३०
 युमदावाउकायिकानीध यानांकाटिभनंययसिंभा नंदवानां ॥ काटिभनंयावत्तेव
 संज्ञानासंज्ञायगनापगानांसचतुवनपूतिसादनुमदासादनुसाकधुकाटिभनपूयसिंभापूद

वनिकायपूस्वर्वाचदवनागन्धसूवगवूडकिस्त्रममदायगानांयववनगमानांवापयनदीकग
 मानिनागन्धधूपसमाहः शालिसंस्मासुनि ॥ उदा योधनानागन्धानायासुनिसूव
 धुवधुमयावावरुसाःपाद रविष्यनिसालिवावरु सासिसर्वरुवनानावरुसिमानि
 रविष्यनि ॥ ८७ ॥ चवम केचत्तायामदावाउरुग वक्तमकदवाचरु ॥ ८८ ॥ जस्यरु
 दनरुगवन्नावधुपरासारुमस्यसुगुदवाउसमान्यववृणानिदधामिकानिसावपवाउयिष्यामिकानि

वयुमानिर्लेपयमानस्य वृद्धसदसाववृद्धकृगसससससमनूष्य बाऊस्थानूकस्यावापविमिनपृथक्स्थः
 पत्रियदंसस्यसमानास्तव यं रुदन्तुगवन्वत्वाया सदा साडाः सवपविकावाप्रसक्त
 यक्रभगसदसेः सादं सुरु वनगगा नानागन्धधूपस ताङ्कगार्मंयादिनासमानाप्रदृष्टे ३१
 बासरावेयनकससमनूष्य बाऊस्थापगरसंस्कारः कूरसू(भाधिरंनानागन्धकस
 सिकंनानासंकासंकरं बाऊकूलंनानापसंक्रमिष्याभाधर्मिगवत्सायवकावसदायमिः भवत्यदवानामि

नृसवत्तमीचमदादयीयीधमदादवीदृढायमदाएथिदीदवनासंजं धमदायक्रसनापनिवहाविं
 गनिमदायक्रसनापनय धमदश्चवदवपुगाव कृपाविश्वयुयकाधियमिनीनिः
 धमयुक्रसनापमिः दावी नीचपंचपूगगरपविका बाअनवगसथनागबाऊः साग
 वधनावा बाऊः १॥ अन्नका निवदवकाटिनियुनग गसदसासिअद(मीवात्तरावेय
 ननसमनूष्य बाऊस्ययुनंनानासंकावसमलंकरं बाऊकूलंयुनसवमोहाभकसलिकाः पूषारिका

सुखाय वत्सं (मोचयुग्दी नं नाना संकाव सम संकृतं व म्मा स न प रु फं र ग व न्म शु व ला य न व यं रु द न रुः
 ग वं श च्चा य म द्वा य आ अ न के य क ग न स द्ध मे वः शि श्व स र्वे ४ सा र्द्ध स म ग्ना रु वि द्वा म
 न स म नू य य अ स क स्या न मि उ स द्वा य क स क स्या न मि उ स द्वा य क स्या न रु व स म द्वा य स
 द्वा व द्वा ४ ॥ अ न न व म्मा सः न व स न सं क र्पि ता ४ स नः न स म नू य य अ स्या व स्या क विः
 यामः ४ य वि ग्ना र्थे य वि ग्दं य वि पा स नं ग्ना नि स स य नं क वि यामः ॥ रु स द्वा अ कू ल स य न न व स य वि य य

३२

स्य द व क्तां क वि यामः ॥ य वि ग्ना र्थे य वि ग्दं य वि पा य नं ग्ना नि स स य नं क वि यामः ४ न व वि र यं स र्वा प रु द्वा य
 स (गो पा य म सः ४ य वि भाः व यि याम ४ ॥ ७ ॥ य ४ क थि रु द न रु व न नू य य
 आ रु य य स व म नू य य अ स वि य य यः स व रु प रु सा सा रु न स स रु द्वा अ स य य य रु ॥
 य द्वा य सो रु द न रु ग व स नू य य अ ४ स य रु य रु सा सा रु न स स रु द्वा अ स य य य रु ॥
 रि रु रि रु रु पा ग का पा सि का न स रु य म म न य न य रु अ य द स्या र्थे च रु रुं स द्वा य अ न म न का नि य रु

काटिनिभूगगसदमान्नभकानिधर्मशिव	असातविवर्द्धयन्नचाः	साकंवीर्यवस्त्रामचवर्जचसंउः
दियात्मरुवागिगदभाः	वासाकंकायपूनविवः	इयत्तनपिरुदन्नवयंरुगवंधेला ३३
नयकूउथयियथसमं	वावापूनकैर्यकैकाटिनि	युगगगसदमेससवविषयवक्रा
नामदावाजाःसवसपवि		
कविष्ठाभारुदन्नरुगवंधेविषयमस्माकंउयं	कृरुःसवविषयवासिना	दोःगवभासंविषंउयंननिदवः

नाथरुदन्नरुगवंधेविषयमयन्त्र	विषयगगानिचत्तलाः	निकसदजानानिरुविषयनि
वाउसंक्रागानिरुविषयनिसर्व	दमायत्तानि॥नाजावि	वाश्रुदवागविषयपाइ
रुधुनजानानिविगृहीतानिवा	गगलाकापागाःपइः	रुविषयनिरुदनक्रगामिव
रुविषयनि॥नानादिग्सःआ		
पवसपवविबूझानिरुविषयनिसर्व	यमिन्नूपकानिससा	त्यादयिषयनिचधुगदाश्रुविषयनि॥सर्व

यदायुसमरुसमिहंगंभान्नयगमोसूर्यचन्दनसोनादयथगमोरुविषयः॥३॥ कौलाकसदृगवर्तुनियविव
 गकातिगममान्नयकासनकासं यादरुविषयनि॥४॥ एधिदी र्कपाथरुविषयनिकृपाशः
 एधिदीगमा॥ संक्रयंरु॥ संक्रयं ॐ नृनिविषयतदागा श्रवास्वनि॥ विषयवर्षाश्रु ३५
 विषयनिद्रिद्रिकाकावावयसः खययरुविषयनि॥ पत्र वजागिवनद्विषयविनय
 नि॥ आयासवद्रुविषयनि॥ नयंससाकंरुदन्तरुगवंधुर्मुसदावाजानांसवलयविवागामास

नकषांरयक्रगमसदमाभीविषयवासिनांचदयनागा नांरुद्विषयमूयकनरुद्रुविषयः॥ सान्धवः
 यूपानिनाविषयनूपडा वगमानिरुविषयनिद्रु पडवसदमानिच॥ य॥ कथिरु
 दन्तरुगवन्नूपयावाडा रुवन्॥ यआत्मनामद नीयक्रांकरुकामारुवन्॥ विच
 यनानाविषयनिवाउसीः स्वा नृनृरुविषयमाः रुवन्॥ सर्वसूखसमर्पिनाचिः
 यक्षवाउसंकरुकामारुवन्॥ स र्वविषयवासिनांचसत्त्वानांसखायिउकामारुवन्सर्वपचजानि

चपवाऊयिहुकाभाहवन्सर्वसखनविषयंपनिपात्रयिहुकाभाहवन्॥वर्षनवाऊचंकात्रयिहु
 काभाहवन्॥सविषयंचसचेरियापदवापसलापायामेस१पविभावयिहुकाभा
 हवन्॥ननचरुदन्तगवत्तनयवाऊनायंसूवसुयकासाकन१सकुचवाऊ१५
 नय१॥यत्वाचनारुवकाहिकृतिरूपासकायासिका१सकृकरुका१यूवकरुः
 व्या१॥नानयिरुया१॥पूजयिनया१॥वर्यंचलायामदावाऊ१सयसपविवावाअभनेववमयिवलक

३३

मलमूलोपचयनाभनवर्मासुनदसनसंनययिनया१अस्माकंसमानिदिवात्मरानिमदनाऊसाविवर्द्ध
 नयानि॥...॥नकसदना१॥...॥यहन
 यंसूवर्षुपुखासाकससूवर्द्धवाऊ१५नय१॥योव
 किकसाकाकयवचनानाविआनिग्रागिउयगितानि॥यावन्निचनानादिवे१५चारिहृ
 नाविधानिग्रागिउयदगिनानि॥यावन्निचनानादिवे१५चारिहृशुषिरिहोकिदसाकूवागिचरः

ॐ
॥
॥

तानासथायमायाधुपदगिनानि॥ रुदनरुगवंसुखवक्षुदुगनसदसुअनकसथगककाठिनियः
 नगनसदसुअःसर्वसुः धर्यंकारिहसुअपिः काठिनियुनगनसदसुअनकसथ
 गमाःसुनवथविगिहृन वथमंसुवधुयरासारु मसुअदुवाउविरुवधसत्वाः
 नामथायसंपकागयिनः॥ यथायंसर्वउमृदीयग सानांमनूषवाजानांमाउसंः
 कावयिरुव्यं॥ यथावसर्वसत्त्वानिसुखयिगानिरुवनि॥ यथावसर्वविषयान्त्पीडिताथरुविष्यः

३३

निष्कषकाः॥ यथायवचकानियवाठिनानिरुविषयनियथासुखीरुनानियथावकविषयाअ
 नूपायासाथयथावसर्व विषयधर्माअनूपाया साथरुविषयि॥ अनूपादु
 नाथयथाथयथावकस नूपावाउःसुखसुखः विषयधुनदमीधर्माकाः॥ यदु
 सिमारुविषयि॥ आदिः पिनाथयथावसर्वदेव मारुवनाद्यादीपिनानिरुविः
 यनिदवेदेवपूरेथ॥ यथाववयंचत्वागमदावाउःसवलपविवावाअनकानिऊकगनसद

मासि सर्वे उच्यन्ते पणनाथ देव गभाः सन्निविता रुविष्यन्ति संयसादिनाथा ॥ यथा वा स्मार्क कायमदा
 नवी यव संवत्समं वसं उति मं रु विष्य नि ॥ यथा वा स्मार्क कायम उच्य शीथ सन्नी
 श्रुत्य सा मा रु या रि नि वि गति ॥ यथा च सर्व उच्यः क्षेपयः सृष्टि क्रारु विष्य नि यमः ३०
 लोय थ व द्र उ ना की भु म न यथ यथा च सर्व उच्य दी यग नानि सत्त्वानि सूखि नानि रु
 विष्य नि ना ना व ति म न रु विष्य नि ॥ यथा च सत्त्वानि न क क ल्य का टि नियुक्त भग सद्मा निष्पु चि त्वा न्य

दाया दानि सत्त्वानि न रु विष्य नि ॥ वदे श्रु ग व हिः सार्द्धं स स व क्ष न ग नानि रु विष्य नि प्र ना ग न ध न्य
 न रु यो स म्प यो ग्धा वि म रि सं र्ग त्वा न्ते ॥ न स र्ध म् न दि रु ग व ना न था ग न ना र्द ना सः
 न क न्य रु न म द्वा का व धा व सा वि द्वा न न ग क का टि नियुक्त भग सद्मा नि दि द्या नि
 व क न् व क था ग न स न ना ना वि द्वा न क स र्ध यं चा रि ह रि ग ल का टि नियुक्त भग सद्मा
 मा नि चै क स म्प कं व रु न व क रु का टि नियुक्त भग सद्मा नि व क व रु न या वि द्वा न न स रु ग व ना न थाः

कावृद्धं देवमावाच्युदगं नै॥ देवमानुषासु वसुधा कस्य वृद्धं स्थानिकं यन्ति॥ ॐ संसृज्युः सा रु
 मंसृज्युः वाङ् विरु वनसं पुकागयिष्यन्ति॥ ॐ वग्यं यथा हि धेनुलिसेदा वा
 ऊरुस्यं मंसृज्युः वाङ् कासांः लिङ्ग लिङ्गुपासका पामिकानामा वक्राकरुयाप ३८
 विपलिनं पविशत्तं पविश दंदधुयविदा वंगानि स्वस्य यनं करुयां॥ यथा च स
 उच्यते वाङ् का लिङ्ग लिङ्गुपासका पामिका जावकि नारवयूः॥ ॐ नृत्पीठि माधुन्यसर्गायाः

या सा १११ विरु १११ संसृज्युः सा रु मंसृज्युः वाङ् विरु वनसं पुकागयिष्यन्ति॥ ०॥
 ॥ ॐ यथा च स उच्यते वाङ् का लिङ्ग लिङ्गुपासका पामिका जावकि नारवयूः॥ ॐ नृत्पीठि माधुन्यसर्गायाः
 ऊरुस्यं मंसृज्युः वाङ् कासांः लिङ्ग लिङ्गुपासका पामिका जावकि नारवयूः॥ ॐ नृत्पीठि माधुन्यसर्गायाः
 कुरुकुरु दक्षिण जानुसः पुसां पृथिव्या पृथिव्या यनरुग वां रुनां ऊर्जिं यम
 नमस्तं वसाया मरिमुखं साव्या लिङ्गं धारि र्गवक मरिद्वयूः॥ ॐ नृत्पीठि माधुन्यसर्गायाः

नसदजाविचक्रनिविषयदगसूदिभासू॥ गृध्रनिरुखनुमिमंषमूदिनविमंषिदुष्टाश्चक्रसूदीयगः
 नानिविविक्कानिदवगलानि॥ नसर्वदवगला॥ गृध्र नुसूत्रमिदंषमूदिनाथ॥ क
 आवसंवीर्यवसंसरुक्षरुनव सावदवकायांविबद्धयिष ॥ १२
 नि॥ ॥ ॥ अथस्वसूचलाः ॥ वामदावाजारुगवका इतिकादिमानवंप्रपागाथा॥
 गुत्ताग्रयपापावरुक्षुअडुनयायाउदित्पपापाकदमवगन॥ सद्रुक्रमंषमादिताळूवागुमिचय

वरुकासासू॥ ॥ कचसंमाने॥ गविसे॥ यद्रुविरुवंगयत्वागेवचिंसनपीमिसुखसोमनस्वमसमन्वा
 गमरुत्तायूनवपिरुगवकं दिवमान्दावयकसुमेव वकिवमिता॥ अवकिमि
 लपकिमितीत्तायासनरुप कांभानिचीवमानिया वविस्तादकिभानिजान
 मधुलानिएथियांयकिष्टाया यनरुगवीरुमांज सिंपतमरुगवकमनः
 दवाचरु॥ ॥ ॥ वयंसपिरुगवंपरुदन्वलावामदावाजापकेकामहावाज॥ यंपंयंपंयंकनगव

विद्याया धर्मराधक सारिका ॥ सदानुवदा रुविद्यामि संवर्धनराधक साननाय यवि पालनीयवः
 मि ॥ ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥
 ना ॥ ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥
 सीवकपावृणदक्रिणं जानूम ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥
 नां उलिंपुन मरुग वनभन दवा च ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥

१३

रिक्ता वाच विरुपला धीय प निरुग भक सूर्य संद विष्णामि ॥ धावनी ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥
 रावं संराव यिष्णामि ॥ मरा ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥
 यानिका निचित्य दवं जनाः ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥
 रुविष्णु निविम विगानि ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥
 वृक यदवं जना नूय संद विष्णामि ॥ धावनी ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥ ॐ निस्रव ॥

पुष्परातात्मः स्रुतुवाः ४ कषां वृद्धसदुवावयुक्तकृगसमूतानामर्थयचिवंजसूदीपयचयन॥ न
 वक्रियमनेवायथन॥ ५ः भक्तानिवसत्यानिः संस्रवर्षुषलसामसंश्रुतेना
 उंग्रसाप्रविन्नानिकेयः हारुवयू॥ ७ः चिन्तां चहानस्रचंपमिसरुननइ १४
 रमवचजायू॥ संयतिरु यू॥ ८ः जानिमानूयदंवा पत्रिमिमेचयूथस्रचंपमिष्टः
 क्रीयू॥ सचंगामुक्तगसाथरुवयू॥ नानागित्यविधिह्राथनदियंसंयूक्तं सानकर्मरुयिषामिनस्रव

मरुगकसुदिक्रास्रुषांचधर्मेश्वनिकानां सत्यानामथाय॥ सचयदनकवउत्तमवगयीजकसि
 कसदकस्रुषांचधर्मेश्वनिकानां सत्यानामथाय॥ सचयदनकवउत्तमवगयीजकसि
 सानि॥ ३ः यथयामाथनस्राः प्रविषायकपीजस्रुच काशदेवगाडाध्यगमंया
 साम्यकसमी॥ ४ः दुदसामदाः पर्यन्तिचपुतिगा॥ ४ः व यामावाचनाएकागीविष
 द्रुकीयुनुवसंनगसंयनगीसयंचन्दनंसनगिलासगाचकंयुवस्रुच ३ः कर्मस्रुष्टस्रुषया॥ नवदंः

यद्यसुक्ताउसीवत्तागकगलं॥५॥निसमरुगनिप्रचनकुरुनयीषयन॥६॥मेमनपदेधुगुगन
 धाचलिसुयन॥०॥नयः॥था॥०॥सुक्तकवना॥नेहाग॥देसव॥धु॥०॥नुजा
 नतिलकउपसदप्रवतासिकः॥कुरुकुरुलविमसमति॥गीतमनिसन्निवप्रमवति॥१॥
 गिगिविसन्यसिभसादा॥०॥॥ममयनमधुलकंदुः॥सामुक्तपूयानिखपयन॥
 सुवधुहाधुपूयहाधुसद्वयनरूपयन॥॥वर्तमानिचपूयानिचस्त्रविमयन॥॥कन्या॥सुसवि

मान्यसाधुसाधायदक्षवित्थ॥१॥गुगुयंयथासिखं॥५॥रुयानिथाऊयन॥॥रुचजयमाकेयनान्दवी
 समसंरुतां॥॥आदगनिपदायय॥मयगकीनियाऊयन॥॥गीतावन्धंरु॥१॥रुयानिथाऊयन॥
 साधुसमास॥॥अननमः॥॥यदाकममसीमाय॥॥चंसमाय॥॥साय॥धद
 म॥॥अकनयनदिलिदिलिगि॥॥यसिखसादा॥०॥॥रुगवत॥१॥रुग॥१॥सासात्र
 ननरुजायनसाधुनिथाऊयन॥०॥॥नयथा॥॥सुगुरुविगुरुविगमावनिखादा॥०॥॥नकन

यः पातयन्नुचतुर्दिगन्तः स यो जायावासि कर्मरुयावदं ॥ यः सुसंक्रातुसंरुतागमचुरुय
 दावृक्षसमविगमस्वादा ॥ ० ॥ नमस्तस्मादा ॥ ० ॥ सागवसंरुताय स्वादा ॥ ० ॥
 सन्तमात्रमाय स्वादा ॥ ० ॥ नीलकण्ठाय स्वादा ॥ ॥ ० ॥ अयमाजिनाय दीर्घः ॥ ३
 यस्वादा ॥ ० ॥ दिमवसंरुता यस्वादा ॥ ० ॥ अनिमि षचक्राय स्वादा ॥ ० ॥ नमः
 रुगवर्षे वाक्त्राधेनमः सवस्वसिधुसक्तपदासंरुता नमस्तस्मादा ॥ ० ॥ चरुनस्त्रानकर्मदा

मस्य धर्मरुने कस्य लिङ्गावर्थाय कपांच धर्मवर्षिकानां सखकानामर्थयस्य मवादं गङ्गनतः
 सिद्धयदवगले सार्द्धं ॥ नमः च अमवानगवर्षानिः गमवाविदाय वा सर्वमायागः
 यममनंकविष्णुमि ॥ सचय दकसिकलूयनक्रुजः सयीजावाइः सप्रविनायकपी
 सां सर्वकार्यदशनाजपम नयिष्णुमि ॥ यथा नवां सुरुद्रवावकानां लिङ्गादिद्रुशु
 वासकापसिकानां जीविना नय दारुयन् ॥ संसात्रनिर्वाणं च युक्तिरुयूषा अवेवर्तिका यरुवयुवनरु

वायः समस्तम् ॥ ५४ ॥ ० ॥ ॐ ॥ अथ सूरुगवांसवसो दवो साधुकावजदाम् ॥ ५५ ॥ साधु
 साधु सवसतिमदादवीवक्र अनदिनीयवक्र अनसः स्वायपतिपत्ता ॥ यत्तयाहीः
 मानिमन्त्रायधीनिसंयुक्ता नि ॥ सावसवसमीमदा दवीरुगवतः ॥ दारिवन्दनं क
 त्वापकाकनिषर्त्तु ॥ ५६ ॥ ॥ अथ सत्तासायवाक वगकोटिभामदाय कथं ॥ ५७ ॥
 सवसमीमादादयनिस ॥ सवसतिमदादवीपूजनीयानदकया विस्मानासवसाकपूववदत्तामः

११

हायुषागिखयसमागिमाकनाउहावयववसिनी ॥ शुरुयलुंक्षययति ॥ कपादनतिद्वतिसर्वदवा
 समगमनां ॥ सववयनं लिदं डि काविमसं सत्तानां रा पन्दुवचनं शुभं ॥ स्वायथ्य
 दं ॥ सवविषयवज्जवज्जवज्जवमि दिगुसपिंगसपिंगसवः तिमूसमवीसिसनमिदिः
 गमति ॥ अगीमगीनसविकसवः वृत्तिविचिरीमविमिषा वयं साककं ककपियः
 सिद्धवकलीमसुखिकगविवयी ॥ अथ तिदक अपनिदकवृद्धि नमस्विमसि मदादवीपतिगटका नमस्का

वंसर्वसत्त्वानां वृद्धिं वयं विदुः नारदं वनुविद्यामसि च नुगा कृत्वा कुरुयिट्क कात्यायिषु ॥ ० ॥
 नयथा ॥ ० ॥ सदायुः कवादिनि दितिमिति विचरुमम विचरुममो यासर्वसः
 त्वानां चरुगवत्यादयाः सवसः स्यान्नूत्तमवतकयावः कयवदिदितिमितिदि
 लिच्छावाद्यामिमदादवीवृद्ध सस्यनधर्मसस्यनसंघ सस्यनरुनुसस्यनवय
 धसस्यनयसाकसस्यवादिनः सनिकेतनं सांसस्यवचनन आवाद्यामिमदादवी ॥ दितिदितिः

१८

मिति विचरुनुममसन्तिनामायासर्वसत्त्वानां ॥ ० ॥ नमारुगवत्येसवस्येसिथांनुमनुयदाः
 सादा ॥ ० ॥ अथाचार्य्या कसकोटिनामदावाच सः ॥ सवसनीमदादवी
 मिमादिगाथारिवरुसावीनः ॥ ० ॥ सवसनीमदादवी
 सारुससावृवका ॥ यामारुग मयवकासारादवीमद वगनवस्यनुसाकः ॥
 नानाविचिगुगुधसमसंयुता ॥ सवसनीनामविगासनगायुः ॥ साविमसहानगुलेविनी

शुभनाजाविचित्रवत्सुकुसुमदर्शननायास्वायामिनांपुत्रवत्सुकुलोविमिष्टे॥सिद्धिकनकैयवत्सुकुनाये॥
 पुष्पसुन्दरायेगुणकनये॥विम
 नाये॥गुणायनायेगुरुद्वगना
 विमलपुष्पायेरुनाकनयेसुः
 मलिकाङ्कसमसंकेतायेपुष्पगंगा॥आपदगर्जनायेमनाह्वयनायेसुदस्यनायेगङ्गीवपुहायसमः

१२

त्रिनाये॥कार्यागसाधनकनयेसुसचनयेदवासुवेवरिपूडिनाये॥सर्वसुवासुवगलासयवः
 विनायेरुगुणेषु॥सदाः
 पुष्पसुन्दरायेगुणेषु॥सर्व
 वरुणसर्वसन्धेयः
 प० ७ वृत्तिः॥सर्वोत्पिपायधनधान्यसारीसिद्धिवयाप्राप्तिगिवासुदावमिति॥ ॐ ॥ ॐ ॥

सवर्गपुत्रासाकमसूनुवाऊसवसमीदवीयविवर्तनामादमः॥ ॐ ॥ अथखनूतीनदादः
 वीरुगवन्कंपंममोदका यन॥ ॐ ॥ अद मयिरुदकरुगवन्नगवनीपीः
 मदादवीकसधर्मका म कसेरिकावीसुवर्गा कविमामि॥ यदिदंवीववयिषु ६०
 पागुगयनासनानपय यरुपययविरुवैवने (थापकवलेयथासधर्मका म
 कः॥ सवर्गपुत्रासाकमसूनुवाऊसवसमीदवीयविवर्तनामादमः॥ अथखनूतीनदादः

बाह्मिदिवाचनमिनामयिष्यति॥ ॐ नथसवर्गपुत्रासाकमसूनुवाऊसवसमीदवीयविवर्तनामादमः॥
 नानिउपनामयिष्यति॥ यनांस वर्गपुत्रासाकमः॥ सुदुवाऊसवसमीदवीयविवर्तनामादमः॥
 वयुक्कगसमूनानांमत्वा नाम थीयविवर्तनामादमः॥ सुदुवाऊसवसमीदवीयविवर्तनामादमः॥
 वानवीसुमि॥ सत्वा॥ सवर्गपुत्रासाकमसूनुवाऊसवसमीदवीयविवर्तनामादमः॥
 सकादिनियुक्तगससूनुवाऊसवसमीदवीयविवर्तनामादमः॥ नानिउपनामयिष्यति॥ यनांस वर्गपुत्रासाकमः॥ सुदुवाऊसवसमीदवीयविवर्तनामादमः॥

कर्कषयकसूरिद्वयपदरुधनु॥ सत्ताधमनूयसूखायधाननसूखितारुधयू॥ नथागनसमवः
 धानमगाधेरुधयू॥ अनागरुधनिधानरुधासमवः
 वनवकनिर्यकथानियमसाः कइरवान्यनसमः
 लकसमयुधसोगववेधुयकः नकनियिसूवधुकोशः
 नाइरुसमयसूद॥ यरुधियामदादयासयावृगलमूलसववृध॥ येनेनदियांयांदिगंसत्ता

६१

नांविदवकियांयांदिगंसत्ता नवसकयनि॥ यांयांदिगंडपसंकनदि॥ कस्याकसांदिगधनकानिसः
 लकाटिनियुनगमसदजाः शिसवसूखायधाननः
 सतांयपनिसप्यन्क॥ अलनवापाननवाधनन
 लिसूकवडवेधुयगंखगि लापवातजाकनूपवड
 पकवमसमृद्धानिसत्तानिरुविषनिधियादकाः यराधन॥ कसवकथागनसपूजाकर्कवागनाध

पुष्पाश्च पुष्पाश्च दीपाश्च दानाः ॥ शिवादेवास्मि च त्वानामध्वयम् ॥ नमस्तस्मै नमस्तस्मै ॥
 दीपं दारुणं ॥ वसवि दामि ॥ कुरु दामि ॥ नमस्तस्मै ॥ वसवि दामि ॥
 वसाधव ॥ यद्विनाशानि ॥ च दवस्तु सदा रुसमस्तु ॥ विनाशस्तु सदा रुसमस्तु ॥
 स्थानि सुविशुद्धा ॥ सुव ॥ सुविशुद्धा ॥ सुव ॥ सुविशुद्धा ॥ सुव ॥
 नमः ॥ नमस्तस्मै ॥ नमस्तस्मै ॥ नमस्तस्मै ॥ नमस्तस्मै ॥ नमस्तस्मै ॥

दीपानां पुष्पाश्च दानाः ॥ नमस्तस्मै नमस्तस्मै ॥ नमस्तस्मै नमस्तस्मै ॥
 नमस्तस्मै नमस्तस्मै ॥ नमस्तस्मै नमस्तस्मै ॥ नमस्तस्मै नमस्तस्मै ॥
 नमस्तस्मै नमस्तस्मै ॥ नमस्तस्मै नमस्तस्मै ॥ नमस्तस्मै नमस्तस्मै ॥
 नमस्तस्मै नमस्तस्मै ॥ नमस्तस्मै नमस्तस्मै ॥ नमस्तस्मै नमस्तस्मै ॥
 नमस्तस्मै नमस्तस्मै ॥ नमस्तस्मै नमस्तस्मै ॥ नमस्तस्मै नमस्तस्मै ॥

63

नमस्तु त्वमां विद्याय उवाच ॥ ॐ यं भविष्या स नृवाच ॥ स्वायत्तं दं ॥ पतिपुत्रवधममन्तगनः ॥
मदाकायप्रियाय लस ॥ तथैव स नानुययुः ॥ आशानवमितामदाशानिताः ॥
मदाकायप्रियाय लस ॥ विंशदीनाः ॥ समयाः ॥ पासनाः ॥ समुद्राः ॥ विंशदीनाः ॥
मनुष्याः ॥ शास्त्राः ॥ गणितः ॥ द्वाविंशदीनाः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
मनुष्याः ॥ शास्त्राः ॥ गणितः ॥ द्वाविंशदीनाः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥

68



दमगिबिक न्य व वायाजक सवा उप संकमि यमि यना यं सवर्षु पला सा रु स ४ सु व नु वा जा वि रु च
 न संयुका गयि धि ति ॥ य व य न
 रु क का य ग रु स ध र्म स न पु रु
 मं स व र्षु प ला सा रु स मं स व र्षु न्यः
 न रु ग व न्दु रा ए धि वी दे व ना न पु ए धि वी य द ए य ग नि ष्या मि ॥ अ न ध र्म स न ग ना सि जू द ग

७३

मान ना स रु व ना रु ना (ऊ न च रु स ध र्म स न क स रि क्रा ४ पा द रु सो पु मि सं द वि ष्या मि ॥ आ त्मा नं चाः
 न न ध र्म श व (न न ध र्माः
 यि ष्या मि ॥ आ त्मा नं च रं
 व रि था ऊ न स द्वा मिः
 व व स न या व द्वा ऊ म यं ए धि वी न व मू ण द्वा य ए धि वी व स न वि व द्वा यि ष्या मि ॥ सं य मि मा न वि ष्या

मियविप्रययिष्यामि॥उपनिषत्संसदयय्यनयधिवीनसंतउपादायययिधीवीमकुसंसिः
 नयधिवीनसनसदः
 सिंजम्बुदीपनानारुः
 यन्नि॥सर्वानामवनरु
 विषयनि॥गन्धर्वकवानिस्त्रिभुवनानिआस्वादनीयानिदग्नीयकवानिमहाकवानिचरु

८१

यिष्यन्ति॥नचसत्वास्तानिपानकाजनानिनानाविधानिउपरुक्ता॥आयुर्वेदसर्वलुष्टियासिविः
 क्यिष्यन्ति॥रुजावसवर्षुचूः
 मानिअनकानिकारगनसद
 सकवभोयानिकभानिकयिः
 पश्चिमययविषयनिरुहिकयस्थिरयद्वयवमलीययवद्वजनाकीलुननूयययविषयनि॥स

चंडसुदीपवस्तुनिसुखितानिदिविषयनिनाविद्विषांवरिसनूरुविषयनि॥नानिसत्ताः
 निमज्जावस्तवर्षुपसमन्ताः गतानिचरुविषयनि॥ जस्यसुवर्षुपसमरुम
 स्पसुर्नुवाजस्यार्थेया॥रुषांसुर्नु म्पुषासकापासिकानांधः
 मासगतानामनिकसूपसंकुभः यश॥जस्यसुवर्षुपसम रुमसुसुर्नुवाजस्यार्थ
 या॥रुषांसुर्नुवाजस्यार्थेया॥रुषांसुर्नुवाजस्यार्थेया॥रुषांसुर्नुवाजस्यार्थेया॥रुषांसुर्नुवाजस्यार्थेया॥

८८

संकनित्वातानिपसत्तवि रुनिसर्वसत्त्वानामर्थेयदितायसुखायमान्धर्मरुगलकानध्वपययु॥जः
 स्पसुवर्षुपसमरुमस्यः सुर्नुवाजस्यार्थेया॥रुषांसुर्नुवाजस्यार्थेया॥रुषांसुर्नुवाजस्यार्थेया॥रुषांसुर्नुवाजस्यार्थेया॥रुषांसुर्नुवाजस्यार्थेया॥
 मांअकसिनवाचरुविषा मि॥रुनरुदनेरुगवंधा जस्यसुवर्षुपसमरुमस्यः
 संकनित्वातानिपसत्तवि रुनिसर्वसत्त्वानामर्थेयदितायसुखायमान्धर्मरुगलकानध्वपययु॥जः
 रुगवन्दुतायापुथिवीदवतायांजुंजुननधर्मरुगवसुनसन्निपायांसदाकजावस्तवीर्यरुमवगप

मित्तवायां॥ अयं सदा एधि वीस फया उ न सा द सि का यां उ नू द्वा पा म द ना ए धि वी न स न वि व रु यि ष्य रि ॥
 उ उ सि न वा च म द ए धि वी रु वि ष्य रि ॥ ० ॥ ॐ मा नि च द न रु ग व न र्व स र्वा
 नि ए धि वी स त्वि शि ता नि वृ द्धि स नू रि वे प स तां च गे मि ष्य नि स दा नि च रु विः ६८
 ष नि स दा नि च रु त्वा स त्वा नि ए धि वी ग मा निः ना ना प र ग प त्रि क्षा मा नू प र ग
 म नि स र्वा नि च नू रु वि ष्य नि ॥ मा नि च स र्व गि ना ना वि चि त्वा न पा न रु व रु ग य ना स न व स न

रु व न वि मा ना घा न न दी प क वि न्धू त्वा उ द न ज ग वी नि ॐ मा न्य व दू पा नि ता ना वि क्षा नू प क व न स र्वा
 नि ए धि वी स त्वि शि ता नि ए धिः वां पा द रु मा नि ए धि वांः पु त्रि क्षि ता नि उ प रु उ न्दु ॥ रु नः
 रु द न रु ग व न रु न स र्व स र्वे त्वा कं रु रु ना रु रु द्वा ॥ अ व ग्ध म यं स व रु प र ग
 सा रु नः स रु न्दु वा रु सः रु त्वा यो रु व स स रु रु वा रु व रु रु द्वा मा न यि रु व रुः
 य दा च रु द न रु ग वं रु स र्वे स त्वा ना ना क स र्वा ना ना रु द रु नि रु म य रु पां व र्म रु ग ना ना स र्वा सं य स

क्षया॥ उपसंयुक्तमयसंस्वरूपं सारुमं चरुं चन्द्रमाङ्गं चैव ॥ सुखाचयूनवतगसत्वाः स्वकस्वकवृः
 नानाकृतपुष्टदयामयूषं विद्याः स्वगुदगताः यः वसवसेवकधययूः॥ नमोऽर्थाः
 स्मार्तिप्रययवतः॥ शुक्रः॥ अविनास्मार्तिप्रययूः धस्वः॥ यविष्टदीनः॥ कनः २०
 धर्मयवत्तननवकायकि मूकासु॥ निर्युत्थानि समसाकयकविषयायविमूकाः
 अस्मार्तिः॥ अन्ननधर्मयवत्तनानागकैश्च न्यकैषुकाकिगनसदसुपुष्टवसन्ध्यापयकियविष्ट

दीनारुविषयिनि॥ कनवनानागुदगतास्त्वान्नापांसत्वा नीलः॥ सुवर्णपुष्पासारुमात्तुं चन्द्रमाङ्गाः
 दन्तगजकदस्त्रानमय्याया चययूवन्तगजकयथि वरुमाचकयुर्वयागम्वा॥ अः
 नमश्चुष्यादिकामयिभ धामन्तगजकयदमयिः सुवर्णपुष्पासारुमात्तुं चन्द्रमाः
 आदन्तपांसत्वा नांसंथाव ययूवन्तगः॥ सुवर्णपुष्पा सारुमस्यसुवर्णचन्द्रमाङ्गस्यनाम
 धयमयिपयपांसत्वा नांसंथावययूः॥ ययुवन्तुदन्तरगवंस्तानिनाविधानिसत्वाविषययुष्टि

दीपदामपू॥ ॐ नाना वं वृषानि नाना विधानि नाना कुरुनि पत्रस्य प्रजा वाचयय ॥ संभवा वययुध कथा
 समन्तं च वृषायेन ॥ सर्वे
 सिग्धरुनाथ ॥ सर्वेषां सत्त्वा
 निसर्वापि कत्रत्वा निरुयिः
 सत्त्वानि निसत्त्वानि मदा धनानि मदा रोगानि च दाना विमूकानि च रु विषयानि विषय त्वेषु अरिपुस

२१

त्वानि रुविषयानि ॥ ० ॥ चतुर्मुखं गवान्दं एधि वीद वना भरुद वाचरु ॥ ० ॥ थकचित् एधि वीद वः
 रु सत्त्वा ॐ रु ४ सूवर्षु परा
 मनूय का अविता कय विं
 स्य न्क ॥ थकचित् एधि वीः
 थय ॥ नानि रु नानि सत्त्वानि संकुर्वन् ॥ अन्क गच कपगा कम्ब चक इष्य म्बा समलं क्क गानि च द वना रुः

नानि॥ नृपसफसूकामावयवपूदवतिकाथपूतसवत्तमयानिदिव्यानिविमानानिसर्वोसंकात्रसमसंस्तुता
 निसखास्यनि॥ नृसत्वाः०००॥ कामनूयासाकाशविता नृपसफवत्तमथपूदिव्याविमान
 पूयपत्तननृचेकेकसिंहे धिदवकसफवत्तमथदि अविमानसफवा ननूपयत्तन॥ तर
 अविंसा निदिव्यानि सखाः नियसूनरुविषयनि॥३॥ ०॥ नृवकदृढाएथिवीदम
 नारुगवन्कसनदवाचन॥ ०॥ नृनादंरुदन्कनगवन्दृढाएथिवीदवसागस्यधर्मरासकस्यहिक्का

धर्मासनगतस्यनृपूएथिवीपदगषावसिषासि॥ अदृग्यमाननामरावननस्यधर्मरासकस्यहिक्काः
 नृरुमाजनपादतलोपनिमं॥ रुत्रिषामि॥ यथाययंसु वधुयरासासुम४सुगुदुवाः
 ऊरुषांवदसदसाववृफक गतमूतानां सत्त्वानामथ यविबंजमृदयिपत्रप्रन॥ न
 यक्रियमनदोपयन॥ सत्वा निधमंसुवधुयरासासु मंसुगुदुवाउंशुधसू४॥ अत्रन
 गनध्वन्यनकानिकलेकाटीनियुगगतसरुमागिबुचिन्सानिदिवमानूयाकानिसूखानिप्रनूरुवयू४॥

यदा नाउकृत्वा उयसं कसिष्यामि॥ अदृग्मा ननात्मलावननस्य धर्मलाभकस्य लिङ्गावक्रां कविष्यामि॥ य
 त्रिदासं पविशदं पविष्यामि नंदधु
 कृषां च सर्वेषां धर्मशिवनिका
 वल्लुपलासारुमात्सु गुरुवाडा
 गुरुकपदमपि सुवर्णपुलासारुमात्सु गुरुवाडकवाधिसत्त्वनामधेयमपि गुरुवत्॥ उद्धृदीनं वाच

कथथा गननामधेयं वा अन्तर्गच्छासु सुवर्णपुलासारुमस्य सुगुरुवाकस्य नामधेयं गुरुवत्॥ उद्धृदीनाः
 वागेषां सर्वेषां मावक्रां कवि
 पविदासं गान्तिस्वस्य यनं च
 नाक्षं कृषां च गामानां कृषां च
 विष्यामि पविदासं पविशदं पविष्यामि नंदधुपविदासं गान्तिस्वस्य यनं कविष्यामि॥ नत्तन

मनदुःखना॥ सर्वधर्माः यत्रिहाराः॥ सर्वधर्माः अत्रवृद्धाः॥ यावन्तश्च सर्वधर्माः॥ यथाच सर्वधर्माः॥ संसृताः
 यत्र सर्वधर्माः॥ सम्यग्ज्ञानाः॥ सर्वधर्माः॥ सर्वधर्माः यदं॥ यदन्तरं यत्पुण्यं॥ अविद्या
 मरुदन्तरं गवन्तानां वरुणाः॥ अविद्याज्ञानां साकः॥ अविद्याज्ञानं स्वयं॥ अविद्या
 मरुदन्तरं गवन्तश्च धर्माः॥ पूरुणविषयः॥ यत्र रुकाः॥ यथाच मरुदन्तरं गवन्तः सर्वः
 धर्माः॥ सम्यग्ज्ञानाः॥ सम्यग्ज्ञानाः॥ सम्यग्ज्ञानाः॥ सम्यग्ज्ञानाः॥ सम्यग्ज्ञानाः॥ सम्यग्ज्ञानाः॥ सम्यग्ज्ञानाः॥

वंसंजयस्य मदायकः॥ मनायकः॥ संजयः॥ अग्निनामः॥ यत्र सम्यग्ज्ञानादिः॥ अदन्तरं गवन्तः धर्माः॥ मरुदन्तरं
 कावाः॥ अविद्याज्ञानाः॥ यत्रिहाराः॥ नमः॥ संजयः॥ यत्रिहाराः॥ यत्रिहाराः॥ यत्रिहाराः॥ यत्रिहाराः॥ यत्रिहाराः॥ यत्रिहाराः॥

सुखं नुवाञ्जुसां वृद्धसदसावद्वक्त्रगजसूतानां सत्त्वानामर्थयचिबं ऊर्ध्वदीपवृत्रत॥ नचक्रियमनन्ध
पथम् ॥ सत्त्वानामर्थयचिबं ऊर्ध्वदीपवृत्रत॥ नचक्रियमनन्ध
रुयुः यस्तवन्धुवयुवपः ॥ मिमिन्वपुष्यसुधं पविः ॥ गृहीया ॥ अनागन्धवन्धनं तं
केकल्यकाटिनियुक्तगन्धः ॥ माध्वचिन्तात्रिदिवमान् ॥ यकानिसखाचनूरुवयुः ॥
तथागन्धसमवधानगन्धधुवयुवतागन्धवन्धनूरुनां सम्यक्स्थविमरिसंवृत्रत॥ सर्वनवकक्रियेत्त

नियमसाकद्वृत्तानिवाचनसामृद्धिज्ञानिरुवयुविति ॥ ॐ ॥ ॐ निसुवर्णपरासाकमः ॥
नुवाञ्जुसां वृद्धसदसावद्वक्त्रगजसूतानां सत्त्वानामर्थयचिबं ऊर्ध्वदीपवृत्रत॥ नचक्रियमनन्ध
गुहसागववेद्यकनकमि ॥ विसुवर्ण ॥ ॐ ॥ ॐ निसुवर्णपरासाकमः ॥
स्यादन्धः सम्यक्स्थविमरिसंवृत्रत॥ न ॥ मरुत्तानकगुहकाटिय ॥ नसद्वृत्तसमसंकनगन्धवन्धनूरुनां
गायत्र्यनन्धधुवयुवतागन्धवन्धनूरुनां सम्यक्स्थविमरिसंवृत्रत॥ सर्वनवकक्रियेत्त

उत्तिमासाकयासतिवृक्षेयपविष्टया॥	तुनं॥सुमयुववृक्षदवगानां	समीग्वन॥	कृत्वात्वंसंगयानां	
वृक्षेत्तयासाकंसंगयं॥	क	थंमनूषसंरुमावाजादवः	सपाचम॥	यदिदमानवसाः
कजायनयवृवंनय॥	कः	थंदवमनूषावृमाजत्वंच	कविष्यति॥	नुवंदिसाकयासति
वृक्षेत्तयापविष्टया॥	सः	वसूवृक्षसाकपासाः	निदावृवीक॥	यदिदसाकयास
रिथदिममपृष्ठिका॥	सर्वसत्त्वदिनार्थयवृक्षदंगामुमुरुमं॥	नावीनां	संरुवंवृक्षयू	सादंसनूजासय॥

त८

दुरुनायनमाजानारुवनिविषयपूवा॥	दवृद्धा	समविद्वानमाहुः	कृत्वापवृक्षति॥	पूर्वसमिद्धिनादवृषः
याजृक्षीयययन॥	किंचापि	मानवसाकजायनमृय	ननय॥	अपिचवदवसंरुमा
दवपूवृ॥	सउचन॥	नयसिं		नयस्यदि॥
नानिर्मितामनूषवृष॥	अ	वसूवृक्षसाकपासाः		नानिवावक॥
सत्त्वपदार्थसूत्रासय॥	मनूषावाधदवा	वानवाधिव॥	वाकसावाधवृक्ष	साइरुगानानिवावक॥

यदास्यपुनरुक्तमजाद्वयं विवयस्त्रिंशं ॥ न स च दवमाज्यवमनिचयवस्यमं ॥ अक्षमिकास्यं वा
 जात्रधर्मपुनरागिन् ॥ न चित्रमस्यं वाजादवना काययिष्यति ॥ दवनामं यविः
 कायादिवथास्यनिनश्चि ॥ गमुनास्यधर्मस्यवि वयं यरुहविष्यति ॥ साथानां क
 लहानां वथागनां वसमरु वशापुनश्चित्रदवच्यः उपश्चित्रदवसा ॥ पुन्यः
 नवडासुं सनप ॥ गायकमुच्छति ॥ ७०० विथागं पाप्राणिगामायाधसूननवा ॥ पीयरायाविथा ॥ गवा

700

पीयकइदिनाथवा ॥ उकापागारुविष्यनिपुनिसूर्यास्तथेवच ॥ पत्रचकुरयं चापि इक्षं दक्षक रगं ॥ ३
 पिथामास्यमीयनः पियः मुगर्जकवच ॥ सूनारी पुंयियास्यसंकं दारुयावित्राः
 धिन ॥ यवस्यं दविष्यनि कूरुगगधनानिच ॥ द गदगदनिष्यनिगमुमचयः
 वस्यं विवादाः कलदागाः सारुवनिविषयपुच ॥ गद ॥ यतिगतवाधुयाधिरु
 वनिदावृक्ष ॥ अक्षमिकारुविष्यनि दक्षिणीयास्तदन्तं ॥ अक्षमा ॥ यविषदथेव रुवन्सायधामि ॥

का॥ अथार्थिक उन्नयनार्थं विष्णोर्नित्यं नमस्कृत्य ॥ अथार्थिक
 उन्नयनार्थं अथार्थिक उन्नयनार्थं ॥ अथार्थिक उन्नयनार्थं ॥ अथार्थिक
 विनयार्थं अथार्थिक उन्नयनार्थं ॥ अथार्थिक उन्नयनार्थं ॥ अथार्थिक
 अथार्थिक उन्नयनार्थं ॥ अथार्थिक उन्नयनार्थं ॥ अथार्थिक उन्नयनार्थं ॥ अथार्थिक
 वं ॥ अथार्थिक उन्नयनार्थं ॥ अथार्थिक उन्नयनार्थं ॥ अथार्थिक उन्नयनार्थं ॥ अथार्थिक

१०१

हा निर्वर्तिन्युत्तमविषयपिदि ॥ यदीनाथरविषयनित्यं कदाचन ॥ पूर्ववत्स्थानि रक्तानि
 अदास्यवतीनि च ॥ अथार्थिक उन्नयनार्थं ॥ अथार्थिक उन्नयनार्थं ॥ अथार्थिक उन्नयनार्थं ॥ अथार्थिक
 नावसि गच्छ वंद्यं संकथयत ॥ अथार्थिक उन्नयनार्थं ॥ अथार्थिक उन्नयनार्थं ॥ अथार्थिक उन्नयनार्थं ॥ अथार्थिक
 विषयनि रक्तानि ॥ अथार्थिक उन्नयनार्थं ॥ अथार्थिक उन्नयनार्थं ॥ अथार्थिक उन्नयनार्थं ॥ अथार्थिक
 चवीर्यस्मान्न च न रक्तानि ॥ अथार्थिक उन्नयनार्थं ॥ अथार्थिक उन्नयनार्थं ॥ अथार्थिक उन्नयनार्थं ॥ अथार्थिक

कौनानावाविषयीतिहा॥यदाहविषयानि न कृणानानावाकसंरुवा॥	अधर्मिकारुवदाधर्मस्यकसं	
सिंहशाकुशुकविबुधनि	सर्वेसाधनसंश्रुनेः	कदीदगादाषारुवनिविषय
पूवायदापकसिहावाजा	इष्टुनंसमयकृता॥यनः	कार्यसवाजावेदवन्दुहिवधिः १०२
सिंहभाननकभानिवाउत्वं	इष्टुनंसमयकृता॥सः	कृताभापययनसवदवसूवा
सयइष्टुननगकनियुक्तनिर्ययनकपूवाययनिगदवहवनायुपाकयनिइष्टुनात्॥यदायूय		

कृतावाइष्टुनंविषयसिंहं॥यिरुमांदववाजानांरुवगसाधनाधिक॥नगरुवनिपूवत्वंनवाज		
त्वंकृनंरुवग॥यदायिसरु	नकार्यभावेनयिसूदा	ब्रह्मे॥नसादविष्टुनावाजाद
वन्दुमनूजासय॥इष्टुगा	नांममनाथयिसूकगानां	एवकृक॥दृष्टाधर्मिकंसत्वा
नांविषाकजनकान्य॥स	कृनइष्टुगानांचकमेगांः	यएथगिध॥विषाकरुत्तद
गार्थकरावाजादिषाचरु॥अविष्टिमांदवगमांदवन्दुवनमादिगा॥आत्मनार्थयवाथायधमार्थविषय		

सदा॥ दमनार्थयमाद्युष्मगयापजनसवा॥ लुङ् चैडी विमंदायं धर्मार्थविषयसवा॥ सादा धर्मसपत्नित्वाः
 जानन्तं समुपश्रुतं॥ न चान्य
 स्मादृग्भावाविषयसिं
 सदाप्रवृत्ता॥ यथाभाथसमस्त्यः
 संग्रहकोनायनिगुह॥ ह
 योरुवनिगाथनिविषय
 सिंसदोवृत्तेविसृप्यनचमडाः
 दुग्गजैविममदासय॥ एक
 यन्निदवन्दाविसृप्यन
 सत्तासयं॥ विषमाः सर्वराजः
 निविषमसदि॥ न सादापान्नयं स्यात्कुर्यादसकपायकाविषां॥ धर्मसवालयदाहंमासाधर्मसमाचन

१०३

रुजीविमंचयविरुचसायायपनिगारुवत॥ वन्धुजनयत्रजनपूचसर्वमाद्युजनपूच॥ एकपक्रारुवडाका
 मायकपनिगारुवत॥ नैसाव्य
 मापत्रयकयगसाधमिः
 कान्तय॥ दधियिष्यनिद
 वन्दासुयत्रिं गुरुवनेष्व॥ ऊः
 नृदीपनथासाकंपूनाधः
 मोत्तकान्तया॥ धम्मसगाः
 सनमादुंसूकनेसायकजनं॥
 सूरुजनवमाजानं॥ दः
 एषयनजनं॥ दवेदवसूने
 १पूर्वुकभानिचसूमासयं॥ धर्मसवालयदाहंमासाधर्मसमाचन

न माधियं॥सम्यग्वदन्ति न कदापि चन्द्रसूर्येणैव वा॥कासन वायवा दान्ति कासेवेवंपदधमि॥सूरिकं		
कृतेन मादुनथायवसमासय॥	अममामययुधमयुधुग	तिसुमलयं॥गसाडाकंन
वयमि॥पियंजीवनजासन॥	आवलयद्वमवत्तंयन	साक॥सुखीरवक॥धमिः 704
कीजनयसाकांयागुधे॥समसं	कम॥सुनितंमवकुरुदां	सदायायविवक्तिन॥धम
ममलयडादुधमिसमनूभासयक॥सुदमसुययसत्तान्दुधकचनिवावयत्॥सूरिकंरवकमादुधमी		

वरुवकनय॥यथानूयंपकृन्नदमनपायकाविभां॥यगसीरवकमाजासुखंयालयकयुंति॥३		
॥ॐॐॐॐ॥ॐनिसुवधुय	रासाकमसुवधुय	धनुसमयंनामयाऊमाः
सुयविंवेकमुयादग॥०॥	॥ॐॐॐॐ॥ससागमा	यकवसंधानदायदाव
दुवनयचकवकी॥चलावि	द्विपानिसवत्तपूधुनिः	यतितापूर्वतिनषमसंः
॥नवास्ति॥दधुपियंसनायंपूर्वचमचनचरकसासीत्॥गंधर्माकायंपविमार्गभाधिययडाविः		

मंरुक्रमनककस्यं॥यथापूच्यकल्पपूः॥चिन्मिथपूवत्तगिखिससूगरसगामभयविनिर्द		
ससूगरससू॥ससंरुवा	नासवरुववाजासचक	वहीचरुदीयः॥१॥
ससूडयचनसदीयगासू॥	डिनसुधासायचवाक	नीय॥सूधावरुवकदवा
जकुंजलःसपानेयवृद्धगुणं	चयत्वावत्ताचयंपगः	मिधसंरुगकंरुिगसूः
यसत्वाचविवाचमानं॥एकाभयनमिमसूगवाजं॥सप्रादिवृद्धयवरुववाजापीनिसूटंसच		

१०५

गवीरमस॥अरिनिष्कुमवाउकलानिद्वयउयसंकमीआवकसंयमगुं॥कथाकिपूऊंडिनः		
आवकानांवत्ताचयपृच्छमि	धर्मसंरुगकं॥कदाहि	रिद्वयिदचायसंयः
वत्ताचयानामगुणसिक्तय॥	कनाकववत्ताचयादि	रिद्वयनगुणदकवस
नियधु॥विचिनुवत्तं॥सूः	सूगवाजंसाधामानःसू	खसंनिधधु॥१॥१॥
वाउसूगदकवभा॥वत्ताचयरिद्वयसधर्मसंरुगकधावनगुणदकवसंनिधधुंरुनसन्नीधिय		

या इत्यनेन ॥ च पातु तत्त्वोचय धर्मो गल का धा प्रणिगृहीत निन स्य ॥ गा व वं सूर्य पुरा सा रु म सूर्य		
न तं सूर्य नु वा उं स र मं का गः	य न ॥ य न्द्रि त्वं पा दो व न	ना च य स स सं रु वा वा उ
रू दं व वी ति ॥ द ग दि म पू र्णु	म गो क व क स व र्णु प र	सा रु म स व न तं अ धि वा
म यि स व र ना च य ध वा रू थ	न स्ये व स सं रु व स्य ॥ सः	व न्द्रि सा द्द्रि क सा क थ
नो य द्द्रि ना व व रू द व ना ॥ व स धा य द ग य व म वि गि र्ध व त्ना द क गं व उ सा म्भु सि क ॥ पू षा व की		

१०३

धु ध व र्णो स रू त्वा न रा स न पा ण र दान व न्द्र ॥ स म लं रु मं वा उ न दा स नं च ॥ रु र्णे ध उ य ४ स द्द्रु स न के		
न ना वि चि र्णे व व पू ष व न्द्र ॥	अ रू णा वि य वा उ न दा स	नं च द वा थ ना गो थ स कि
त्त ना थ य क्का थ य क्क नु स द्द्रा व	ना थ दि र्णे थ मा न्द्रा व व	पू ष व ये व र्णा व की थ किः
न दा स नं च ॥ अ र्चि नि यानी य	न स र स द्द्रु स क्का र्णी या यः	आ ग ना द व रु वा य का मा अ
रि नि र्धु मि त्त् व न ना च यं दि ॥ अ रू णा वि य र्णे दि व सा व पू ष ॥ सा च पि न त्ना च य ध र्म र्ण म क ॥ उ रू नुः		

गुरुः शुचि वस्तु कुरु ॥ उय संकुमि त्वा न दा स नं दि कृ ता अति त्वत् न म स्य क य ॥ द व न्द द वा नि च द वः
 नि नि मा न्दा व व पृ ष्ठ प व र्ष यः नि ॥ अ वि नि या र्ह यः ग न स द स नि प द द यः
 नि नि क न अ न्नी क ॥ अ रिः त्र दि त्वा च स सं नि ष (भु) य त्ता च या रि क ॥ स व र्म १००
 रा म क ॥ अ न्नी स त्रि त्वा द ग स दि ग्मा स अ वि नि या व द स द स का टि य ॥ स र्च व
 स त्वा न कृ पां अ नि त्वा का वृ थ चि रं स म्पा द य त्ता ॥ बा ह्म अ न स्या पि स सं र व स्य प का गि नं स र्चः

मि दं न द न्ना ॥ कृ ता अति त्वत् नि दि त्व वा ज्ञा न का य वा वा म न्नी मा दि न न ॥ स द्ध र्म व ग्मा य प
 म क न न्नी पी नि स द्ध र्म स व द व का य ॥ अ न्नी स स व स य पू ज नार्थ स सं र
 वा दा ज न द न्ना प्र मी ण दि त्व वि न्ना म नि वा ज व त्तं स त्वा र्थ द न्ना ॥ य नि दि च का
 य ॥ व र्ष च्छु अ य न्द अ न्नी दी प स स प व त्त नि व र्ण यः ता नि ॥ य च द स त्वा र्च न
 अ न्नी दी प स रि वा च र्ण य नि म द्वा व ना य ॥ व र्ष च्छु दी प पृ ष्ठ व र्षि ना नि स द्वा नि व त्त नि न द न्ना

॥ कयुनदावाववकुसुनि ॥ अन्तान्कानिवसन्ननिचेवद्वुचरंवाउससंरुवथत्रत्तायवर्ष
 सलउम्दीपा ॥ चत्ताविदीः ॥ वानिसयत्तयूधुनिका ॥ नयोंवत्तगिखिसागासः
 भा ॥ अहं चसगाचमनिरुथाः ॥ गतः ॥ ससंरुवानामवरु ॥ वनाजा ॥ यनदमत्यकः
 वसन्धगतदा ॥ चत्ताविदीपा ॥ निसत्तयूधुज्ज्वासा ॥ सीत्तरथागमयत्रत्ताच
 धारिद्रुसत्रमहाभक्तः ॥ यनास्यवाउसससंरुवथपकागिरंस्वमिदंरुदकथ ॥ यत्तयूतंसवमि

706

दंरुदापूवाचकागवावाभनूमादिकंचकनेवमञ्जकगलनकर्माणागानूमादनशुतंनरुनसूवधुव
 लुगनयूधुनक्रं ॥ सलः ॥ यिकायंयियदभनंसदा ॥ नयनाहिवाभंजनकाकदभ
 तंबनिकंरुंदवसरुसकाः ॥ टिनां ॥ नवान्नयंनवमि ॥ सदसकाद्याकल्याणद्वयंरुप
 चक्रवर्ति ॥ अन्नककृत्यः ॥ भमसरुमांयकोदुवाउ ॥ चमयानूदकं ॥ अचिनियाः
 कत्यवरुवभक्तः ॥ नथेववक्षुपगान्नमानसा ॥ आवागितामदगवत्तायमयायेषांपुमांनकदा

चिविविचर ॥ तथासमानं वदन् पृथक् च यमश्च न चानुमादिनं च यथा रित्यायनि वा विषायासु धर्मका
 यं च मया दितुमिति ॥ ३ ॥
 असंख्यवपवर्तमानां
 चिन्मीमांसादिविकनसाध
 नागवप सत्यनानां वदनां रगवनां अविह्यां मदनी विपूलां विमुर्तुं सदापि कवेः ॥ पूजांकः

ॐ	वाङ्मि	सूत्रपुत्रासारुमसुन्दराः
ॐ	वायुः	देगधा
ॐ	कृतपूर्वावाकृतद्विना	वायुः
ॐ		वाङ्मि

१०८

मुकामः स्यान् अनीनानागवप सत्यनानां रगवनां गम्भीयं वदन्नाच वं यविह्यारु कामाखवन ॥ नना
 वग्नं ननुपदगविदाववाञ्ज
 यकथ्यकागमि ॥ नाविक्रिफः
 सुन्दराकः ॥ अतव्यः ॥ ८० ॥
 त्रिदीयमानरुसां वसायामिमागथा अरावकः ॥ यञ्च न सर्ववदनां पूजांक उक्तचिन्मि ॥ गम्भी

वायुदलवायथायंसः	वर्तुपुत्रासारुमः सुन्दः
चिन्नाविप्रदिनस्थानः	नार्यसूत्रपुत्रासारुमः
अथखलूरुगवानिमम	वार्थरयस्यामानुयासंपः

वंसर्ववृद्धानां (भववंप्रजानिदुं॥ सचयचायसंदम्यविदावंतयंगथा॥ यावदगीयतसूतं सर्वपुत्रा
 मारुममिदं॥ अचिन्तियमिः दंतं अन्नं शुभसागः ॥ मायकंसर्वसत्त्वानां
 मनकडः खसागवान्॥ अ दिस्वस्ययग्यामिअः धर्मानिधनं तथा॥ अग्नि
 गच्छीवसूनुं मदमानस्यः नविद्यत॥ नगंगावजः सायेवतप्रवत्थनसाः
 गय॥ नचाचवतसहस्यकिश्चिच्छकापमारुगी॥ धर्मधनुसका (ननपदेष्टवन्मदनं॥ य

११०

उधर्मात्मकसूयंगम्रीवंसपतिद्विगं॥ ननुवदयम (धस्तिं पत्न्या चामूनिंतिनं॥ दंतं सुतं पकाः
 गंमनाहूनस्य प्रवच॥ याव निकलयकाद्यावे अंसं खया अचिन्तिया॥ दिव्य
 मानुषका (न्यवसूखानिधः नूरयक॥ यदास्यववि जानीया यत्तसूनुं गुणीयः
 न॥ नवमचिन्तियंमसंपूथः स्कन्धं समाजितं॥ आक मया अनंगं पूरुममिः
 सदावृत्तं॥ यः स कृत्तुं लितं सूतं सदनवदनां रुगं॥ समन्तवयमिष्टस्य विदावंतयनं तथा॥ अय

गच्छति पापानि सर्वदः स्वप्न स कृष्णं ॥ यदुक्थी ज्ञातुं काश्चिदुदयावृक्षा ॥ समन्तत्रयविदुस्तु सर्वथा
 क्षिप्यमादुखाः ॥ तादृगं ज्ञासः ॥ ननु क्व वीर्यं यद्वा सति ॥ यादृगं ज्ञातुं काश्चिदुदयावृक्षा ॥
 मितं सुपिना न य ॥ ननु सभाय ॥ विदुस्तु दं सुपिना का ॥ मयि न ॥ सिद्धिं वाचयते ॥ १११
 वराथे वपय्य वापूया न अत्र ॥ नीया सना देव अत्र दण ॥ गता वृक्षा ॥ दृग्ध न पाणि
 द्वास्तु भिन्नता सन गमानि च ॥ वर्मस्तन कत्रपं च कदाचिदुदयावृक्षा ॥ कदाचिदुदयावृक्षा च वाचिसंः

कदाचन ॥ समन्त रूड वृषं च कचित्म ॥ प्रियरुथा ॥ क्वचित्मेदी वपूया निदृग्ध ननु ज्ञासना ॥ क
 चित्केवलमात्रा सं क्वचिदुदयावृक्षा ॥ गतिं ॥ ननु क्व रुना रिदृग्ध ॥ नपूनश्चात्र दायिष ॥ सर्व
 संसिद्धि कत्रपं यगं वृद्ध गानना ॥ ननु मा ॥ सं स मयत्न सयाम ॥ चकयावदं ॥ उद्वदीपमिदं
 सर्वयग सापू वयिष्यति ॥ सर्वचः ॥ विपवस्तु निजिगृहाः ॥ निसर्वथा ॥ निदृग्ध ननु ॥
 सदाशानि सर्वपाप विवर्जित ॥ सदा विजित संयाम ॥ प्रिया सचय भादति ॥ वृद्धा विदुः गन्धुः साकपा

सासु (थेव) वावज्जपानिधय कन्द ४ संजय धनवर्ष ४॥ अनवतफाना (गन्द) ४ सागवधरु (थेव) वा॥ किल्लव
 न्दासूत्रन्दाधगवूठन्दासु (थेव) वा॥ नगांयपमुखोक्तुः सर्वादिदवगानिच॥ २४ वना
 निरुपूजयनिधमसूयमचिः नियां॥ यद्विनाहविष्य निद्वद्वासला ४ स (मे) ववा ४॥ ११२
 नृणवंचिन्नयिष्यनिद्वद्वद्वासः वउरुमा ४॥ दवगालेव नासर्वावन्ननिचपवस
 गं॥ नगायग्यधसर्वादिनउ ४॥ प्रत्यसंविनांउककगलसूतनअगगारुनवा ४॥ य ४॥ मंसूतुगमीवंगः

वधार्थमिदागगा ४॥ अविनिययसादनवर्मसूयम (मे) ववा ४॥ ननकात्रुनिकासाकननसत्तदिगंकमा ४॥ न
 नगमीवधर्मासांसद्धमवसः ४॥ डिन ४॥ धर्मप्रयुय धरानयननयविगनिच॥ य
 श्वनि ४॥ मंसूतुंयवा न्याय वयनिच॥ वृद्धा ४॥ गनस दसागिनरिभपूर्वपूजिगा ४॥
 ननकगलसूतन ४॥ मंसूतुंयधनिच॥ नसर्वदः ववाजन्दासवस्वगीन (थेव) वा॥
 आयवयवध (थेव) गथाचातुमहाविषया ४॥ यकगनसदभमपु द्विमदिमहावसे ४॥ नगांयकांकमीयनिः

दिवावावावतंदिना॥ मदावसेश्वयक्रन्देनावायनमदभ्रयो॥ अष्टाविंगनिश्वाप्यनसंजयप्रमुखानि
 वायक्रगनमदभ्रिदिदि मदिमेदावसे॥ नषांन काकविष्यनिसर्वनासरुथप
 वावऊपातिश्वयक्रन्दः पंचयक्रगनवपि॥ सर्व रिवाविसयेति॥ नषांनक्रांक
 विष्यनि॥ मागिरुदययक्र दःपुर्लुदसुथेवच॥ कम्प्रीनागकथेवपिंगसश्वः
 मदावसे॥ चकेकथयक्रन्दः पंचयक्रगनवृग॥ नषांनक्रांकविष्यनियति॥ सूनुमिदंयुनं॥ विगः

११३

सनयंगनवाजिनवाजाजिनषरु॥ मनिक्कलनिकलुधवर्षाधिपनिप्रवच॥ मदायामामदाकालः
 स्वर्लुकगीरुथेवच॥ पांचिकः ऊगलपादयमदाहग रुथेवच॥ यत्तासीधमया
 सयकर्मठावाविप्रवच॥ शूचि नामःसूर्यमिनात्रलक गस्तथेवच॥ मदायत्तासी
 नकुलःकामण्यथचन्दन॥ नागयत्तादेमवरुःसा नागिनीरुथेवच॥ सर्वनम
 दिमन्ममदावसेपवाजुमा॥ नषांनक्रांकविष्यनिययांसूनुमिदंयियं॥ अन्नवनकदिनागच्छःसाः

गवापिनथेवच॥मृचिलिष्टेसपुत्रोचउरानन्दायनन्दको॥नागगरसदमृहिरुद्विमहिर्मदावसे॥रु
 सांयक्रांकविषयनिषांसुमि दंयियं॥अनवरुफदिना (यन्त्र॥सागवापिनथेवः
 चामृचिलिष्टेसपुत्रोचउरान न्दोपनन्दको॥नागगर सदमृहिरुद्विमहिर्मदाव
 सेशानसांयक्रांकविषयनिसर्व कारुयरेसवाक॥वली योक्तनमृचिश्चदमृचिरुधः
 संवत्रयापुद्गादःखत्ररुचश्चरुधामवासाधियाःअसूत्रगेनसदमृहिरुद्विमहिर्मदावसे॥रुषाव

११४

क्रांकविषयनिउत्ताकरुयरेववाक॥दावीनीरुगमावाचपंचदूगगेवपि॥रुषांयक्रांकविषयनि॥सफ
 मरुस्त्रिगानिच॥चक्षुवक्षुलि कारेवरुक्षीचक्षुकाग था॥दन्तीचक्षुगदनिचसः
 वेसत्ताजदाविमी॥चक्षुसर्वेय द्विमन्नामदावसपयाकु ना॥नसांयक्रांकविषयनिस
 मन्नेनवदुर्दिग॥सत्ररुनीः चपुमृखादवनाचअः चिनिया॥रुधासपुमृखाव
 वंसर्वादिदेवगानिच॥रुधिवीदवनायेवरुसगस्याधिदवना॥अनामरुक्षेत्रानिवासिन्दावदीद

वना॥ नमस्त्वैव नमः संद्याः सपुद पितृसाः॥ नयां वक्रां कविष्यन्ति यथां सुगुनिदं पियं॥ या ऊयन्ति च नमः साः
 नायवर्तुवस नव॥ गीपुत्वा नऊ सन्नीतिस्तु निर्यासं क नानिवा॥ गुदनक्रयपीडा
 यसर्वस्तु भगवन्ति च॥ असः श्रीपापदः स्वप्नसर्वः कस्तगयन्ति च॥ पृथिवीदः
 वनायेव गम्भीराय मदावसाः॥ सुवर्णयुगा सा रुमस्तु लुपैस्तपिता॥ अष्टवद्विः
 सदमाधिगता निधाऊ नानिवा॥ या वद्धऊ नस्तु न वद्धे न पृथिवीवसे॥ ह्युवमगयऊ नंपूव सात्ता

११५

नाऊ २

निवर्तुमि॥ उद्धस्तदय नमदीः नः सुगुणवमावसा न॥ सर्वोश्च दनानि वदमादि कृवावस्ति नाथा॥ सुद
 युपरा सा रुमस्तु लुपैस्तपिताः॥ ना॥ अऊ वक्तु नया रानिस्तनित्तन्नीवीयवेला
 निवा॥ सुखनपीति ना रानि नाना वस समपिता॥ स वक्तु मदीयसि रूतगसा
 वनदेवना॥ पुद पितृसा रुविष्य निरू सुगुणका भन ॥ गस्यानि रूताना वविचि
 वक्तु समानिवा॥ विचित्रा रुतवक्राश्च वादयन्ति समन्तरः॥ सर्वातिरुतन्ना भि आतामा निवना ३

निच॥सूर्यमंकविषयनिनानागन्धपमादिगं॥विचित्ररिचपूषरिचिचिचुहि॥रुसेत्रयि॥सर्वस्व		
धवनस्यराधादयनिमदिगसं	॥सर्वगुजम्बुदीपसिंहा	गकन्याप्रचिन्तिया॥यद
सूर्यममाङ्गाःपद्मिनीद्वयः	संयुक्तस॥वाहनविः	चिन्तासिर्वासूपद्मिनीच॥
पद्मकमूदोत्पत्तानिचपूषुवी	कास्तुथेवच॥कमाव	जातिनीमूकंरुवकगगनं
गुरुं॥नमावजाविनिमूकंदि॥गानिपरास्वरा॥सदस्यकिचलोवशि॥कासनसूपर॥गम्भीयक्ष		

११३

वरासनदविन(आदयिष्यति॥जम्बूनदसूर्यवर्षुस्यविमानान्नवसंस्तिग॥सूर्यन्ददवपूजाध्वरुग॥स		
गात्सूर्यमंक॥उदयनिजम्बुदी	पैसुगुडसंपदविना॥३	जूननवस्मिन्कासनमोरास
नांसमन्तुग॥सदवाविनमाग	धवनस्मिन्कासनपुत्रादन॥३	नानापद्मिनीसंछन्नाकमला
वावयिष्यति॥सर्वगुजम्बुदीप	सिंनानागस्यरुसोषधी॥	पविषाचयनिसम्पदंवाहनयः
यकनदि॥चन्द्रसूर्यावि(गेषुक्षप्रवरासमांनदन्तव॥समयदन्तिनक्रवावाकवर्षन्(थेवच॥सूरिकं		

अमनस्यानां च वृक्षा रगवां॥ यावरु सखगवता॥ सुवर्णु नत्ताक वच्चुदुद सखधामगनस्यार्देन ४ सम्यक् समुद्धः
 सपदिनिर्वृत्तस्य सद्धमोक्तं दिग्गजसर्चनसर्वसर्वथा सर्वेन सगगासनस्यानर्दिगस्याः
 यं प्रपन्नकृतनामदात्रक ४ न सखधामगनस्यानसंख्येन केवदिवचधुजसाकवागोसुवः ११८
 सुवर्णु नत्ताक वच्चुदुद सखधामगनस्यार्देन ४ सम्यक् समुद्धः
 सपदिनिर्वृत्तस्य सद्धमोक्तं दिग्गजसर्चनसर्वसर्वथा सर्वेन सगगासनः

नस्यायं प्रपन्नकृतनामदात्रक ४ न सखधामगनस्यानसंख्येन केवदिवचधुजसाकवागोसुवः
 हि संख्येन ॥ सुवर्णु नत्ताक वच्चुदुद सखधामगनस्यार्देन ४ सम्यक् समुद्धः
 उद्यत्ता ॥ विद्या च वधसम्यः न ४ सगगासाकविदनुः रुव ४ प्रवृत्तमगावधि ४ ग
 स्मादवा ना अमनस्यानां च वृक्षा रगवां॥ न स सर्वजगदिरु गगानुरुवायां सम्यक् संवाख्ये
 याकना ॥ न स सर्वजगदिरु गगानुरुवायां सम्यक् संवाख्ये

रुगवांसां वाधिसत्त्वसमर्चयान्कूलदवनाभतदवाचन् ॥ ० ॥ अस्मिन्कूलदवनाभसद्वत्तस्मिन्कालनंभूति
 तद्रूपं कृष्णसमसंयस्य कृष्णत्वाद् यच्चिन्त्वाधनानि कृष्णना कृष्णमजावाजयमूखानिदग
 दवयुक्तसदमासिनरुद्विगुयं गिरुवनादिदधर्मश्रवणं यापसंक्रमानि ॥ नरुवांशुया १२१
 नांसस्युवाभांरुदं वाधिसत्त्ववा कृष्णमंशुत्वासदश्रवणन कूलदवनाभससुवर्णयुगः
 सारुमस्यसुवर्णनुवाजस्यान्नि कचिगीकावपीनियसादयनित्वाहवन्ति ॥ नावविमलसर्वेदुयसद्वलन

यत्रिधुद्वचिरुनसमन्वागगारुवन्तिविमलविपुलविस्तीर्णुगगतकल्पसद्वलनगम्भीरगचिरुयसाधन
 समन्वागगारुवन्ति ॥ अस्मिन् विमितं चपुल्यस्वचंयत्रि गृहीतवन्कारुवन्ति ॥ नावत्रैत्य
 दवनाकृतनानकृष्णमजाः वाजयमूखानिदगदवः पूरुसदमासिसदमश्रवणनास
 सुवर्णनुवास्यान्नि कचिगी कावयसादयनित्वाह वन्ति ॥ नावदिमलसर्वेदुयसद्वलन
 नयत्रिधुद्वचिरुनसमन्वागगारुवन्ति ॥ यावद्वाकनलमनूपाका ॥ अस्मिन्कूलदवनाभसद्वत्तस्मिन्कालनंभूति

नावहव॥ ननखलपून ४ कलदव नकासननन समयननस्य ऊटिचव स्य	थदिनाऊलवादनामा (यदीपूः	
कुउत्य नावहव लिचप ४ पासा	दिकादगनीय ४ यवमया	युखवुपूकननयाममन्नाः
गमानानागा सुकगस ४ सचगाः	मुगनिंगनासिपिसंख्याः	गमनाकगल ४ सर्वगिस्तीवह १२३
वा॥ ननखलपून ४ कलदव नकास	नननसमयननस्य बाहूः	सूयग्रत्ररविषय ३२ कानि
सत्त्वगतसदसागिनानायागस्य दान्यरुवन्॥ नानायाधियविपीठिगानिद ४ रवांमीवाखलीकदू काममनार्या		

यदनां यदयनि॥ ननखलपून ४ कलदव नकासननन समयननस्य ऊलवादनामा (यदीपूः	सुखवां अन कषां
सत्त्वगतसदसागिनानायाग	पीठिगानां सत्त्वनामथययवम
कावृथं चिकुमस्यत्तां चहव॥	सदसागिनानायागस्य दानिनाः
नायाधियविपीठिगानिचन	काममनार्यां यदनां यदयनि॥ ३
अयश्चममयिगाऊटिचव ४ (यदीपूः यदिकित्सक ४ यवमका युक्कगसाइहा जायूवेयगा सु वसमन्नागगाव	

क्षाजीर्णमदल्लकाश्चगतावधानूपाक्षाजीर्णमवद्वयपुत्रयमानकाथायद्विमासम्याययुतसर्वत्रयामन
 गवन्निगमयादुवाञ्जनीष्ट यसंकुमनि॥नान्यनका निसत्त्वगन्तसदमासिनानायाग
 सृष्टानिनानायाधियविषीः णितानि॥नानायाधिरूपः णविभाचयितुंयनूनमदमिमम
 वयिगवञ्जटिचत्रमूपसंकुमि त्वायाधिकोगसंयविष्टः कुर्या॥यनमयुकोगसंनपविः
 सृष्टनादंसर्वत्रयामनगवन्निगमञ्जनपदमादुवाञ्जनीषूपसंकुमिष्टामि॥उपसंकुमनान्यनकानि

१२४

सत्त्वगन्तसदमासिनानायागसृष्टानिनानायाधियविषीः णितानिनानायाधिरूपः णविभाचयिष्टामि॥ननखत्त
 कालदवनकासनननसमयनञ्ज सवादन॥यद्विष्टपुत्रायन स्वयिगवञ्जटिचत्रः॥यद्विष्टनना
 पञ्जगामा॥उपसत्त्वयिष्टुञ्जटिचत्र वसपादोगिवसावन्दित्वा रुनाञ्जसिष्टुष्टात्तत्तानकाः
 नकानकासिगवञ्जसवादनः ॥यद्विष्टपुत्रः॥स्वयिगवञ्जटि चवं॥यद्विष्टनना॥यद्विष्टगवञ्ज
 वायुकोगसंयष्टुमिष्ट॥नानीष्टियानिस्तन्नपविष्टुमिष्टाननवः॥कनकासनजायनवायययगवञ्जः

ॐ॥ अथ नंदकथं शुद्धाकासकाससूखावदं॥ यन्नान्नप्रगतीयस्य कायाभिभायदत्तं॥ कथंचिकित्साकर्तव्या
 वानपिरुक्षयिकमथा॥ सत्त्विया न समस्तस्य कथं व्याधियः॥ गान्ध्या॥ किंकासकृपाकवागः
 पिरुंयकृपाकवागः॥ किंकासकृ पाकः॥ यथायनपीशुनिः॥ मानवा॥ ॥ ॥ अथ स्वस्व १२५
 अटिचव॥ यदीजसकादनस्य॥ द्विपुरुषादिगंधादिभिरु को गन्धं विदित्वा दग्धमस्य॥
 वयोवातुगुयामासा॥ रुयश्च भवदं सुगं॥ रुयस्तथैव दमस्तु यश्च ग्रीष्मिकस्तथा॥ ॥ स्वयमासकुम॥ ॥ ॥

इति संवत्सवंदा दग्धमासिकं सुगं॥ अत्तं च पानं च तथा जीर्यं च येनाथ को गन्धं सुमिषदग्निना॥ रुवापिसं
 वत्सत्रयवमन्त्रयपत्रिवरु निद्रियवावापि॥ पप्रिव रुमानाचन्द्रियामिबिचित्रया
 विरुवन्मगतीविष्ठां॥ रुयैव वेद्यस्य च रु॥ युकावन्दिमा सर्वयान्नप्रवृत्तनि॥ षड्वातु
 को गन्धं युजानि रुवां॥ यथा रुमं रुजनमोषवैवाः॥ कानाधिकाया॥ युवन्निवर्षपि
 रूपकाय॥ भवदिय सत्त्वा॥ रुमन्त्रकासगंधसा निपातं रुधिका वायुवन्निगीषा॥ सिग्धापुसवन्नास

प्रसाधवर्षगवत्सस्त्रिंशंमध्वंरुगीर्षा॥मध्वामसिंघंरुदमन्तकासवृक्षापुकदकानिचरीषकास॥क
 रुधिकः॥कृष्णानिचुक्रमाः
 रुयिरुधिकः॥कृष्णानिजी
 येनाम॥वानाधिकः॥कृष्णानिजी
 रुमाकुः॥सयधंरुमिनय
 युकापः॥संरुदसंकुर्वः
 निरात्मकस्यविचरनंयिरुवि १२३
 रुदंतं॥रुिद्युः॥सपयत्नं
 रुधसत्त्रिपाक॥सुग
 मध्वकृष्णत्करुपवमन्तय॥
 वानाधिकं॥पेरुिकसत्त्रिपाककं॥करुदिकंसर्वसूजानयं॥यत्कात्रयद्वातुयदाययंरुदन्तपातोषः

विदगितवामिति॥ ॐ॥ ॥अथखसूजसवादन॥गुद्विपूठ॥रुनेवद्रूपमनेमिरुिकनवायुकोमस्य
 नपविष्टनसर्वकासुअयू
 रुदमविगमाः॥रुन॥रुन
 समयजसवादनः॥गुद्विः
 पूठ॥रुनेवद्रूपमनेवमाः
 गामनगत्रनिगमऊनयदवाः
 रुमाऊवानीषूयसंकुमिः
 रुसर्ववामनकषांसत्त्वगरुसदः
 आभांनानागसृष्टानांनानावाविपविपीठिनानामवमाश्यासयामासमारुदवेयास्मिदशस्मीनिज्ज्ञानंय

निहानवान् अदंयुष्माकं नानाया विरुधः पविभाचयिष्मि ॥ सरुधव (धनकूलदवकनसुअनवादनसु (अद्विपूः
कुसुदभवेयुपवचनं वाद वमानसु सर्वा निता न्यन कानिसुत्त काठिनियुतगनसदसाः
निमदापदयजातानि हवू ॥ आश्वासया प्रीति ॥ अविन्ने नयीति सो मन सन समन्ता गतानि १२०
वरुवू ॥ तानि कनकासनसः मयननयापदययानका निसुत्त काठि नियुतगनसदसाः
निनाता गसृगानि नानाया विरुधः पविपीठिनानि नानाया (गसृपविभाचि नानि ॥ अगानि वरुवू ॥ तानि विगन

या श्रीनिचयथा पो न (नरुस वलवीर्य स समन्ता गतानि वरुवू ॥ कनखलूपन ४ कूलदवकनकासनकन
समयन रुषामनकपांचसुत्त काठिनियुतगनसदसाः नानाया गसृगानि नानाया विरुधः
त्रिपीठिनानां य केचि नृगाः रुतव स सुदा वरुवू धाक सध्वयनअसवादन ४ (अद्विपूः
कुरुभापसंक्रान्तयसंक्रः मोवयच्च किं चि नृपांसुत्त काठिनियुतगनसदसा निनाः
नावागसृगानि नानाया विरुधः पविपीठिनाना मोष विविधनानि अरु निदिगतिस्म ॥ नरुसूअअनोपस

योनिमनकानिसत्त्वकादीनियुक्तगुरुसहस्रादिनानाभोगकाविरुद्धानिनानायाधियत्रिषोडशानिअसवाद
 ननयद्विपुरुषनानायाधि
 सवर्गुपराशारुमसुगुन्दमाः
 दगम४॥
 ननय॥३॥

स४यत्रिमात्रिकानिवरु
 ऊकाधियुगमनपत्रिवः
 पुनवपत्रंकरुद्वयनद्वारु
 ॥द्विदात्रकमसर्वसत्वाश्रमार्ग४कृता॥ अस्यावगायथापूज्योत्सादवसकाय

वृत्रिनि॥
 र्नानाम॥
 स४यत्रपुरुषाविविधयउलवाद




[illegible]

सा देवता ऊल वादनं श्रद्धिदायकं भक्तदयकं ॥ ॥ सा धूना धूना प्रहयस्तु ऊल वादनानाममत्स्याः
 नामूदकं यय ॥ दासां काय ॥ सां ऊल वादनं ॥ सां ॥ यथा दकं वादयति ॥
 नरु ॥ सनामानूयं कुरु ॥ ऊल ॥ वादनं ॥ प्रादा ॥ कीयनी ॥ सानिदवमत्स्यामि ॥ दयः ॥ १३०
 नायाद ॥ यत्रियुनिदगमः ॥ सदासाभि ॥ ॥ अथ खलूकलदवमऊलवाः
 हनस्य श्रद्धिपूजदायकं सदासाभेगाय नमः काय विरुमत्त्यनं ॥ ननखलूपनः ॥ कलदवमसमय

नाटवी संरुवायां पृथ्वि ॥ किं विस्मयमवनिष्टमूदकमहं ॥ नानिदगमत्स्यासदासाभि मृत्पूमुखः
 ॥ विष्णुनिऊलविषदीगानिः ॥ धावनि ॥ ॥ अथ ख
 श्रद्धिदायकं शुद्धिगंधावनि ॥ यस्यां दिगिऊलवादनः ॥ श्रद्धिदायकानूपकागिन
 सान्दिगिदगमत्स्यासदासाभिः ॥ ऊलवादनं कुरुमंयुक्तः ॥ ने ॥ ॥ अथ खलूकलदव
 कऊलवादनः ॥ श्रद्धिदायकं शुद्धिगंधावनि ॥ सादकं यय नाना नखे वा दकं उपलस्य ॥ च शुद्धि

गंधक न॥ सादा क्रीत्वा मित्रमदानं च कसमं नं वृ कसमि वृ कसमं गंधां चि त्वाथ न सायुक् विभीन
 आयुज गंधा यग मय न सां द गंधा ३ नां मत्स्य सद सा नां दुः मन्ना स्वादि ४ सु गी न ना च
 यां क न वान ॥ ॥ अथ खलु कृत द व न उ न व द न ४ युक् वि ल्हा उ द का ग मं य य १३१
 व न क न उ द क सा ग म न र व न ॥ व द दि ग धा व न न यो द क म प ल ल न ॥ स गी र्थ
 गी र्थ न द व ल्हा न स म नू ग च नि ॥ न स्या ख लू य न ४ कृत द व न अ ट वी सं र वा या ४ युक् वि ल्हा उ ला ग मा

ना म म न दी य न क सां उ द क सां न म न ॥ क न व स य न सा न दी अ न न व ल य प स त्व न न सां द गंधा नां म त्स्य ३
 सद सा धा म र्थ न सा न दी य द द र स्त न म द पा य न पा मि ना ॥ य र्थ नां म त्स्या ना न र्थ यः
 उ द क सा ग म न र वि ष्य नि ॥ स ग न द द्वा वि न य नि ॥ न ग य न उ वा न दी उ न स द म
 ल्हा यि न न व य धा वा द यि तुं ॥ कि मं ग प न म य क न ग य वा द यि तुं ॥ स य नि नि र्थ र्थ ४ ॥
 ॥ ॥ अथ खलु कृत द व न उ न व द न ४ गी र्थं गी र्थ म प सं का ना य न वा जा स्र य य प र स्त ना प उ ग ३

भायगम्यारुः ४ सूत्रयत्रयस्य पादो गि न सानत्वा च का न्निवर्तु ॥ ६० मां पदति मात्रा वयनिसा ॥ मयाः
 खसूदवस्य विषय सर्वथाः सनगे वनिग मरुनयः दवा द्वा उ अनी पसत्वा नो
 व्याधय १५ संरिना ॥ १॥ नरा मृष्टिं स्म न १८ वी संरवा नाम पृष्ट विधी न रु द ग म स्या
 सदस्य निप निव संनि ॥ ३॥ स पुदी क्षानि ज्ञादिर्य पत्रि नायि नानि ॥ न द द्य उ म द वा
 विंग निग जाय थ म षां निर्या ॥ ५॥ निग नानां जी वि नं न दामी नि ॥ ६॥ थ म नू षा लां द र्कं आरु फं ख लू याः

१३२

हास्यत्रयपुरु नामाखानां ददनमदावेय वा उ स्य विंग निग जा न् ॥ आ मा र्था आ द्र ४॥ उप सं कु म म द
 सख्य म द स्मि मा ता ॥ ३॥ उप नृ द्वा न व विंग निग जांः कृ त्र सत्वा नां सुखं ॥ ॥
 ॥ अथ खसू कृत दव ग ऊः सु वा द न ४ स्य द्वा सां व सन उ स ग रु न य स्व पू र्ण ध विः
 ग निग जां नृ दी त्वा ना गः मो छि का नां स का मा न ॥ ग नं ॥ आ द ती नां प नि गृ य पः
 नि नि व र्क ४॥ य न उ लां ग मा ना म स द्वा न दी प व द नि ॥ न रु प सं कु म्मा द क न ना द ती ४ पू व यि त्वा ग ऊः

ऊरवादनयगीयुं विसर्जय ॥
यनसकं निवर्तनं न नापसंका
स ॥ विरुप्रलयथापूर्वकं नत्स
सूऊसाम्भवादावकस्तुल्यजनं
एवापूर्वविनीकनापसंमकामरु ॥

॥ अथ खलु जलाम्भवादावक ४ दक्षिणमलित्रयगीयुं यीयुं वावगिसः
मइयसंकभ्येतां पृथुकिंः
विपिनामदनऊसाम्भवा
दक्षिपृथमपनाम्यतंद
यिनामदस्यायज्जावायमा
यविसर्जितं ॥ ॥ अथ ख
स्तिनमलित्रययनादवीसं
॥ अथ ऊरवादनः स्वकंपूर्वजलाम्भवागमं दद्यात्तदमुद

736

यश्चूकस्थानिकाहाजनं पतिष्टच्चि त्वाहित्वानुपूय विष्ठां पृथियकिस्मा ॥ ननादावधनानिदगमत्स्य
सदमासिसंनयितानि ॥ यून
नरिक्कमदायानधायमान
मूकममप्रसकालसमयना
मदभवांसत्सनांगमूयंयनीयसमूत्यादं धर्मदगयय ॥ तत्त्वगिखिनरुथागकस्यादेन ४ सम्यकं मूः

कृष्णनामस्त्रयंशवययं॥ननवसमयननस्मिंजम्बुदीपकाद्वि॥सत्त्वनामरु॥कचित्तद्वयाननरिः
 यद्वयनिकविक्लुगयनि॥॥अथखलुपूनजलवाः॥दन॥एष्टिपूरुस्योवलायाम्
 शीयादोजानूमानुननुपूकः॥विष्णुपवल्ग्वंवादानः॥मृदानयामास॥नमस्तुस्तुः॥१३५
 गवभात्रत्तगिखिनरुथाग॥नसादेन॥सम्पदम्बुद्व॥स्यापूर्ववाधिसत्त्वचर्याचप्रमा
 नसंजवंप्रसिधानमरु॥यकविदगसूदिनूनवनकाससमयममनामस्त्रयंशवययं॥ननवसमयननस्मिंजम्बुदीपकाद्वि॥सत्त्वनामरु॥

द्वात्रांशवययं॥ननवसमयननस्मिंजम्बुदीपकाद्वि॥सत्त्वनामरु॥कचित्तद्वयाननरिः
 निगमानामिसंभर्मन्दभयः॥मिस्म॥यद्गास्यानः॥दंरुवरास्यादादिमूः
 त्रयके॥यद्गावियायराया॥संस्कानंपुर्यांविहाने॥यस्यंनामत्रपयस्ययंय
 जायकनपुस्यस्यसर्गः॥सर्गः॥यस्यायदनावदनापुः॥स्यानूप्पुस्ययमूपादान
 मूपादानपुस्यारुवा रुवपुस्ययाजानिजीनियुस्ययाजामत्रमगाकयविदवद॥खदीमनस्याया

भारुवसं वमस्य कवलस्य महकादः खसु चस्य समुदया रुवति ॥ यद्वा विद्यानिवाधासंस्कारनिवाः
 वादिहाननिवाधः विहाननिः शवात्तामयपनिः शव धानामयपनिः शवकषणः
 यरुननिवाधास्य गनिवाधः सगनिवाधाददनानि वाधः ॥ यदननिवाधः सु
 तिवाधः ॥ रुपा निवाधादपाः दाननिवाधः ॥ उपादाः ननिवाधा रुवनिवाधः ॥
 रुवनिवाधा ऊनिनिवाधः ॥ जानिनिवाधा ऊनामयमला कयविदवद् ॥ खदोमनसापायासा निवः

१३६

धनका ॥ कवलसमस्य महकादः खसु चस्य निवाधा रुवति ॥ न्निदिक्लदवनेन कासननन समथन
 ऊलवादनः ॥ एष्टिपूकृष्णानि यो गानिगनानामिमां धार्मिक कथां कथयन्ति ॥
 सार्द्धपूकृष्णानि ऊलामयमऊल गरुमचपूनयिसुग दमनूपाक अथायवमकास
 नसमथनऊलवादनः ॥ एष्टिपू वासदात्तवंपयिउर्याः मदासवमरुगयनगयिमः ॥
 कनवकाससमथनमदानिमिरु ॥ पाइरु न ॥ यरुसावाया अरुथननानिदगमत्सर्दसेगानिकास

गगानिदवपूत्रयत्रिंशत्सहागगायामपयत्नानिसहापयत्नानां चेषा भवंतूप (अनस ४ पवित्रिकर्क उत्प
 त्वा कनवयंकुगलकर्मदुः ॥ ना ०० ददवपूत्रयत्रिंः ॥ (गपयत्ना ॥ १॥ कषाभनद
 र्हेन ॥ वयंमस्मिंउम्वयदमम ॥ त्सदेसाधरवन ॥ ॥ कवयंनिय्या (गगानिगता ॥ १३१
 सवादनन (गुष्टिदात्रकसूपर ॥ कनादकनसमनर्पिता ॥ रजजनवप्रमवगम्रीप्रथा
 साकंयनीसमत्पादाधर्मादिगिर ॥ १॥ वत्तगिखिनरुथागनस्योदक ॥ १॥ सम्यक्स्वदस्यनाम (धयंशविगा ॥

कनकगलधर्मदुना कनपस्ययनदवयंदवद्वयत्ना ॥ यत्तनं वयं यनऊतवादन ॥ (गुष्टिदात्रकसुना
 पसंकुभम ॥ १॥ उपसंकुम्यन ॥ सपूजांकविष्याम ॥ १॥ अ
 वपूत्रयत्रिंशत्सहागगानि ॥ उत्तवादनस्य (गुष्टिनाः ॥ गृदरुक् ॥ १॥ कनखलूपन ॥ (यक्षी
 उपगयनगयिन ॥ १॥ कस्येन ॥ दगमूकादावसदसाति ॥ गीष्मैस्त्रायिमानि ॥ दगमूका
 दावसदसातिगीष्मैस्त्रायिमानि ॥ दगमूकादावसदसातिदकि (एपा (वस्त्रायिमानि ॥ द

दम मूका दात्र सदमा निवाम पाश्वर्या यितानि ॥ गृहान्न वज्रान्मार्गं मान्दात्र वं पृथं वर्षे पावर्षे ॥
 दिव्या अद्भुत ४ पत्रादः ॥ १ ॥ यन सर्व उन्मूदीः ॥ यय निवि वृद्धा ॥ ॥ अथ जः
 सदा दन ४ यद्वि य निवि वृः ॥ २ ॥ अथ तानि दगद व ॥ पूरु सदमा निख गय (थ नायः ॥ १३८
 कान्तानि ॥ रुच दव पूराः ॥ ३ ॥ सह ४ सूत्र यत्र यरु स्य ॥ विषय स्थान स्थानान्न यमान्दा
 प्रवृत्त पृथ वषे वषे यन्ना यनाटवी संर वा पू च विनी र नाय संका र्क ४ न नु पू च विष्ठां सान्दात्र वः

पृथं पत्र वषे यन्मूक नवान्निदिता ४ पून व पिदवालयंगता ॥ ४ ॥ नु वरि ४ कामयु (वैवम नि स की उ नि
 सप विवालय नि स ॥ मरुः ॥ नीं श्री सो रा ग्य काम नूरु ॥ व नि स ॥ उन्मूदी पत्र वानी
 पुरा ना इरु ॥ ॥ अथ ख ॥ सू द जा सू व य रा ग नः ॥ क मा दा मा रा ए रु नि ॥ कि
 मर्थ मय न गो व ना नि नि मिः ॥ कानि पाई रु ना नि रु वा ॥ व न ॥ य त्व सू द वा जानी या
 ॥ ॥ उल वा द न स्य ए दि दान क स्य वत्ता विं ग न्मू का दा व सदमा नि य व पि ता नि दि द्या नि च मा न्दात्र वः

पूषवर्षमिनिगं कृन्ति ॥ बाजाद ॥ ॥ स्वकाजलवादनः श्रद्धिदात्रकंपियवचननगद्याययन ॥
 अथकगलकमाहामास्यायनः ॥ अलवादनस्यष्टदंननाप ॥ संकाकाउपसंकमजलदन
 साश्रद्धिनचनदवाचन ॥ बाजा ॥ सूत्रग्रथपुरुस्वामामनु ॥ यन ॥ ॥ अथजलवादनः ॥ ३२
 श्रद्धिमदामाह ॥ साद्वैयनवा ॥ कासूत्रग्रथपुरुस्वनाय ॥ ऊनामः ॥ उपसंकमकाक
 निषर्षु ॥ बाजाष्टकृन्ति ॥ अलवादनकिंनिमित्तं जानीयायदयमाश्रद्धिगानिमित्तानिषादरुनानि ॥

॥ अथजलवादनः श्रद्धिसूत्रग्रथपुरुस्वनायचन ॥ ॥ जानामिदवनियकदगमत्स्यसदमाणिः
 कालगगानि ॥ बाजाद ॥ ॥ कथंजानामि ॥ अलवादन ॥ नआद ॥ ॥ गच्छुदव
 अलाम्बवस्मांमदायूकविष्णो ॥ यविगशु ॥ किंनानिदग ॥ नत्स्यसदसाविजीवन्ति ॥ ॥
 अथकालगगानि ॥ बाजाद ॥ ॥ अवसमु ॥ ॥ अथज ॥ लवादनः श्रद्धिजलाम्बवः ॥
 दात्रकभनदवाचन ॥ ॥ गच्छकलपूषादवीसंरुदायांपूकृष्णायथकिंनानिदगमत्स्यसदमाणिजीव

नि॥ अथ कासगगानि॥	॥ अथ ऊलास्य दायक ४ गीय गीयं न ३ वीरं रुवापूय विगीरनायक	
गभाय संकुम्य दर्शनानि दग	सत्स्य सदसा सिकासगः	गानिमहानं चमान्दात्रवयू
यावर्षे दृष्ट्वा पुनत्रयि निरुहः	यिदुत्र नदवाचन॥	कासगगानीत्यथ ऊलासदासः १४०
न ४ यदी ऊलास्य ससा नििका	दिदं वचनं यत्वा येन वा	जासूय यत्र पुरुष नाय संक
येनां पद्विनिमात्रा चय किं स॥ यत्स्व लू दवा जीया र्कानि दग सत्स्य सदसा सिकासगगानि दव		

पुरुय विंगत्सूपय नानि॥	नषां दवयूणा सामनूरावनाय नाका वी दृगा निशु रु निमिरानि पाइरुगानि॥
यदसा कं गद वत्वा विंगत्सू का	दाव सदसा सिदि द्याः
वर्षिगानि॥	दद सुद उदय रुमना
॥ अथ सबाजा	यां कूल दवना मनदवरा॥
गवात्पूनसां वा वि सत्य समूच	॥ स्था स्व लू यून र्पणा कं कूल
दव कश्च ४ सकन कासन मन समय नस्य वयय र्गनाम न जाव लू व॥ नस लू यून वव दृ द्यं॥	

॥ कल्कस्य देना ॥ ^त ॥ दधुपाणि ॥ भावकृत् न कासन न समयन सूत्रं च वपुः ॥ नाम बाजा वरु व ॥
 स्यात्स्वल्पं न ॥ कृदवत ॥ न्य ॥ स न न कासन न समयः न उटि च या नाम स्थितिव
 व ॥ न खलपू न प्रवंद्य व ॥ ॥ कल्कस्य देना ॥ ॥ माजा युद्धादन ॥ सकृत् न काः १४१
 सन न समयन उटि च या नामः स्थितिव देना ॥ स्यात्स्वल्पं न सकृत् न दवत ॥ न्य ॥ सकृत् नः
 कासन न समयन उर वादन ॥ स्थितिव का ॥ न खलपू न प्रवंद्य व ॥ ॥ कल्कस्य देना वदं सकृत् नः

कासन न समयन उर वादन ॥ स्थितिव का ॥ न खलपू न सकृत् न दवत ॥ न्य ॥ सकृत् न कासन
 न समयन उर वादन ॥ स्य उर वादन ॥ नाम र स्थितिव देना ॥ न खलपू न प्रवंद्य व
 व ॥ ॥ कल्कस्य देना ॥ ॥ ॥ गणनाम भावकृत् न न न कासन न समयन उर वा
 दन स्यात्स्वल्पं न ॥ नाम र देना ॥ न खलपू न सकृत् न सन न समयन उर वादन ॥
 मदाव का ॥ न ॥ न न कासन न समयन उर वादन ॥ नाम र स्थितिव देना ॥ न खलपू न सकृत् न

वरुणानि कानि कनकासननसमयनदगमत्सदसाधिवरुणः॥ न पूनसवंदुख्यं॥ ॥
 ॥ गत्सदसाधिवरुणः॥ ॥ अ मनि कानि कनकासननसमयनदगमत्सदसाधिवरुणः॥
 पूनसदसाधिवरुणः॥ न संकल्पितानि श्रुतानि वरुणः॥ न संकल्पितानि श्रुतानि वरुणः॥
 खिनसुधांगकस्य दनः॥ सम्यक् सन्तुष्टस्य नाम त्वयं श्रुतिः॥ न संकल्पितानि श्रुतानि वरुणः॥

१४२

दागनानि॥ येन कनकनरुद्रायां सम्यक् सन्तुष्टस्य नाम त्वयं श्रुतिः॥ अनीवपीति पसादया माथन वरुणः॥
 यनसर्वव्याकवधनाम त्वयं॥ यानि पतितानि यानीति॥ एतत्त्वत्पूनसु कलदवकः॥
 नो मा कनकासननसमयनदगमत्सदसाधिवरुणः॥ न वृकदवता रुरु॥ नेर्यं॥ दुख्यं॥ गत्सदसाधिवरुणः॥
 त्वमरुः॥ कलदवकनकासननसमयनदगमत्सदसाधिवरुणः॥ दवता॥ अनेन कलदवकनयः॥
 यथैवं वेदिन्यं॥ यथामया संसाय संसवता वदवः॥ सत्त्वाः॥ यत्रिणा विना वा॥ यत्र सर्वव्याक

वधमिषमिसल्लान्ननरुवायांसम्यक्वाविकि॥	॥ नूतिरुवर्धुपरासामसुवन्द	
वाडंऊलवादनत्तवेनयप	विवरुनामाः द्वादशं	॥ पुनवपयंक
नदवकपव॥दिताथाआत्म	पत्रिणागमपिवाविस	लरुननरुविकवां॥नक्तथं
॥दं॥विविधुविवविसुन	विपुसविमसुविविवयु	भगनकिव(ष)अपुतिरुनरु
नदभनवसपवाकुमादगवांरिक्कुभनसदमुपविवरु४पंचविवचक्षपाक४पंचासपूजनपदपूजन		१४३

पदपूजनपदवात्रिकांचवमा(ष)ः न्वरुमवनरुधुमनूपाकावल्लव॥सनकुददभदविकमृदनीसः	
गादरुननविविवकुसुमयः	मिमिनिनंएथियदगंध
नन्दमामनुयमिस॥रुव(ष)	यमानन्दएथिवीयदग
रुसंरुयायंन॥चनदिकथागत	सासनंपुहायय॥नन
पुहं॥पुहणवरुगवनमरुदवाचन॥	॥पुहणमासनंरुगवनिषीदऊरु(य)रुनमांववद

वविष्टमाक्रवदयवमामृगकथांविस्तृज नृणांदिताय रुगवंनिधनविययूकाः॥ ॥ अथरुगवांसः
 सित्त्वा न निययति कृत्वा मन्त्रं यरुसा॥ ॐ कथयंति कथा इत्यत्र का विष्ठां वाचिः ७४४
 सत्त्वानां गभीरा निडयं॥ अवंः मरुतिरुक्त्वा रुगवन्मम रुदवाचन॥ ॥ अयं सः
 विवत्रकालपाफः॥ सत्त्वार्थः सावसमदयति वरस्य ददमस्मादित्रस्ती गायत्रिः
 मिकुमुमिनि सत्त्वा वृद्धा टय॥ ॥ अथरुगवांसदमात्रचक्रचवमविति सिखितरुसन्नस्त्वा सिन्न

वकमत्तकामसनपाणिना वत्रगीनसंजयान॥ वादतमा रुनवष्टिका वंष्टिधीवीचयात्॥ सति कनकवज
 नविकुनं च सूर्यं रुकायूकम मा॥ ॥ अथरुगवानाः यूपमानंदमा मन्त्रय रुसा॥ वि
 विद्यदयानन्दमंसूर्यं॥ अथा यूपानानन्दा रुगवरुय निगृह्य सूर्यं विद्यट्या मासास
 नरुददगंकनकविस्तृमः का संछादिनं दिवध्यम यंसमृद्धकं दृष्ट्वा रुगवन्मम
 रुदवाचन॥ ॥ रुद्रमयं रुगवं समृद्धं ॥ समृद्धं॥ ॥ रुगवानवाच॥ ॥ स कुरु समृद्धवाः

सर्वउदादानकभामितः॥नयउद्यानयामास॥सकृददग्निमकृमृदसदभान्यस्त्रीनिदृष्टुचरुगवन्तः
 मरुदवाचत॥ ॥रुगवः॥ तस्त्रीनूपलञ्चक॥ ॥ ॥रुगवानाद॥ ॥अनीयता
 मानन्दमदोपूयस्यास्त्रीनि ॥अथायूषानानन्दः॥ नस्त्रीनादायरुगवन्तवृद्धाः
 यापनामयामास॥रुगवांः॥ आस्त्रीनिगृहीत्वासंयत्तं पुंवन्संस्कारावाच॥६०मान्य
 स्त्रीनिमदायचतुर्गुणमकृमृदसदभान्यस्त्रीनिदृष्टुचरुगवन्तः॥रुगवानाद॥ ॥अनीयता
 मानन्दमदोपूयस्यास्त्रीनि ॥अथायूषानानन्दः॥ नस्त्रीनादायरुगवन्तवृद्धाः
 यापनामयामास॥रुगवांः॥ आस्त्रीनिगृहीत्वासंयत्तं पुंवन्संस्कारावाच॥६०मान्य

१४५

नसमिन्वायोमनिमनादृष्टात्सादिनाथितिसगः॥सदादाननिवन्तः॥नतारुगवांरिद्रुमनन्तयामास॥वच
 नरिद्रुवावाधिसत्त्वग्रीवाः॥ मिगीतमुषवासितानि॥ पत्रमदर्शरुदग्निनिपूषक
 कुरुनानिगनरुहिरिः॥कुरुकः॥ वपुदाआवर्जितमनसः॥ तानिगनादीवातिमूर्द्धावेन्द
 नसमा॥अथायूषानानन्दः॥ कुरुकवपुषारुगवन्तम नदवाचत॥ ॥रुगवान
 नीतानागनयत्तत्तत्सर्वसाका हूञ्जतः॥सर्वसत्तेनमस्तु॥नक्तथंनथागनउवेतान्यस्त्रीनिनम

मरु॥ ॥ अथ रोगवाना यथा न मानन्दमरुदवाच॥ ॥ वन्दनीयानीमानस्त्रीनानन्द॥ ॥ नः
 कस्यदनाग्रिबानन्दारिः ॥ रिमयेवंक्रियेमनरुवा ॥ संमयकम्भावित्रिसंवृद्धिनि ॥
 रनपूर्वमानन्दानीकचन्यन ॥ कवनधानवादनवसा ॥ यपत्ताइयनिदकवनपवाः ॥ ७४३
 कमासदावथानामवाजाह ॥ न॥ नस्यदवक्रमावसद ॥ गामुय४ पूजावद्वृ४॥ मदा
 यमादामदवामदासत्तवांथनि॥ ॥ अथवाजाकीउनाथमृयानमहिनिधुमनसा॥ नवक्रमा

वासुस्यायानस्ययुषान्वाधिरयाकसूमसासयाच० नरुता१२ विद्वजमानामदादादगवनयुत्त
 पविविशु४॥ नयूपसुनक्रमाः ॥ वापसुयकाअन्याना ॥ पुरुतावद्वृ४॥ वाऊक्रमा
 वासुह्याउयानमदस्यामसः ॥ क्रिमायांनंदादगवनयु ॥ तांपविविशु४॥ ॥ अः
 थमदापलादागनद्वयमूवा ॥ वा॥ र्मीर्मददयमाविग ॥ गन॥ आगकनमावयंथाः
 यदेविनागमापयम४॥ ॥ मदादवउवाच॥ ॥ नमरुयमस्यपिनु० दूजनविथागादिम

हृदयवर्कः ॥ ॥ मदासत्त्वउवाच ॥ ॥ नचममहयमिदास्तिनायि ॥ कावनवचममिज
 नसंभुतविविकयवमसुवि ॥ पूसमर्थनासाहं हृद ॥ यमिमंममसंपदगतिच ॥
 अथकवाजकुमानासुद्वाद ॥ भवनगुप्तविवचंचव ॥ यमाताचकांवासीदहृगुः १४१
 सफादयसतां पञ्चसुतयत्रिः ॥ दृतांकु रूषयत्रिकषिः ॥ तांयवमद्वसगतीनां ॥ दृः
 मदायभादायवीरु ॥ साकश्चमियंनयस्विनीसंजदपसूतावासफादपसूतावारविषति ॥ दृदाः

नीरुजनमसुमानाससूतानयिरुक्कयिषति ॥ ॥ अर्षुसायादाकासंकयिषति ॥ मदासत्त्वउवाच ॥ ॥
 किमसासुयस्विनासाजनं ॥ ॥ ॥ मदायभादउवाच ॥ ॥ मान्साउपानिचूः
 धिवाधिवससकागंरुवयदिद ॥ ॥ ननरुजनमूकं ॥ व्याः ॥ युनवक्रुक्रसिदानां ॥ ॥
 मदादयउवाच ॥ ॥ ॥ दृः ॥ धातयस्विनीक्रुदपयः ॥ वीरगवीराजसंयाभातः
 भाषायवमद्वसगतीनां ॥ काः ॥ साः ॥ याभयविवक्रुभार्थ ॥ आत्मयत्रिणागंक्र

यदिनि॥ ॥ महायथा दउवाच॥ ॥ निरादक वजास यत्रिवाग॥ महासत्त्व उवाच॥ ॥ अस्म
 दिक्षनां दक्ष वंगरीया रियुका ॥ नाम सवदीना भवनय ॥ अनेषां पुन वात्सयत्रि
 त्या गा रियुकां नां यत्र दिना रि ॥ युका नां सत्य वषा भां न ॥ इक्षुव॥ अयिच॥ कृपाक ७४८
 वृममवता र्यसत्ता दिविषदस ॥ सन ॥ स्वदेह गत गच्छ ॥ हक वा नि निवि कासं॥ म
 दिनमना ॥ यवजी विन गरीवा ॥ अथ क वा ठ कूमा वा ॥ पत्रम सं दी फा च वा वा यी ॥ इति द्रुम सनिमिः

यमनू निदीकृन्तयवक मरुता महासत्त्व स्पेन दहत ॥ अयमिदानीमा त्मयत्रिवा गस्यकास॥ क
 र॥ सचिप्रमयि वृतायं प्रनिका ॥ यामहा द॥ गेयन वस ॥ नात्ते रुजने वादन श्वाः
 गरुनपकन वमो रुद ना नैः ॥ वननेन विडद नि अ ॥ नपूर्व सखरा वं क न द्रु ॥
 अयिच॥ नास्ति न श्यापजी व्यं॥ सर्व नाम देह न त्याग ॥ नदमिदानीं सत्ति या अ न
 शेज वा मप्रम समुद्रा रु वषा न रुता रु विष्णामि॥ अयिच॥ तत्त्वा दंद धुद नं रु व गत कति नः

विद्वन्मन्त्रान्कपूर्वनिष्ठा नंदनकस्यं वृमिभनरुविनंकार्यवृत्तं ननुदिनिः ॥ १ ॥ कं निर्विकारं निवृष
विममसं ध्यानं परादि विरुः ॥ १ ॥ संपूर्णं विमकायं युग
मनरुविनं पापा नवं सुयुः
॥ संखलं चं कुरुवावसाय ॥ १ ॥ पवमकद्वेषा यत्रिगतः
द्वयया ॥ कथा विद्रुयं च काः १४ त
॥ गच्छतां तावद्वक्तो स काः ॥ १ ॥ यथा दं दग वन युत्तं
युवश्चामीनि ॥ ॥ १५
समस्तं सत्त्वा या उक्ता मावः ॥ नस्मादपवना न्यति निवृत्तया व्याख्या सयसूय गमवत्त सना यां पाववत्तः

मस्तु च यमिधानं च कावः ॥ १ ॥ ददुग मादि नार्थमनुसां वा विं विवृथ गिवां कायूत्तं पददा मिनिधत्तम
निदं यवेदस्तु ॥ १ ॥ नस्मा वा वि
वना मया कित्तमगि वत्त
सा गवा न्युति रुया दत्ता वयय
मदं ॥ १ ॥ सथ व्याख्या ॥
विमस्तु सत्तन किं विवृत्त
न ॥ १ ॥ नस्मा वा सी मे वी वता वाः
॥ १ ॥ नस्मा वा विमस्तु दर्वत्ता वः
नयमर्थं कृत्वा यमसुं पथं वत्त ॥ १ ॥ कृपा मतिनं कवि च्छु मत्त रुत्त ॥ १ ॥ सति वत्तां वयं गति कां वं गतः

ताशुदीलाकयासुगतसुक्रयायादीसमीपपाता।प्रयतिनमाकुचवाधिससुहृमिप्रियं।एववविदीन		
वनी१गलिनम।धगमाषधि	कात्रंपचवास॥आकृगः	सुवदिनकत्रमानवजा
ऊ॥दिवगनचवृत्तसन्निधित	धसुमवर्ष१यपाक॥	प्रधानतत्रात्रिसमावर्तिन
मनसादवनावाधिससुंरुष्ट	व॥यथाकामृध्यंरुववि	सुमिदससुपसुचन॥य
आवेनददंरुसिनववीवपुमृदिन॥गिवं।यदंरुनंअनमवना।थविददिनंनिनायासंभानंरु		

१५०

मिदुनविद्यापाकृष्यसिधुं॥	॥मृथरुससावादीवृधिवसुकिनगवीत्रंवाधिससुमवक्रसुः	
कुरुमाकुननिर्मानेवृधिव	मसुव।भाषंरुकात्र॥	मृथमदापुलादसंरुमिकः
ममनृनिगममदादवभेग	दवाचन॥	॥यववि
वसुमनीदगदिदुसुफवभि	धसुय्यै१यनतिसकत्रः	रुसमूडासागवान्नाय।धयं॥
सुननृविदविसु१सांयकं।रुताम॥	॥मदादवउवाच॥	॥यथाचसकावृध्यवशमवा

चतु॥ समीकृतां च न नय रुद्र (भाशुना॥) कृत्वा चिन्ता वसन गते ॥ समन्विता सुदुर्वला मति विदु संग या
 दुमो ॥ अथ मो वा उ कु मा मोय न म (भा) का रि रुः मो व ष प रि पु ना क्री क म नः
 य ल्हा नं प रि ति नि व ल्हा ग च्छ नो या यो समी प म वा रि उ म रु ॥ नं द द ग रु ॥ ग वं वं ११
 ग र मा स मा रु ना य क पा व न सं रु पु वि रु पु नि चा यो नि व रि न क र द मा नि ॥ ना नाः
 दि ग्नि दि रु क भा वि स्तो रुं द द्वा च स न रु न रु मो नि य न रु ॥ स वि वा नं रु मू प स र्वा त्मा या च वा रुः

अरु स वं म मू च रु ॥ अदा पिय रु रु क वा र्थि वा यं न पा उ नं नी स न स वा या ए च्छि ष न सा ज न नीः
 रु नी य रु क वा य वा णां क म ला य रु रु ग शा अ दा दि अ रु मा क मि दे व (भा) रि रु न नू प
 द ण म व न डी वि तं ॥ क थं म दा स त्व वि व रि ना व यं दा स्या म द द ग न म म मा न या ॥
 ॥ अथ मो वा उ कु मा मो व रु वि वि व क न रुं वि न ष ष व क म रु ॥ न रु रु रु
 प र्था य स्था य का दि गि य वा व न रु ॥ रु मा वा त्व य न रु ॥ य न स वं द द्वा च प प रु ॥ रु रु मा व रु नि ॥ ना रि

ज
ह
दि

वसमयदवीगयनकसगनापियविपथागसूचकंसंप्रददगं॥	॥तयधामनोदभात्यामनंचक्रिय
माननयःकपातथावकाः	नाचवंस्थमनादियमानाशा
अथदवीरुमिकंपाद्रुस	वृक्षचिन्नायशवरव॥किमः
यारुतभगीजसनिधिवसना	त्रिभिः॥ममचक्रचंद्रकजांययः
निवाडः॥खंक्वनिमलोथात्रकि॥चनयनंसंस्तनंचियनीव॥सस्तिभस्यान्मनांवनविवत्रमिदंकीडनाथः	

२५२

गगाना॥अथेवंचिन्नयन्त्या	अर्गोवसंजानददयापविगदवा	निवदयामास॥दवीकुमावयत्रिआकाः
॥कुमावमन्वसन्कानदृश्य	काकुरुपुरुदंशवभाञ्च	दवीसंकपिनददयादाषाकुलन
यनवदनावाजानमरिगम्भा	वच॥दवनद्वामपियस	रुष्टयगावाजापिसंकपिनद
दय॥यत्रमसंजुममापदंदा	कदंविपूकासिमूकासि	पियसूतना॥
द्विदीमास्वासयामास॥मारीद्वीपूना	थंवयंकुमावाचवभापसहक॥	रुष्टयवृरुकुमावाचवभापिदृगः

अ
ह
नि

जनकाया ॥ अथ विना दवा का ददर्ग इ न क न वा ग क न न वा ऊ क मा नो द द्वा बा जा व वी न ॥ न मो ज्ञा त
र नो क मा नो न तु स च ॥ दा क हं सु त वि या लो ना मा न र व नि नि वृ प सं रु न यो नि व वं न वा
सां ॥ रु व नि स न वि था ग या द गं दो म न स ॥ न नू व य स खि न स य न यं सा रि या ग ॥ म
य न मू य ग मा वा थ न डी व नि पू ज ॥ अथ द दो प य स ग र लि द ता र य म स द न
व क न री श र लि स य म वा य ॥ यदि न न य न य स र रु य व ग व व न व य क स मा स य वि द्वा ॥ द स द द या स मा

७३

स म रु नी य ॥ स र म न या य द वे नि क नी य स म रु न ॥ न या वा ग न या वा जा वे न त य वि ष्ट च्छ मा त्म क ॥ क मा नो य
वि ष्ट च्छ नि स ॥ द दा व क ॥ नी य स ॥ नि ॥ रु न ॥ ॥
यु क ना त्वा द द ग न व द नो न कि श्चि द्र व ॥ द व वा वा क थ य नां ल द वि म अ
नि स ॥ नि थ य व म रु गं य वि यी श न व द दं ॥ क स म म प रु रु नी य ॥ द द य मि दं रु
दि नं तु स म रु नि वा ॥ ॥ अथ नो क मा नो वि रु व न न व रु क न न नि व द या मा स रु ॥ स द य व ल न वा

जादवीपविजनाथमादमूयगना॥ मादपरागनाधकनृमार्त्तस्वयंयूदमानास्तेदगमस्तिउग्र॥ ॥

अथजादवीचगान्यस्की
गविकीर्णद्विद्वादादगच्छ
स्माद्वद्वागसिबमसयचंदः

निजयगनयधित्रमानाः
दुमादुमोनियमिनी॥ न
नपंकवाहादवाधुमनी

स्नायविनिदिग्भाविदिगधक
न॥ पूयादिन॥ सचिवंतामवः
पयद्रादयामासा ॥ ॥

१५५

धसचिवात्संक्षामपसरावाजात्तायकनृमंविस्तनाय॥ हाकक्षंपूवकमनात्रमदगनीया॥ मखावभंगीयमू

पगनासिरुपाससमभवदिवागन॥ विनाकपत्रसमरुविषमिद॥ स्वमन्यत॥ दवीचमादान्यरागनापुकीर्णः

कगीदाद्रुमासूत्रसातयनी
वनसूत्रसाकलरीवनसूत्र
यंघमाध्वनीनसदिविषकी

स्वस्थोपूतवमस्याध्व
वकाकनृमंविदिनि॥ हा
धु॥ गकमसुविथनना

स्वास्त्ययत्रिवर्तमानामदिषीः
कान्कपियसूतकेनवजसराय
गनाय॥ पूजाभनयनमनादयं

पयश्च॥ हाकिंगनीवमिदुजयनयनाहिवाभंपग्यामियसूतवत्रनिदगंयथिमा॥ सचिद्वदयमयल्लयं

मयेतं विष्णुमनमवच्छिन्नविहृदं ॥ दासेन त्यायकं स्वप्नरुसंयच्छिन्दय मयक विहृदिनः ॥ प्रान्नप्रदोक्तः
 नोदुंक्षात्वाय भयियसूक्तानां गंगनः ॥ गीयु मरु ॥ सत्यं भनायद्वकायत्वेव ॥ दमसय
 कपारुमिहिशामभयमिहिश नात्मजे ॥ पवित्रताचका दनामरुपना ॥ ॥ अथवाः ॥ १५५
 जादवीचवद्रविषं कनूगक नूतयविद्वतः ॥ ससर्वाः वनमानवमूचमदनाउनका
 यनसार्धं पूजयगवीत्रपूजां कृत्वा नस्मिन् विविधदलसूतर्षुमयसेन सत्यस्मानिगवीनामि ॥ सारुद

सूपनवानन्दान्यः ॥ सननका सनननसमयमदा सत्यानामनाऊकुमादा ॥ नेवदुद्वयं ॥ ॥ नत्वाय
 देना ॥ ॥ वदंसनकाः सनननसमथनसदासः खानामयऊकुमादा ॥ नदा
 यिमयानन्दयागद्वेषमादा यविमूकननवकादिशि यदः ॥ खेः ॥ कययाऊगदनूदही
 नं ॥ किंखसूपनविदानीं सर्वे दावापगननसम्यक् ननि ॥ जवंदिजकेकस्यसत्त
 सार्थकसं समुदयं नवकपूवाजानिसंसायाविमोचययं ॥ खससत्तसायथऊगत्यविगृहीतं द्रव्यमन

१५३

आत्मनोऽयमासंनषादिव्याधीकृत्वरुषेयोतिनाखाकान्तानिस्वमात्मजानि॥यतिगुणसौकुमारसदा
 थसूतामदासत्त्वशादद्वैतः॥
 यिनसत्त्वोत्पन्नोविद्युत्प
 वनालासीयंदोक्तमजान्त
 तवप्रसिद्धिर्लोकगत्याददयाविचरन्निवनाक्तप्रविसंस्तुयप्येषनिजान्त॥गुणसूखानिविचरः॥

७
अ

नितवनम (व्या) उरुगो वाउ कुमा यो मदाय भाद सुभा मदाय व ॥ रुकाय संक मिताय व वा यी सुदुर्वला गयिना ॥		
वा यी सुगोद द्वा प्रवित्र सिः	फांगानिक गालि चर्ममा	मुंघ वृष्ठा मव की धूय निना निद
द्वा वा य कि शि सा तुं रुसा	पनि नंध व नी यं प ग्य नि ॥	उरुगो नय सु गो सं मू छि को दि १५७
ननु य नु नि व व नी यं न धूम	ना सु च पा धु व आ सि फः	मा या ॥ स्म नो द्वि य वि हो न मू र
चि हा वा रु वां च यो य य क मू भा सु वा द मान ल्भ का र्को ११ सं वं नि रु उ स ना लि ता र्छ वा द व थ कु न्ध धा न सिंः		

पनि रुमा रु भ सा न ऊ न वि प्रि या य म दा यो वा ॥ य ग्य नि भू ग न रि ॥ वा उ कु ला न र्ग ना सु ख य वि द्द का वा ॥ ना र्वां		
रु ना र्वां क्री व पु न रुं य ग वः	न य र्ने ॥ सर्वा रु म सा दि	सु वि रि वि व रि य मा ना यि ज्मि ॥
क यू र्धु द्द य पू व वि या गा रु	(मा क ग व वि द्वा ॥ उ य संः	कु मि ता न य निं सु दी न म न सा रि
(मा क सं न फा क वृ ध स व रं वाः	दि नि ॥ वा र्क्षार्थ म दा व थ र्ने	वा वा च न ॥ गृ म म न य म न य न्दः
(मा का गि ना म म द य रु ग नी वं ॥ उ र्वा र्वां रु न मू र्वा र्वां क्रा व म य मू क स वि व र्ना ॥ सु वि रि वि द्वां ग मं गं यी च नि ॥		

ग्यादा निमम दयं च यथा यादृगं निमित्तं न ह्ययं ॥ यथा मिदं न यो यस्मां यूनं धामं विठ्ठल ददादि ममः
 जीवितं क्रमं यूनं च ॥ स्वप्नं प्राप्तिं यादृशं सुखं यो मम कथं न सु
 सुते पिय नायं च ॥ यथा न सुखं पुविष्ट ॥ १॥ यथा न नाय ददं
 ॥ दृग्भावं यविष्टं ददयं सिं ॥ अति दाद ॥ भावः
 चित्रं यथा मम विठ्ठल दद स्व मम जीवितं रुवां स का नूत्वं ॥ एव मू द्वाय मदिषी समूच्छ नित्यं नित्यः

११८

धनं धीय ॥ सुगीय पविदीना विनष्ट विरुचि सं ह मना ॥ सर्वान् ॥ पूत्र गणा यक नूतं स्रवं यादमाना ॥ उच्य
 न ॥ दृष्ट्वा नाम गमदीर्घा ॥ स मूर्च्छित यतिनां च कुरुध्व
 या ॥ यथा सा न सा वा ऊन्य भाः मात्वा यन का डि हार्थं
 ऊना ना गेनु गदी ना त्कि ना ॥ १॥ कथं प्रागना यथा नूत्वाः
 मदासत्वं किं विना वा कं गत ॥ साप नं मदासत्वं ॥ किं दय्य मदा मय मना ॥ सत्त्व दं न पिय मना पं न चित्रं

विनष्टमं॥सं॥कवदनध्यानि विषयसिंदायुतनिर्दनाकवाञ्जननमायासकठानिद्याष॥बाजा
 मदासत्तत्तायवायमानः॥ (गाकार्क॥४॥सिंवातिगति॥ सशये॥अगुमदीर्घाचववती
 यपतनीमिश्रि॥उदकन॥ यावत्सुतिननसुत॥३ः॥ लायपृष्ठिबंदीनमानसाकि १५८
 मनपूनादिमृताजीवनि॥ बाजामदावधयादमदी॥ वाचपवभवंचदिमिदिदिभाः
 सुअमात्यपाषयाडिहासार्थगताकृमाशभंसात्तमतिदीनमानसारुवादिनत्यासि॥गाकदुदया॥५॥वंस

दावधधुक्रमापयित्वाकदायमदीचकंथ॥निबुमबाउकलाभायधुमूखावायमान॥ (गाकार्क॥५॥अः
 मात्यगद्यपिवृत्त॥सदीनमन॥ साधदीनचक्रथनिबुमः॥ नगवपूत्रताडिहासार्थयः
 बाजापूनामांवरुपमात्ते॥गकस॥ दमाद्याधुमूखावायमाना॥ अवनि॥निर्गतेदृष्टाबाजा
 नंमाहासपृष्ठत॥समनवद्धाः॥ समननक्रयनिबुमाभाया॥ कासमदावध॥समननक्रः
 वारियपूवकयकुदगनार्थपुक्रनिदि॥मां॥सु॥ (गा॥ननयभादृष्टान्यतत्रपूवपूवमृष्टिकशीपद्धा॥६॥स

मननवनिष्ठाभावात्समदावधः समननवार्थियपूवकवदवर्गनार्थियकनिदिगमांसू (आसन
यनादृष्टान्नरूपं प्रवृषं मृत्तुः सगीर्षश्च विविदितिकाङ्ग षड्भक्त्यासिद्धमन्त्रोत्तम ॥ अथ
मुखं शोदमानागच्छन्तं दातृषु (भाकार्त्तसमाहमदात्र धस्यद्वयसूः १७०
शोदमानश्चिन्ताकुट्टवाधक न्यक्तः ॥ अथान्यनमामाः यस्तुमागत्तमीत्यमवाचः
न ॥ ॥ उपसंख्यमानयतनाह ॥ मदावधस्यप्रवृत्तिं ॥ सा (भा कविरुत्तम ॥ रुवन्त्यननिष्ठनित्य

शोऽपि समनायाः ॥ नवित्रभागवत्तु नवअनिक ॥ उग्रसित्वं पूववमनापं ॥ सूद्रुत्तमावमनिगः
सा ॥ भाहृदिनीयामाग्यज्जः गुरुत्तम ॥ वधावकीर्त्तु मन्त्रवसुपादुगशास्त्रायुसखाभा
ज्ञानमिदमवबोदिति ॥ दोच कपूतोमदानयन्दुतिष्ठः कः ॥ भाकाननसंयदीको ॥ चकस्त
वपूववशानदधन ॥ न्ययय कामदासत्तु अनिरामाय शादृष्टावत्तमीमवित्रयसमा
वायोचपूवामपहकुका मां ॥ कषांमदासत्तववकुनाशमदानकान्वावसंजमत्ता ॥ वा (मी चत्तायसिद्धिः

747



138

वज्रिने॥सुनिर्मलं सुविमलं गङ्गासूयुतं॥पृथ्वरुतं सकलं समसंकृतं त्रिनेत्रं सुविमलं सुनिर्मलं सागरं त्रिनेत्रं
मन्त्रं सर्वसंयुक्तं त्रिनेत्रं पत्रं
सुदमेकं त्रिनेत्रं॥पत्रिनिर्वाणं सुख
यवकं॥नगं सगरं सुवयुग
वपकासितुं॥नगं सकलं मयापकागितं किं गुणं त्रिनेत्रं सुवयुगं सुवयुगं॥यच्च समुपनिर्वाणं पृथ्वं संवयं न स त्वयः

यदुवाचिमरुमां॥ ॥ अथ खलु चित्रकटुवाचिसत्तउत्तायामनादकागमरुमां गंयावत्रित्वादक्रिबंजानुः
 मधुसंयुधियांयमिहायधनरुग वांरुनाभुःसिंयधमयत्वाः नसांयसायामिमांरिगथादि
 प्ररिक्तवित्ता॥ सत्तंमनीन्दुगमपूः धासकनसदसशीवावृयु नेत्रसंकुतं॥ उदात्रवर्धुववः १३५
 मोमदगन॥ सदसत्रमिचिवयस नअभकत्रमिदालनाकः सपुलं॥ विचित्रयत्ताकृतवत्त
 समुवनीलावदानापवकाधुः नारवेरुयवासावृषसूटिकारं॥ निर्गसकवउमिवत्तपर्वतानययवित्तासाः

रिवक्तनकाटिरि॥ पसीदमसन्दूपवधुगानना॥ पुरणमसत्तसखावत्रेप्रिति॥ यसत्तवर्धुचिद्यवावृदग
 नशकफनूयजनकान्नयप॥ अर्ववर्धुवित्रजादियाक सा॥ यथेवमवृंमसताकृतपुनं
 विउद्धकात्रुगुलोत्रसंकुत॥ समानमेवीवसपूगसंचि नंविचित्रयर्धुवनूयअनावि
 ता॥ समाविवाय्यकगुलेत्रः संकुतं॥ नयारियद्वादक वीसूखंकवीगुलाकनंसवसू
 रवाकलागमं॥ विचित्रगरीवगुलोत्रसंकुतं॥ विवावसकृतसदसकातिष॥ विवाकससंयूनमिचिवांभुः

759

[illegible]

गवानां नाना रूपाणि सत्त्वाणि सत्त्वाः
 मखासा च संवत्तनी पर्वद सु
 भूखा रूपाणि सत्त्वाणि सत्त्वाः
 आर्या सत्त्वाणि सत्त्वाणि सत्त्वाः
 यत्रिसमा ४॥ ॐ ॥ ॐ ॥

समस्तया कृतद्वयमासवसती महादेवी
 वगवत्तु कित्तवमहावगादिय
 नन्दनिनि ॥ ७५६
 तुन्दुमा ४॥ ॐ ॥
 ॥ ७६ ॥ यत्रमादि तु यत्रमादि ॥ ७६ ॥

पांनथागमाश्च वदन्ति सांश्च यानि वाचः ॥ ७७
 ॐ ॥ नया ससम
 ॐ ॥ मासा नद
 ॐ ॥ अस्तं वन क्रमः शुविशान्ता ॥
 मि सवृत्त वि तन वना सि वन्दन मि ॥ अस्मि ॥

७७
 चवम्मादी महाशत वं ॥ ७७ ॥
 नदय ॥ नद नद नद ॥
 यावत्तु यत्रमा ॥ दिशान्ता ॥
 ॥ वद सानि वाचः ॥ ककट माः
 दिनः संपूर्ण अस्मिन्दिनं ॥ सवत्तु यत्रमा ॥

Suvarnaprabhata

790

धर्मस्तव वज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

DH75

